प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-1

(पद्य और गद्य)

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

त्यागरायनगर, चेन्नै-17

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-1

पहला भाग – पद्य

विषयानुक्रमणिका

आधुनिक पद्य

1.	यशोधरा का विलाप	: मैथिलीशरण गुप्त	5
2.	अभी न होगा मेरा अंत	: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	9
3.	कलम, आज उनकी जय बोल	: रामधारी सिंह 'दिनकर'	12
4.	भारत गीत	: सुमित्रानंदन पंत	15
5.	दूधिया चाँदनी साँवली हो गई	: माखनलाल चतुर्वेदी	19
6.	हम नव वसंत लाएँगे	: सुमतींद्र	24
7.	सभा गीत	: डॉ. एस. सुब्रह्मण्यन 'विष्णुप्रिया'	28
8.	अमृत पुत्र	: पं. नारायणदेव	32
9.	जीव-प्रदीप	: डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ	35
10.	अमन की दुनिया	: रुक्माजी राव 'अमर'	38

उर्दू पद्य

11.	तराना-ए-हिन्दी	: डॉ. मोहम्मद इकबाल	42
12.	कर चले हम फ़िदा	: कैफ़ी आज़मी	46

प्राचीन पद्य

13.	कबीर के दोहे (कंठस्थ)	49
14.	तुलसी – रामचरितमनस : अयोध्या कांड - भरत मिलाप	52
15.	रहीम के दोहे (कंठस्थ)	56

❋ ❋ ❋ ❋

आधुनिक पद्य

1. मैथिलीशरण गुप्त

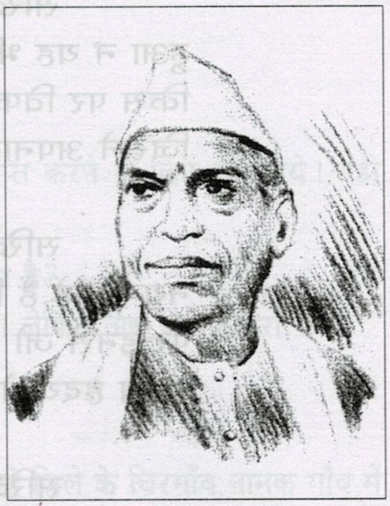

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता एक निष्ठावान वैष्णव भक्त तथा व्रजभाषा के मर्मज्ञ कवि थे। अतः पिता के संस्कारों का गहरा प्रभाव आप पर भी पड़ा था। कविता करने की प्रेरणा भी आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई।

खड़ीबोली कविता के क्षेत्र में आपको प्रकाश में लाने का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है।

आप मुख्यतः राष्ट्र कवि के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने सुप्त भारत को जागृत करने का सफल प्रयत्न किया था। आपकी 'भारत-भारती' राष्ट्रीय भावनाओं का मूर्त रूप है। आपने 'साकेत' नाम से एक महाकाव्य का प्रणयन किया था, जिसे खड़ीबोली के गौरव-ग्रंथों में अनुपम स्थान है। इस काव्य पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तथा हिन्दुस्तानी अकादमी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। आप संसद के सदस्य भी रह चुके हैं।

आपके अन्य काव्य-ग्रन्थों में 'यशोधरा', 'जयद्रथवध', 'जयभारती', 'पंचवटी', 'पृथ्वीपुत्र', 'किसान' आदि उल्लेखनीय हैं। आप बंगला भाषा के भी विद्वान हैं। बंगाल के माइकेल मधुसूदन दत्त कृत 'मेघनाद-वध' नामक प्रबंध-काव्य का सुन्दर काव्यानुवाद भी आपने प्रस्तुत किया था।

सन् 1964 में आपका देहावसान हुआ।

यशोधरा का विलाप

सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात;
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसीको जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

स्वयं सुसज़्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में,–
क्षात्र-धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा;
रहें स्मरण ही आते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते?
गये तरस ही खाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।
जाय, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से?–
आज अधिक वे भाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे?
पर क्या गाते गाते?
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

('यशोधरा' से)

शब्दार्थ

सिद्धि हेतु - सिद्धि प्राप्त करने के लिए (to achieve eternal peace); व्याघात - प्रहार, बाधा, धक्का; पथ-बाधा - रास्ते में अड़चन; पूरा पहचाना - संपूर्ण जानकारी प्राप्त करना; सुसज्जित - अलंकृत; प्राणों के पण - प्राण की बाज़ी लगाकर, जीवन का दाँव लगाकर; रण - युद्ध; अभागा - भाग्यहीन; विफल - निरर्थक, बिना किसी परिणाम या फल का; अपनाया - अपना करके स्वीकारा; निष्ठुर - करुणा हीन; तरस खाना - रहम करना; उपालम्भ - शिकायत, उलाहना;

भाते - अच्छा, प्रिय लगना, पसंद आना; अपूर्व-अनुपम - पहले न देखा हुआ, ऐसी चीज़ जिसके लिए कोई उपमा नहीं है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **यशोधरा कौन है?**
   यशोधरा, सिद्धार्थ, (गौतम बुद्ध) की पत्नी है।
2. **यशोधरा के दुख का प्रमुख कारण क्या है?**
   सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध), यशोधरा से कहे बिना, सिद्धि प्राप्त करने के लिए चले गये। यही यशोधरा के दुख का प्रमुख कारण है।
3. **'जिसने अपनाया था, त्यागा'-इस पंक्ति का तात्पर्य क्या है?**
   सिद्धार्थ ने यशोधरा के साथ विवाह किया और अपनाया। लेकिन अब वे यशोधरा को त्यागकर, छोड़कर चले गये।

II. कवि-परिचय दीजिए।

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता एक निष्ठावान वैष्णव भक्त तथा व्रजभाषा के मर्मज्ञ कवि थे। कविता करने की प्रेरणा भी आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। आप मुख्यतः राष्ट्र कवि के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने सुप्त भारत को जागृत करने का सफल प्रयत्न किया था। आपकी 'भारत-भारती' राष्ट्रीय भावनाओं का मूर्त रूप है। आपने 'साकेत' नामक एक महाकाव्य का प्रणयन किया था, जो खड़ीबोली के गौरव-ग्रंथों में अनुपम स्थान रखता है। आपके अन्य काव्य-ग्रन्थों में 'यशोधरा', 'जयद्रथवध', 'जयभारती', 'पंचवटी', 'पृथ्वीपुत्र', 'किसान' आदि उल्लेखनीय हैं।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्र कवि के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने सुप्त भारत को जागृत करने का सफल प्रयत्न किया था। 'यशोधरा का विलाप' शीर्षक यह कविता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी के खण्ड काव्य 'यशोधरा' का एक अंश है। गौतम बुद्ध की पत्नी का नाम 'यशोधरा' है। गौतम बुद्ध जीवन का अर्थ समझने के लिए घर, परिवार, राज्य आदि छोड़कर चले गये।

यशोधरा सखि से कहती हैं, "जीवन की वास्तविकता एवं सिद्धि हासिल करने के लिए मेरे स्वामि घर छोड़कर गये हैं; यह मेरे लिए गौरव की बात है; फिर भी वे क्यों रात के समय मुझसे कहे बिना गये? यही मेरे लिए बहुत दुख देता है। क्या उन्होंने सोचा कि मुझसे कहने पर, मैं उन्हें जाने न देती? क्या उन्होंने मुझे अपने पथ का बाधा समझा? वैसे मेरे पति मुझे बहुत मानते थे; फिर भी मुझे उन्होंने संपूर्ण रूप में नहीं पहचाना? वे जिस बात को प्रमुख मानते थे, उसी को मैं भी मानती थी। फिर भी वे मुझसे कहे बिना चले गए। हे सखि, अगर वे मुझसे कहकर जाते तो कितना अच्छा लगता?"

यशोधरा आगे कहती है, “हम क्षत्राणि हैं। क्षत्रिय नारी अपने पति को युद्ध क्षेत्र में भेजते समय, स्वयं को सुसज्जित करके संतोष के साथ पति के प्राण को दॉव में रखकर भेजती हैं। अगर वे मुझसे कहकर जाते तो, मुझे कितना आनंद मिलता था? लेकिन हे! सखि वे मुझसे कहे बिना ही चले गये”?

अपने भाग्य के बारे में कहती है, “मेरे भाग्य में ये सब लिखा नहीं हैं। मैं अभागिन हूँ। अब मैं किस बात पर अपने को गौरवान्वित मानूँ? मेरे पति ने मेरे साथ विवाह रचाकर मुझे पहले स्वीकार किया। लेकिन अब मुझे छोड़कर चले गये। मेरे पास अब उनका स्मरण मात्र बचा है। हे सखि, वे मुझसे एक बार कहकर जाते तो कितना अच्छा लगता?”

यशोधरा आगे कहती है, “मेरी आँखें उनको करुणाहीन कहती हैं; लेकिन उनके लिए आँसू बहाती हैं। मेरा हृदय इस वेदना को सह नहीं पाता है और मेरी इस हालत को देखकर वह तरस खाता है। हे! सखि, मेरे पति मुझसे एक बार कहकर जाते तो कितना अच्छा लगता?”

आखिर, यशोधरा कहती है, “ठीक है, वे जाकर सिद्धि प्राप्त करें। हम लोगों के दुख उन्हें किसी प्रकार भी दुखित न करें। इसके अलावा मैं क्या कह सकती हूँ? किसके पास जाकर अपना दुख प्रकट कर सकती हूँ? लेकिन, सखी, सिर्फ़ एक बार वे मुझसे कहकर जाते तो, कितना अच्छा लगता?”

अंत में वह अपने आपको यह कहकर आश्वासन देती है कि, वे जब वापस आएँगे, तब ज़रूर कुछ अपूर्व अनुपम चीज़ लेकर आएँगे। मेरे प्राण उसे पाकर आह्लादित होंगे। जो भी हो, वे अगर मुझसे कहकर जाते तो मैं बहुत आनंदित हो जाती।

यशोधरा का विचार है कि पति के मन में उसके प्रति आत्मीयता की भावना नहीं है, इसीलिए वे उनसे कहे बिना चले गये। अतः यह विचार यशोधरा को दुखित करता है।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. जाय, सिद्धि पावें .... वे मुझसे कहकर जाते।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ ‘यशोधरा का विलाप’ शीर्षक कविता से ली गयी हैं। इस कविता के रचयिता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

भावार्थ :- यशोधरा को इस बात पर दुख नहीं कि उसके पति उसको त्यागकर, तप करने के लिए वन चले गये। लेकिन उसके पति उससे कहे बिना चले गये-यह बात उसको अधिक दुख देती है। फिर भी कहती है, ठीक है, वे चले जाएँ, सिद्धी प्राप्त करें और सुखी रहें। वे यहाँ के लोगों की चिंता न करें, इसके दुख से दुखी न होवें। उन्होंने पहले मुझे अपनाया, अब मुझे त्याग दिया। इसलिए मैं किसी से शिकायत भी नहीं कर सकती।

फिर भी यशोधरा कहती है, “मुझसे कहकर जाते तो, उनके निर्णय मेरे लिए अधिक वाँछनीय रहता। लेकिन वे मुझसे कहे बिना चले गये।”

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

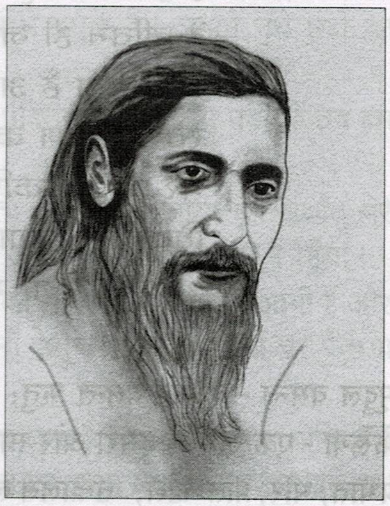

'निराला' आपका सार्थक नाम है। आपका जन्म सन् 1896, में हुआ और आप 1961 ई. में स्वर्ग सिधारे। आपने आधुनिक हिन्दी कविता में कई निराली बातों का समावेश किया। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। पुराने छंद के नियमों को तोड़कर आपने नये छंद की सृष्टि की। हिन्दी में आप मुक्त छंद के जन्मदाता माने जाते हैं। आप बंगला, संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। आप दर्शन शास्त्र का भी पंडित थे। स्वामी विवेकानंद के विचारों से आप बहुत प्रभावित थे। कवीन्द्र रवीन्द्र की कविताओं का आपने अच्छा अध्ययन किया और आपकी कविताओं में इसका स्पष्ट परिचय मिलता है। 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' आदि उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं।

आपकी भाषा संस्कृत गर्भित है। जहाँ विचार दार्शनिक हो गये हैं वहाँ शैली भी गंभीर हो गयी है। आपने सब तरह के विषयों पर सब रसों में रचनाएँ की हैं। ख़ासकर वीर और करुण रस का सफल चित्रण इनकी कविताओं हुआ है।

अभी न होगा मेरा अन्त

अभी न होगा मेरा अन्त!
अभी-अभी ही तो आया है,
मेरे वन में मृदुल वसन्त।
अभी न होगा मेरा अन्त।

हरे-हरे ये पात
डालियाँ, कलियाँ कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न मृदुल कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर जगा एक प्रत्यूष मनोहर।
पुष्प-पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
हैं मेरे वे जहाँ अनन्त-
अभी न होगा मेरा अन्त।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण
इसमें कहाँ मृत्यु
है जीवन ही जीवन।
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन,
स्वर्ण किरण कल्लोल कर बहता रे यह बालक मन!
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु वसन्त।
अभी न होगा मेरा अन्त।

शब्दार्थ

मृदुल वसन्त - कोमल वसन्त ऋतु; पात-पत्तियाँ; डालियाँ-शाखाएँ; कोमल गात-संवेदनशील कथाएँ; फेरूँगा - एक ओर से दूसरी ओर स्पर्श करते हुए जाना; निद्रित कलियाँ- नींद में लीन कलियाँ; प्रत्यूष - प्रभात, भोर, प्रातःकाल; तन्द्रालस लालसा - सुबह के समय नींद से उठने में जो आलसीपन होता है, नींद में ही रहने की इच्छा; कल्लोल - आनंद मनाना।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. 'अभी न होगा मेरा अंत' कविता के रचयिता कौन है?
'अभी न होगा मेरा अंत' कविता के रचयिता 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' है।

2. 'अभी न होगा मेरा अंत' कविता में 'पुष्प-पुष्प' शब्द किनको सूचित करते हैं?
पुष्प-पुष्प शब्द भारत की युवा पीढ़ी की ओर सूचित करते हैं।

3. 'अभी न होगा मेरा अंत' कविता में 'तन्द्रालस लालसा' का अर्थ क्या है?
सदा निद्रा में रहने या आलस रहने की इच्छा को 'तन्द्रालस लालसा' कहते हैं।

4. 'अविकसित राग से विकसित होगा बंधु बसंत' का अर्थ क्या है?
कवि का विचार है कि अब तक उनका लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ। अर्थात् जब तक हर इनसान का दुख और पीड़ा वे दूर नहीं करेंगे, तब तक उनका अंत नहीं होगा।

II. कवि-परिचय दीजिए।

आपका जन्म 1896 में हुआ और आप 1961 ई. में स्वर्ग सिधारे। आपने आधुनिक हिन्दी कविता में कई निराली बातों का समावेश किया। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। पुराने छंद के नियमों को तोड़कर आपने नये छंद की सृष्टि की। हिन्दी में आप मुक्त छंद के जन्मदाता माने जाते हैं। 'परिमल', 'अनामिका', 'गीतिका' आदि उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं। आपकी भाषा संस्कृत गर्भित है। जहाँ विचार दार्शनिक हो गये हैं वहाँ शैली भी गंभीर हो गयी है।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

इस कविता के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। 'निराला' नाम के अनुरूप आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। आप छायावाद-प्रगतिवाद चेतना के प्रवर्तक कवियों में प्रमुख हैं। आपने नये छंदों का आविर्भाव भी किया। आपको मुक्त छंद के जन्मदाता भी मानते हैं।

इस कविता में कवि सकारात्मक चेतना को जागृत करते हैं। इन पंक्तियों को जब हम पढ़ते हैं तब हम भी सकारात्मक बन जाते हैं।

कवि कहते हैं, 'मेरा अंत अभी नहीं होनेवाला है, क्योंकि मैं तो अभी-अभी आया हूँ। अर्थात् मेरे जीवन में कोमल वसन्त का आगमन अभी-अभी हुआ है। वसन्त के बाद अन्य ऋतुएँ है, तब तक मैं रहूँगा।

वसन्त के आने से हर कहीं हरियाली हैं। हरियाली के कारण पेड़ की शाखाओं में कलियाँ आयी हैं और वे हिल-हिलकर मधुर गीत गा रही हैं। मैं अपने मीठे एवं कोमल सपनों के किरण उन कलियों पर फेरूँगा और उन कलियों को जगाऊँगा।

पुष्प सब धीरे-धीरे खिल रहे हैं, क्योंकि उनमें अब भी निद्रा की लालसा है। यहाँ कवि युवा पीढ़ियों में रहनेवाले आलसीपन को दूर करने की बात कर रहे हैं। मैं उनपर नवजीवन का अमृत सींचूँगा। उन्हें जगाऊँगा। उनको अनन्त आनंद का प्रवेश द्वार दिखाऊँगा। अतः ये सब काम पूरा होने तक मेरा अन्त अभी नहीं होगा।

मैं अब अपने जीवन के प्रथम चरण में हूँ। अभी मेरी मृत्यु नहीं होगी। जीवन में अनेक सार्थक विषय हासिल करना है। आगे मेरा सारा यौवन पड़ा है। मेरा मन उत्साही बालक जैसा झूम रहा है। उसमें स्वर्ण किरण का प्रकाश है। वसन्त ऋतु के सभी कार्यकलाप अभी विकसित होंगे। मैं अपने विकास के साथ-साथ सबका विकास कराऊँगा।

कवि के मन में संपूर्ण उत्साह है। विभिन्न प्राकृतिक कलापों का आश्रय लेकर कवि निरुत्साही मानवों को प्रोत्साहित करने का सफल प्रयास करते हैं।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. पुष्प-पुष्प से............मेरा अंत।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' की कविता 'अभी न होगा मेरा अंत' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। 'अभी न होगा मेरा अंत' शीर्षक कविता में आपकी प्रगतिवादी चेतना का परिचय मिलता है। कवि आशावादी हैं। आप सबको जागृत करना चाहते हैं। सबको आलसीपन से मुक्त कराकर नवजीवन की दिशा दिखाना चाहते हैं।

भावार्थ :- इन पंक्तियों में कवि कहते हैं, "मैं पुष्पों से आलसीपन को निकाल दूँगा। उन्हें नवजीवन के अमृत रस प्रदान करूँगा। उनको मैं अनंत जीवन का रास्ता दिखाऊँगा। यहाँ कवि भारत की युवा पीढ़ी की ओर इशारा करते हैं। भारत की युवा पीढ़ी तंद्रालस में है, आलसीपन में मस्त है। उनको जागृत करना कवि अपना कर्तव्य मानते हैं। अतः कवि कहते हैं कि जब तक युवा पीढ़ी नवजीवन के, चुस्त जीवन के आनंद को नहीं पहचानेगी तब तक मेरा अंत नहीं होगा। युवा पीढ़ी को अनंत जीवन, परिश्रम युक्त जीवन में रहनेवाले आनंद का परिचय देने तक मेरा अन्त नहीं होगा। इस पद्यांश में हमें कवि के सकारात्मक चिंतन का परिचय मिलता है।

3. रामधारी सिंह 'दिनकर'

दिनकरजी का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर ज़िले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में सन् 1908 में हुआ। दिनकर की प्रखरता और तेजस्विता का परिचय उनकी कविताओं में मिलता है। इतिहास आपका प्रिय विषय रहा है। अतः भारत के अतीत की गरिमा का स्मरण दिलाकर वर्तमान के साथ उसकी तुलना करते हुए हमारे पतन पर कविवर आठ-आठ आँसू रोये हैं। राष्ट्र का स्वर आपकी कविताओं में जैसा मुखरित हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

दिनकर की कविता में ओज और तेज पढ़ते ही बनते हैं। भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है। आपने युद्ध और शाति की समस्या को लेकर चिंतन-प्रधान प्रबन्ध-काव्य का प्रणयन किया है जो 'कुरुक्षेत्र' नाम से विख्यात है। आपके अन्य प्रबन्ध-काव्यों में 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' उल्लेखनीय हैं। आप संसद के सदस्य तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके हैं।

आपकी राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताओं में 'हिमालय', 'नई दिल्ली', 'नेताजी', 'विपथगा', 'सामधेनी', 'नीलकुसुम', 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'इतिहास के आँसू' आदि प्रसिद्ध हैं। 'संस्कृत के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर' आदि आपके गद्य-ग्रंथ हैं।

सन् 1974 में आपका निधन हुआ।

कलम, आज उनकी जय बोल

कलम, आज उनकी जय बोल
जला अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकाई जितने चिनगारी,
जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर लिए बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलकर बुझ गए किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बिचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

शब्दार्थ

जला - जला देना; अस्थियाँ - हड्डी, हाड़, बारी-बारी - एक के बाद एक होकर; छिटकाई - टुकड़े-टुकड़े करना, छींटें डालना (sprinkle); चिनगारी - ज्वाला, लपेट, जीवंतता; पुण्यवेदी - बलिदान; बिना गर्दन का मोल - किसी प्रतिफल की इच्छा के बिना सब समर्पित करना; अगणित - असंख्य; माँगा नहीं - मांग नहीं की; लाल शिखाएँ - वीरता की ज्वाला; चकाचौंध - बहुत चमकीला; साखी हैं - शहादत, साक्षी, सबूत; महिमा - बड़प्पन; भूगोल - भूमि; खगोल - नक्षत्र शास्त्र; आठ-आठ आँसू रोना - बहुत रोना (प्रसिद्ध मुहावरा)।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **रामधारी सिंह दिनकरजी अपनी कलम से, किसके बारे में बोलने का निर्देश देते हैं?**
   रामधारी सिंह दिनकरजी अपनी कलम से देश के लिए निःस्वार्थ भावना से अपना सब कुछ समर्पित करनेवाले वीरपुरुषों के बारे में बोलने के लिए कहते हैं।

2. **'अगणित लघु दीप' - यह उदाहरण किनको सूचित करते हैं?**
   असंख्य वीर लोग, जिनके संबंध में अनेक लोग नहीं जानते, उन लोगों को 'अगणित लघु दीप' उदाहरण के माध्यम से सूचित करते हैं।

3. **वीर लोगों की महिमा के लिए कवि किन-किन को साक्षी मानते हैं?**
   वीर लोगों की महिमा के लिए कवि सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल को साक्षी मानते हैं।

II. कवि-परिचय दीजिए।

दिनकरजी का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर ज़िले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में सन् 1908 में हुआ। राष्ट्र का स्वर आपकी कविताओं में जैसा मुखरित हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है! आपने युद्ध और शांति की समस्या को लेकर चिंतन-प्रधान प्रबन्ध-काव्य का प्रणयन किया है जो 'कुरुक्षेत्र' नाम से विख्यात है। आपके अन्य प्रबन्ध-काव्यों में 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' उल्लेखनीय हैं। आपकी राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताओं में 'हिमालय', 'नीलकुसुम', 'इतिहास के आँसू' आदि प्रसिद्ध हैं। 'संस्कृत के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर' आदि आपके गद्य-ग्रंथ हैं।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

इस कविता के रचयिता रामधारी सिंह दिनकर हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार हैं। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में पहचाने जाते हैं।

राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीयता को इनके काव्य की मूल-भूमि मानते हुए इन्हें 'युग-चारण' व 'काल के चारण' की संज्ञा दी गई है।

कवि अपनी कलम से कहते हैं कि हे कलम, तुम ऐसे लोगों के संबंध में लिखो, जिन्होंने देश सेवा में, राष्ट्रीय भावना में ओतप्रोत होकर अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

कवि कहते हैं, कलम! उन वीर शहीदों की विजय का गान लिखो, प्रशंसा के गीत लिखो, जिन्होंने अपना सब कुछ बलिदान करके क्रान्ति की भावना जागृत की, नई चेतना फैलाई तथा जिन्होंने बिना किसी प्रतिफल की चाह के, कर्तव्य की पुण्यवेदी पर स्वयं को न्योछावर कर दिया।

आगे कवि दिनकर जी ने निस्वार्थ भाव से देश पर न्योछावर होने वाले वीरों का गुणगान किया है। अपनी कलम से कवि कहते हैं, हे कलम! उनका विजय गान कर, जिन्होंने असंख्य छोटे-छोटे दीपक जैसे जलकर सबको प्रकाश दिया; ये वीर लोग तूफान में भी, तेल खतम होने के बाद भी अंत तक जलकर बुझ गए। वे ऐसे वीर हैं, जिन्होंने निःस्वार्थ भावना से देश के लिए अपना जीवन समर्पित किया। यहाँ तक कि उन्होंने अपने त्याग के लिए किसी की प्रशंसा की भी अपेक्षा तक नहीं की थी।

आगे कवि अपनी कलम से कहते हैं, 'हे कलम' तुम उन वीरों के बारे में लिखो। इन वीरों के बलिदान से जो लाल-लाल अग्नि प्रज्वलित हुईं, उस अग्नि की लपटें सभी दिशाओं में फैली हुई हैं। अर्थात् कवि उनकी वीरता को अग्नि शिखा के साथ तुलना करते हैं। उस अग्नि का प्रभाव हर दिशा में दिखाई पड़ता है। सिंह जैसी उनकी गर्जना से प्रोत्साहित होकर धरती डोल रही है।

इन वीरों के बारे में अनेक लोग नहीं जानते। इतिहास में तो हम इने-गिने वीरों के बारे में ही पढ़ते हैं। लेकिन देश के लिए मर मिटनेवाले हज़ारों सैनिक एवं वीर हैं, जिनके बारे में सूर्य, चन्द्र, भूमि तथा आकाश के सभी ग्रह जानते हैं। ये सब उनकी वीरता के लिए साक्षी हैं। ऐसे वीरों के बारे में सारी दुनिया को अवगत कराना तुम्हारा काम है। इसलिए हे कलम, तुम उन वीरों के बारे में लिखो।

इस कविता में कवि हज़ारों अनजान वीरों की याद करते हैं, जो निःस्वार्थ भावना से स्वतंत्रता वेदी में आहुति बनकर जल गये।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. जो अगणित लघु दीप .... उनकी जय बोल।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ 'कलम, आज उनकी जय बोल' कविता से ली गई हैं। इस कविता के रचयिता रामधारी सिंह दिनकर हैं। हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार हैं।

भावार्थ :- अपनी कलम से कवि कहते हैं, हे कलम! उनका विजय गान करो, जिन्होंने असंख्य छोटे-छोटे दीपक जैसे जलकर सबको प्रकाश दिया; ये वीर लोग तूफान में भी, तेल खतम होने के बाद भी अंत तक जलकर बुझ गए। वे ऐसे वीर हैं, जिन्होंने निःस्वार्थ भावना से देश के लिए अपना जीवन समर्पित किया। यहाँ तक कि उन्होंने अपने त्याग के प्रति किसी की प्रशंसा की भी अपेक्षा नहीं की थी।

4. सुमित्रानंदन 'पंत'

पंत जी का जन्म ई. सन् 1900 में उत्तर प्रदेश के अलमोड़ा ज़िले के सुरम्य पर्वतीय अंचल में स्थित कैसोनी नामक गाँव में हुआ था। प्रकृति की गोद में आपका शैशव बीता और प्रकृति से ही आपको कविता करने की प्रेरणा मिली। अतः आपकी कविता में प्रकृति की रमणीयता, सरलता, सुकुमारता तथा स्निग्धता का दर्शन मिलता है। आपने स्वतंत्र अध्ययन करके अपने ज्ञान का विस्तार किया।

आप छायावाद तथा प्रगतिवाद के प्रवर्तकों में माने जाते हैं। हिन्दी के मूर्धन्य कवि प्रसाद और निराला जैसे कवियों के साथ आपका नाम भी लिया जाता है। युग की परिस्थितियों को आपकी रचनाएँ प्रतिध्वनित करती हैं। आप मार्क्स तथा गाँधीजी के विचारों से काफ़ी प्रभावित हुए। आप योगी अरविन्द के जीवन दर्शन के अनुयायी भी थे।

आपकी भाषा सरस, मधुर एवं कोमल है। खड़ीबोली कविता को लालित्य एवं कोमलता प्रदान करने का श्रेय आप ही को जाता हैं। पंतजी की रचनाएँ : **कविता संग्रह** - उच्छवास, ज्योत्सना, पल्लव, स्वर्णधूलि, वीणा, युगांत, युगपथ, गुंजन, ग्रंथि, मेघनाद वध; **उपन्यास संग्रह** - ग्राम्या, मानसी, हार आदि। 'शिल्पी' संस्कृत काव्य रचना है। 'चिदंबरा' (1968) काव्य के लिए आप 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं।

सन् 1977 में आपका देहांत हुआ।

भारत गीत

जय जन भारत, जन मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता!

गौरव भाल हिमाचल उज्ज्वल
हृदय हार गंगा जल,
कटि विन्ध्याचल, सिन्धु चरण तल
महिमा शाश्वत गाता!

जय जन भारत, जन मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता!

हरे खेत, लहरें नद निर्झर
जीवन शोभा उर्वर,
विश्व कर्मरत कोटिक बाहु कर
अगणित पद ध्रुव पथ पर!

प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाथा,
जय नव मानवता निर्माता
सत्य अहिंसा दाता!
जय हे जय हे जय हे, शांति अधिष्ठाता,
जन गण तंत्र विधाता!

प्रयाण तूर्य बज उठे,
पटह तुमुल गरज उठे,
विशाल सत्य सैन्य, लौह भुज उठे।
शक्ति स्वरूपिणि बहुबल धारिणि वंदित भारत माता!
धर्म चक्र रक्षित तिरंग ध्वज अपराजित फहराता!

जय हे जय हे जय हे, अभय, अजय, त्राता!
जन गण तंत्र विधाता!

–'युगपथ'

शब्दार्थ

जय जन भारत - जनतंत्र स्थापित करनेवाला भारत; जन मन अभिमत - लोगों के लिए प्रिय, मनचाहा; गण तंत्र विधाता - लोक तंत्र की स्थापना करनेवाला; नद-निर्झर - नदियाँ और सरिताएँ; उर्वर - उपजाऊ; कर्मरत - कार्य में लीन; पग - पैर, पांव; ध्रुव पथ - अटल पथ; ज्ञाता - जाननेवाला; साम ध्वनित - साम वेद का गान; गुण गाता - गुणों का वर्णन करनेवाला; शांति अधिष्ठाता - शांति की स्थापना करनेवाला, शांति की रक्षा करनेवाला; प्रयाण - यात्रा; तूर्य - तुरही, युद्ध के समय बजाया जाता है; पटह - ढ़ोल, नगाढ़ा; बहु बल धारिणि - अनेक प्रकार की सेना से युक्त; वंदित - पूजी जानेवाली; अपराजित - जिसे कभी जीत नहीं सकते।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **भारत भूमि के 'गौरव भाल' क्या है?**

   भारत भूमि के 'गौरव भाल' उज्जवल हिमाचल है।

2. पंतजी भारत माता के हृदय हार के रूप में किसे मानते हैं?

पंतजी भारत माता के हृदय हार के रूप में गंगा जल को मानते हैं।

3. पंतजी कटी के रूप में किसे मानते हैं?

पंतजी कटी के रूप में विन्ध्याचल को मानते हैं।

4. पंतजी के अनुसार शांति अधिष्ठाता कौन है?

पंतजी के अनुसार शांति अधिष्ठाता 'भारत' है।

5. पंतजी किसको अपराजित कहते हैं?

पंतजी भारत के राष्ट्रध्वज को अपराजित कहते हैं।

II. कवि-परिचय दीजिए।

'भारत गीत' कविता पंतजी के 'युगपथ' काव्य संग्रह से प्रस्तुत है। हिंदी साहित्य में छायावादी चेतना के चार प्रमुख स्तंभों में से सुमित्रानंदन पंतजी भी एक हैं। प्रकृति की गोद में आपका शैशव गुज़रा और इसी प्रकृति से आपको कविता करने की प्रेरणा मिली। आपको छायावाद तथा प्रगतिवाद के प्रवर्तकों में प्रमुख मानते हैं। आप मार्क्स तथा गांधीजी के विचारों से काफी प्रभावित हुए। आपकी भाषा सरस, मधुर एवं कोमल है। 'शिल्पी' आपके संस्कृत रचना है। आपको 'चिदम्बरा' काव्य के लिए 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'काला और बूढ़ा चांद' के लिए आपको 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1960) से सम्मानित किया गया।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

कवि सुमित्रानंदन पंत हिन्दी साहित्य के छायावादी चेतना के प्रमुख कवि हैं। आप इस कविता में भारत देश का जयगान करते हैं। कविता का सारांश इस प्रकार है-

हे भारत, तुम जनता का देश हो। सभी के मन तुम्हारे प्रति आकर्षित हैं। तुम गणतन्त्र का पर्याय हो। तुम्हारी जय हो।

तुम्हारा प्राकृतिक आकर्षण अनुपम है। हिमालय पर्वत दुनिया में सबसे ऊँचा पर्वत है और यह पर्वत तुम्हारे सिर को अलंकृत करता है। इस पर्वत की तरह भारत का सिर ऊँचा है। तुम्हारे हृदय को गंगा नदी अलंकृत करती है। अर्थात् भारत का हृदय गंगा नदी की तरह पतित पावन है। उसमें स्नेह भरा है। विंध्याचल तुम्हारी कटि को बांधकर और सुंदर बनाता है। सिंधु अर्थात् समुद्र तुम्हारे चरण तल को छूकर अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। भारत के दक्षिण में तीन समुद्र हैं। अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिन्द महा सागर-तीनों समुद्र भारत के चरण स्पर्श करके आनंदित होते हैं।

इस देश में हर कहीं, हरे-भरे खेत, अनेक नदियाँ, निर्झर हैं। ये सब यहाँ के जीवन के सौंदर्य को बढ़ाते हैं और भूमि को उर्वर बनाते हैं।

कवि भारत देश को संबोधित करके कहते हैं, तुम अपने कोटि-कोटि हाथों से संसार के कल्याणकारी कार्यों में लगे रहते हो। अर्थात् भारत के कोटी-कोटि नागरिक सदा सारे संसार की कल्याण कामना करते रहते हैं। तुम्हारे अटल पथ पर अगणित लोग चल रहे हैं- विश्व भर के लोग भारत के दार्शनिक सिद्धांतों को मानकर उन सिद्धांतों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर बढ़ रहे हैं।

हे भारत, सभ्यता का जन्म भी सबसे पहले तुम्हारे यहाँ हुआ। तुमने सामवेद ध्वनी से सारे संसार को परिचित कराया। (चार वेद हैं। इनमें सामवेद के लिए अधिक महत्व दिया जाता है। क्योंकि सामवेद संगीत प्रधान वेद हैं। श्रीकृष्ण ने गीता में 'मैं वेदों में सामवेद हूँ' बताया है।) तुम सारे संसार को मानवता के पाठ पढ़ाते हो। तुमने ही सारे संसार को सत्य, अहिंसा आदि का मार्ग बताया। शांति के मार्ग भी तुमने ही सबको दिखाया। हे भारत तुम्हारी जय हो।

सारे संसार में गणतन्त्र का परिचय तुम्हारे द्वारा ही सिद्ध हुआ। आगे कवि भारत माता की विजय यात्रा का वर्णन करते हैं। कहते हैं, जब भारत माता अपनी विशाल सत्य सेना के साथ, लौह भुजावाले सैनिकों के साथ विजय यात्रा पर निकली तब चारों ओर तुरही बजने लगे, तुमुल एवं नगाड़ की ध्वनी गूँजने लगीं।

हे भारत माता, तुम शक्ति स्वरूपिणी हो, बाहुबल धारिणी हो, हम तुम्हारी वंदना करते हैं। आगे कवि भारत के राष्ट्र झंडे का वर्णन करते हैं। यह तिरंगा सदा अपराजित है, इसके मध्य में रहनेवाला धर्मचक्र सदा धर्म की रक्षा करते हुए देश को आगे ले जाता है। हे भारत, तुम अभय हो, तुम अजय हो, तुम त्राता, शरण देनेवाले, रक्षा करनेवाले हो। तुम्हारी सदा जय हो।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. प्रथम सभ्यता..........जय-जन भारत...

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ, कविवर 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'भारत गीत' कविता से उद्धृत हैं। यह भारत गीत कविता पंत जी के 'युगपथ' काव्य संग्रह में है। कवि सुमित्रानंदन पंत इस कविता में भारत देश का जयगान करते हैं।

भावार्थ :- इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अनेक क्षेत्रों में भारत सारी दुनिया के लिए पथप्रदर्शक रहा है। कवि कहते हैं, 'हे भारत, सभ्यता का जन्म भी सबसे पहल तुम्हारे यहाँ हुआ। तुमने सामवेद ध्वनी तथा भारत की सभ्यता से सारे संसार को परिचित कराया। तुम सारे संसार को मानवता का पाठ पढ़ाते हो। तुमने ही सारे संसार को सत्य, अहिंसा आदि का मार्ग बताया। शांति के मार्ग भी तुमने ही सबको दिखाया। हे भारत, तुम्हारी जय हो।

2. प्रयाण तूर्य बज..........अभय, अजय त्राता !

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ, कविवर 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'भारत गीत' कविता से उद्धृत हैं। यह भारत गीत कविता पंत जी के 'युगपथ' काव्य संग्रह में है। कवि सुमित्रानंदन पंत इस कविता में भारत देश का जयगान करते हैं।

भावार्थ :- इन पंक्तियों में कवि भारत माता की जय यात्रा का वर्णन करते हैं। जब भारत माता अपनी विशाल सत्य सेना के साथ, लौह भुजावाले सैनिकों के साथ विजय यात्रा पर निकली तब चारों ओर तुरही बजने लगे, तुमुल एवं नगाड़े की ध्वनी गूँजने लगीं। कवि भारत माता को संबोधित करते हुए कहते हैं, हे भारत माता, तुम शक्ति स्वरूपिणी हो, बाहुबल धारिणी हो; हम तुम्हारी वंदना करते हैं।

आगे कवि भारत के राष्ट्र झंडे का वर्णन करते हैं; यह तिरंगा सदा अपराजित है, इसके मध्य में रहनेवाला धर्मचक्र सदा धर्म की रक्षा करते हुए देश को आगे ले जाता है।

5. माखनलाल चतुर्वेदी

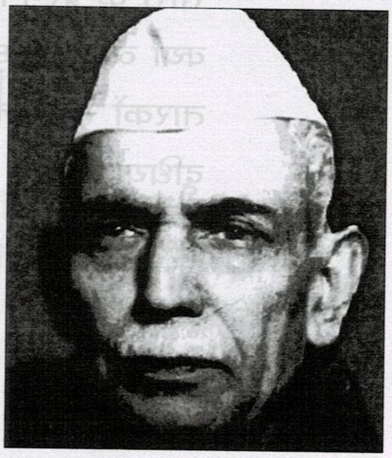

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में 'बाबाई' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बँगला, गुजराती, अंग्रेज़ी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन-कार्य भी किया।

सन् 1913 ई. में आप सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण आप राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। परिणामस्वरूप कई बार जेल-वास भी करना पड़ा।

आप सन् 1943 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष बने। सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी.लिट. की उपाधि से तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया।

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रभक्ति है, जिसमें त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य-भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देनेवालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है।

माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा खड़ी बोली है। उसमें संस्कृत के सरल और तत्सम शब्दों के साथ फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

रचनाएँ एवं कृतियाँ :

- काव्य संग्रह - हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिणी, वनवासी, कला का अनुवाद, नागार्जुन युद्ध, साहित्य देवता, वेणु लो गूँजे धरा, माता, युगचरण, मरणज्वार।
- निबंध संग्रह - अमीर इरादे गरीब इरादे, रंगों की होली, साहित्य देवता।
- संपादन कार्य–माखन लाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा (मासिकी)' नामक पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया।

पुरस्कार व सम्मान :– पद्मभूषण (1963 ई.) : भारत सरकार का पद्म पुरस्कार।

साहित्य अकादमी पुरस्कार (1955 ई.) : 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया।

अपनी कविताओं द्वारा नवजागरण और क्रान्ति का शंख फूँकनेवाली कलम के इस सिपाही का 30 जनवरी, सन् 1968 को स्वर्गवास (मृत्यु) हुआ।

दूधिया चाँदनी साँवली हो गई

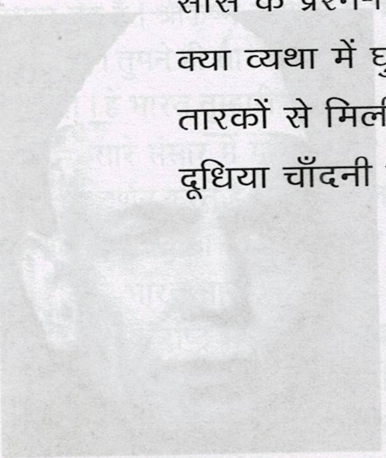

साँस के प्रश्न-चिन्हों, लिखी स्वर-कथा
क्या व्यथा में घुली, बावली हो गई
तारकों से मिली, चन्द्र को चूमती
दूधिया चाँदनी साँवली हो गई।

खेल खेलीं खुली, मंजरी से मिली
यों कली बेकली की छटा हो गई
वृक्ष की बाँह से छाँह आई उतर
खेलते फूल पर वह घटा हो गई।

वृत्त लड़ियाँ बना, वे चटकती हुई
खूब चिड़ियाँ चलीं, शीश पै छा गईं
वे बिना रूप वाली, रसीली, शुभा
नन्दिता, वन्दिता, वायु को भा गईं।

चूँ चहक चुपचपाई फुदक फूल पर
क्या कहा वृक्ष ने, ये समा क्यों गईं
बोलती वृन्त पर ये कहाँ सो गईं
चुप रहीं तो भला प्यार को पा गईं।

वह कहाँ बज उठी श्याम की बाँसुरी
बोल के झूलने झूल लहरा उठी
वह गगन, यह पवन, यह जलन, यह मिलन
नेह की डाल से रागिनी गा उठी।

ये शिखर, ये अँगुलियाँ उठीं भूमि की
क्या हुआ, किसलिए तिलमिलाने लगी
साँस क्यों आस से सुर मिलाने लगी
प्यास क्यों त्रास से दूर जाने लगी।

शीष के ये खिले वृन्द मकरन्द के
लो चढ़ायें नगाधीश के नाथ को
द्रुत उठायें, चलायें, चढ़ायें, मगन
हाथ में हाथ ले, माथ पर माथ को।

शब्दार्थ

व्यथा में घुली - वेदना में गलनेवाली; बावली - पगली; दूधिया चाँदनी - दूध जैसे प्रकाशमान; साँवली - काली; मंजरी - फूलों के गुच्छे; बेकली - कली के रूप से परिवर्तित होकर फूल बन जाना; वृत्त लड़ियाँ - वृत्ताकार की रस्सियाँ जैसी; चटकती - फुर्तीला होकर; फुदक - एक पैर के बल पर एक स्थान से दूसरे स्थान कूदना; समा - संग, संगति; त्रास - त्रस्त; चढ़ायें - समर्पित करें; नगाधीश - पर्वत के शासक, द्रुत - जल्दी।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. छाँह कहाँ से आई?

पेड़ की शाखाओं से छाँह (छाया) आयी।

2. कविवर माखनलाल चतुर्वेदी चिड़ियों का वर्णन कैसे करते हैं?

कवि कहते हैं, पक्षियाँ रस्सी से बने वृत्त (गोलाकार) जैसे लड़ियाँ बनाकर, चटकती हुई उड़कर जाती हैं।

3. साँस क्यों आस से सुर मिलाने लगी?

मनुष्य के लालच ने वातावरण को प्रदूषित कर दिया। इसलिए साँस, स्वच्छ हवा की तलाश की आशा में आस से सुर मिलाने लगी।

4. कवि माखनलाल चतुर्वेदी पुष्पों को कहाँ चढ़ाने के लिए कहते हैं?

कवि माखनलाल चतुर्वेदी पुष्पों को नगाधीश के नाथ (प्रकृति) पर चढ़ाने के लिए कहते है।

II. कवि-परिचय दीजिए।

माखनलाल चतुर्वेदी भारत के ख्याति प्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे, आपकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। आपकी कविताएँ सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं से भरपूर है। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्राकृतिक प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं। देश भक्ति, प्रकृति वर्णन आदि साहित्य मानव के विभिन्न पक्षों को इनकी कविताओं में हम देख सकते हैं। आप सन् 1943 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष बने। सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी.लिट. की उपाधि से तथा भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। काव्य संग्रह - हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिणी, निबंध संग्रह - अमीर इरादे गरीब इरादे, रंगों की होली। आपने 'प्रभा' नामक पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

प्रस्तुत कविता में कवि प्रकृति को एक स्त्री के रूप में चित्रित करते हैं। प्रकृति के सभी कार्यकलापों का सुंदर वर्णन करते हैं। कविता में कवि ने मानवीकरण एवं छायावादी चिंतन का भी सुंदर प्रस्तुतीकरण किया है। साथ-साथ इस कविता में कवि की प्रगतिवादी चेतना का भी आभास मिलता है।

प्रकृति रूपी नारी जब सांस लेती है, उस सांस में अनेक प्रश्नों का आभास मिलता है। कवि को लगता है कि इस साँस में संगीत है और उस संगीत में व्यथा है। वह पागल जैसी होकर आकाश के तारों से मिलने जाती है, चाँद को चूमती है। उसके चूमने मात्र से दूध जैसे प्रकाशमान चाँद, सांवले रंग का हो गया है। ऐसा लगता है कि मनुष्य द्वारा प्रकृति पर किए जानेवाले अत्याचारों से कवि परेशान है, उन्हें लगता है कि मनुष्य प्रकृति का नाश कर रहा है, प्रदूषित कर रहा है। इसलिए कहते हैं 'दूधिया चाँदनी साँवली हो गई'।

आगे कवि प्रकृति के विभिन्न कलापों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि प्रकृति रूपी नारी के खेल से विभिन्न कार्य संभवित होते हैं। जब वह खेलते-खेलते फूल की मंजरियों से मिलीं तो कलियाँ खिल गईं, वृक्ष की शाखाओं को कवि 'वृक्ष की बाँह' कहते हैं। उन शाखाओं की छाया नीचे आयी और फूलों के ऊपर मेघ जैसे छा गई।

आगे कवि को, पक्षियों के उड़ान में प्रकृती के सौन्दर्य का आभास होता है। चिड़ियों का झुंड जब आकाश में वृत्ताकार में एक दूसरे से होड करती हुई जाती है और प्रकृति नारी के शीश पर छा जाती है, तब कवि को लगता है कि प्रकृति नारी अपने आपको भूलकर पक्षियों में घुलमिल गई। यहाँ कवि कहते हैं कि प्रकृति नारी के लिए अपना एक रूप नहीं, जहाँ भी जाती है वहाँ का रूप धारण कर लेती है। कहीं मधुर रस के रूप में रहती है तो कहीं सुंदर नंदिता, वंदिता और हवा बनकर रहती है। अर्थात् कभी मस्त रहती है, कभी पूजनीय बनकर रहती है, कभी हवा की तरह सांत्वना देनेवाली बनकर रहती है।

प्रकृति नारी अचानक फूलों पर चहचहाहट करनेवाली छोटी सी पक्षी बनकर फूलों पर दिखाई पड़ती है। फूलों के अंदर तक जाकर उसका स्वाद लेते समय लगता है कि वह उस फूल की सहचरी बनकर उसीमें लीन हो गई। कवि उससे पूछते है, 'वृक्ष ने तुमसे क्या कहा? तुम क्यों उसमें लीन होकर सो गयी? उनको आभास होता है कि प्रकृति नारी को कहीं प्यार मिल गया, इसलिए अन्य कार्य भूलकर वहीं रह गईं।

कवि प्रकृति के विभिन्न लीलाओं को देखकर आनंदित होते हैं। उन्हें प्रकृति में कृष्ण की बांसुरी सुनाई पड़ती है, प्रकृति के हर एक चलन झूलने जैसे प्रतीत होता है। आकाश में, पवन में, आग में, पंचभूतों के मिलन में प्रकृति के बोल का आभास मिलता है। जहाँ स्नेह है वहाँ उन्हें लगता है कि प्रकृति रागिनी बनकर गा रही है।

कवि पूछते हैं, शिखर, जो भूमि की उँगलियाँ जैसी हैं, उनको क्या हुआ? वे क्यों हिलने और तिलमिलाने लगे? इनकी साँस में क्यों प्रतीक्षा या इच्छा (आस) का आभास लगता है। परेशानी में रहनेवाले लोगों की प्यास (आकांक्षा) क्यों दूर चली गई? अर्थात्, कवि को लगता है कि मानव के लालच के कारण प्रकृति की व्यवस्थाओं में बाधा हो रही है। मनुष्य की साँस में अनेक वस्तुएँ पाने की लालच हो गई है, अतः उनकी साँस में सदा लालच का सुर आने लगा है। इस कारण से जो लोग त्रस्त हैं, उन्हें आगे जाकर कुछ कर दिखाने या प्राप्त

करने की इच्छा या प्यास नहीं है। यहाँ कवि, लालच में पड़कर प्रकृति के प्रति अन्याय करनेवाले लोगों का चित्रण एक तरफ करते हैं तो दूसरी तरफ त्रस्त लोग निराश होकर पीछे रह जाने का चित्रण करते हैं।

अंत में कवि सबको प्रोत्साहित करते हैं। कहते हैं, खिले हुए फूलों से भरी शाखाओं से अमृत लो, और इनको नगाधीश, प्रकृति के ईश्वर पर चढ़ाओ। जल्दी इनको चुन लो, आनंद करो, समर्पित करो। सब लोग हाथ से हाथ मिलाकर, माथे पर माथे मिलाकर चलो। प्रकृति की रक्षा करें।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. साँस के प्रश्न-चिन्हों .... चाँदनी साँवली हो गई!

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ कवि माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'दूधिया चाँदनी सांवली हो गई' से उद्धृत हैं।

भावार्थ :- प्रकृति रूपी नारी जब सांस लेती है, उस सांस में अनेक प्रश्नों का आभास मिलता है। कवि को लगता है कि इस साँस में संगीत है और उस गीत में व्यथा है। वह पागल जैसी होकर आकाश के तारों से मिलने जाती है, चाँद को चूमती है। उसके चूमने मात्र से दूध जैसे प्रकाशमान चाँद, सांवले रंग की हो गई है। ऐसा लगता है कि कवि मनुष्य द्वारा प्रकृति पर किए जानेवाले अत्याचारों से परेशान हैं, उन्हें लगता है कि मनुष्य प्रकृति का नाश कर रहा है, प्रदूषित कर रहा है। इसलिए कहते हैं 'दूधिया चाँदनी साँवली हो गई'।

2. ये शिखर, ये अँगुलियाँ उठीं .... त्रास से दूर जाने लगी।

संदर्भः ये पंक्तियाँ कवि माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'दूधिया चाँदनी सांवली हो गई' से उद्धृत हैं।

भावार्थ :- कवि पूछते हैं, शिखर, जो भूमि की उँगलियाँ जैसी हैं, उनको क्या हुआ? वे क्यों हिलने लगे? इनकी साँस में क्यों प्रतीक्षा या इच्छा (आस) का आभास होता है। परेशानी में रहनेवाले लोगों की प्यास (आकांक्षा) क्यों दूर चली गई? अर्थात्, कवि को लगता है कि मानव के लालच के कारण प्रकृति की व्यवस्थाओं में बाधा हो रही है। मनुष्य की साँस में अनेक वस्तुएँ पाने का लालच हो गया है, अतः उनकी साँस में सदा लालच का सुर आने लगा है। इस कारण से जो लोग त्रस्त हैं, उन्हें आगे जाकर कुछ कर दिखाने या प्राप्त करने की इच्छा या प्यास नहीं है। यहाँ कवि, लालच में पड़कर प्रकृति के प्रति अन्याय करनेवाले लोगों का चित्रण एक तरफ करते हैं तो दूसरी तरफ त्रस्त लोग निराश होकर पीछे रह जाने का चित्रण करते हैं।

3. शीष के ये खिले .... माथ पर माथ को।

संदर्भः ये पंक्तियाँ कवि माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'दूधिया चाँदनी सांवली हो गई' से उद्धृत हैं।

भावार्थ :- कवि इस कविता में प्रकृति के वर्णन के साथ-साथ प्रकृति पर किए जानेवाले अत्याचारों का भी संकेत करते हैं। आखिर, कवि सबको प्रोत्साहित करते हैं। कहते हैं, खिले हुए फूलों से भरी शाखाओं से अमृत लो, और इनको नगाधीश, प्रकृति के ईश्वर पर चढ़ाओ। जल्दी इनको चुन लो, आनंद करो, समर्पित करो। सब लोग हाथ से हाथ मिलाकर, माथे पर माथे मिलाकर चलो। प्रकृति की रक्षा करें।

6. सुमतींद्र

कवि सुमतींद्र का जन्म सन् 1931 में तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में हुआ। आप राष्ट्रभाषा हिंदी के समर्थक रहे। हिंदी में आपकी पंडिताई विलक्षण थी। तमिलनाडु जैसे हिंदीतर प्रदेश में हिंदी प्रचार के लिए आपने अपना सारा जीवन समर्पित किया।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में हिंदी प्रचारक और उसके बाद मदुरा कॉलेज में हिंदी प्राध्यापक रहकर साहित्य-निर्माण में काफी योगदान दिया। 'दक्षिण भारत', 'हिंदी प्रचार समाचार' और 'हिंदी पत्रिका' में आपकी असंख्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

'एक पल की याद में', 'हिंदी के आंचलिक लोक प्रिय कवि', 'नील गगन की घाटी में' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

सन् 2000 में आप स्वर्ग सिधारे।

हम नव वसंत लाएँगे

पतनोन्मुख
पीले पत्तों ने
कहा उपवन से
"हम नव वसंत लाएँगे
हमें अपना
विश्वास दो
अपना भविष्य अर्पित करो।
हम पुराने हैं
अनुभव में पके हैं
हमने कभी वसंत को
बुलाया था
अपने रस से

संवारा था सजाया था
उपवन को।
हमें अपने प्राण दो
इसलिए कि हम फुनगी पर हैं
कीच में गड़ी गंदी जड़ों से
सत खींच कर अपने को पाला है
हम सार हैं
बाक़ी सब निस्सार हैं
तुम हमें आराधो
वरो ...."
वहीं
पास ही
दुखती उँगलियों-सी
सृजनातुर डालियों पर
फूट रहे कोंपल
अरुण अरुण अंकुर
हँस दिये!
पीले पत्ते
जीवित हैं झड़ने को
खड़ खड़ सर सर
शोर हैं करते –
"हम पुराने हैं
हम व्यतीत हैं
हम पके हैं
हम नव वसंत लाएँगे।"

शब्दार्थः–

पतन - नाश; पतनोन्मुख - पतन की ओर अग्रसर; आस्था - श्रद्धा, आदर; फुनगी - पेड़-पौधे की शाखाओं का अग्र भाग; कीच - पंक, कीचड़; सत - सार, ताकत; वरना - अपनाना; सृजन - सृष्टि, निर्माण; सृजनातुर - सृजन के लिए व्याकुल; कोंपल - अंकुर, किसलय; अरुण - लाल; झड़ने - गिरने; व्यतीत - बीता हुआ, वृद्ध।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. पीले पत्तों ने उपवन को किससे संवारा था?
पीले पत्तों ने उपवन को अपने रस से संवारा था।

2. पीले पत्तों ने अपने को कैसे पाला था?
कीचड़ में गड़ी गंदी जडों से सार खींचकर पीले पत्तों ने अपने को पाला था।

3. कवि सुमतींद्र के अनुसार पुराने पत्ते (वृद्ध लोग) क्या करते हैं?
कवि सुमतींद्र के अनुसार पुराने पत्ते खड़-खड़ सर-सर शोर करते झड़नेवाले होते हैं।

II. कवि-परिचय दीजिए।

कवि सुमतींद्र का जन्म तमिलनाडु में 1931 को हुआ। हिन्दी में आपकी पंडिताई विलक्षण थी। तमिलनाडु जैसे हिंदीतर प्रदेश में हिंदी प्रचार के लिए आपने अपना सारा जीवन समर्पित किया। आपने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में हिन्दी प्रचारक और उसके बाद मदुरा कालेज में प्राध्यापक रहकर साहित्य–निर्माण में काफ़ी योगदान दिया। वे संस्कृत और अंग्रेज़ी के अच्छे ज्ञाता थे। 'दक्षिण भारत', 'हिंदी प्रचार समाचार' और 'हिंदी पत्रिका' में आपकी असंख्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आप अपने साहित्य के लिए आंध्र सरकार से पुरस्कृत हैं।

'एक पल की याद में', 'हिंदी के आंचलिक लोकप्रिय कवि', 'नील गगन की घाटी में' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आपका निधन सन् 2000 में हुआ।

III. कविता का सारांश लिखिए।

कवि सुमतींद्र हिन्दीतर प्रदेश तमिलनाडु के एक मूर्धन्य हिन्दी प्रचारक थे। कवि ने इस "हम नव वसंत लाएँगे" कविता में पुराने पत्ते भी पुनः वसंत ला सकते हैं– इस तथ्य का विश्लेषण, किया है। परिवर्तनशील प्रकृति के नियम के अनुसार जो आज नया है, कालक्रम में पुराने हो जाते हैं। फिर पुराना झड़कर पुनः नवोत्पन्न होते है। यह स्वाभाविक है।

कवि आशावादी शब्दों में पुरानेपन से वसंत लाने का प्रोत्साहन देते हैं। पुरानेपन का अर्थ 'पक्वता' भी होता है। पुराने पीले पत्तों ने भी कभी कीचड से सार खींचकर, अपने रस से वसंत को संवारा था, सजाया था।

पुरानेपन के परिश्रमों को मानकर उनकी आराधना करें तो वह फिर नव वसंत लाएगा। खड़-खड़, सर-सर शोर करते झड़नेवाले पत्ते प्रकृति की करुणा से पुनः अंकुर का रूप धारण करेंगे। वृद्ध मनुष्यों का अनुभव नयी कल्पनाओं के उदय का कारण बनेगा।

कविता का तात्पर्य यह होता है कि त्यागपूर्ण पुरानापन चिरस्मरणीय होता है।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. हम पुराने हैं .... उपवन को।

संदर्भः- ये पंक्तियाँ कवि सुमतींद्र की रचित "हम नव वसंत लाएँगे" कविता से उद्धृत है।

भावार्थ :- पेड़ के पीले पत्ते कहते हैं। हम पुराने हैं, बीते हुए हैं मगर पके हैं। हम नव वसंत लाने की प्रक्रिया में स्वयं खाद बन सकते हैं। अर्थात् कवि पुराने पत्तों के माध्यम से वृद्ध एवं अनुभवी लोगों का महत्व बताते हैं।

2. पीले पत्ते जीवित हैं .... हम नव वसंत लाएँगे।

संदर्भः- ये पंक्तियाँ कवि सुमतींद्र की रचित "हम नव वसंत लाएँगे" कविता से उद्धृत है।

भावार्थ :- परिवर्तनशील प्रकृति में पुराना झड़कर नया बनता है। पीले पत्ते जब तक पेड़ पर रहते हैं, तब तक आवाज़ करते रहेंगे, आपको सतर्क बनाते रहेंगे और नव वसंत लाएँगे। अर्थात् वृद्ध लोग कमज़ोर हो जाने पर भी हमें दिशा निर्देश देते रहते हैं।

7. डॉ. एस. सुब्रह्मण्यन 'विष्णुप्रिया'

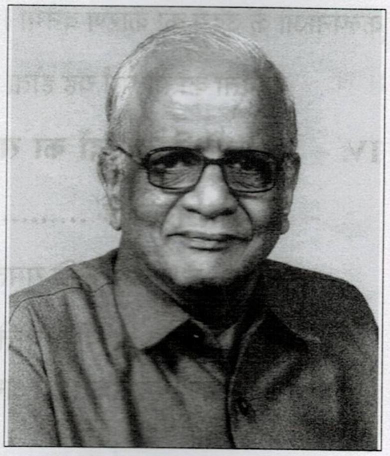

डॉ. एस. सुब्रह्मण्यम् 'विष्णुप्रिया' तमिलनाडु के हिन्दी प्रचार में उल्लेखनीय नाम है। आपका जन्म मई 1935 को कुम्बकोणम में हुआ। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार के आजीवन प्रचारक थे और दक्षिण रेलवे में हिन्दी विभाग के प्रधान थे। अपने कार्यकाल में रेलवे के समय सारणी को हिन्दी में लाने में महत्वपूर्ण योगदान आपने दिया। आप लगभग पैंसठ साल हिन्दी प्रचार में लगे रहे। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष भी रहे। आप तमिल, हिन्दी, संस्कृत, तेलुगु, बंगला, उर्दू और अंग्रेज़ी के प्रखाण्ड पंडित थे। तमिल भाषा के पुराने एवं नवीन साहित्यों का आपने हिन्दी में अनुवाद किया। तमिल भाषा के 'सिलप्पधिकारम', 'अम्बिकापति अमरावति', 'मुत्तोल्लायिरम', आदि का काव्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। आपका त्रिभाषा शब्द कोष (हिन्दी-तमिल-अंग्रेज़ी) अत्यन्त उपयोगी है। आप 29 सितंबर 2014 को प्रकृति में लीन हुए।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा गीत

राष्ट्रप्रेम की मधुर वाहिनी बनी है हिन्दी न्यारी,
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण सभी दिशा में प्यारी।
मातृभूमि की मिट्टी की यह बनी है गंध सुहानी,
बापू के सपनों की है यह कालजयी निशानी।

दक्षिण भारत में हिन्दी की धड़कन बनी सभा है।
दक्षिण में हिन्दी प्रचार का दर्पण बना सभा है।

दक्षिण में झरती है देखो चतुरानन की वाणी,
इस सरगम के संगम में है सरस्वती पहचानी।
अन्तःसलिला-सी हिन्दी को यहाँ बहाने आयी,
यह सभा का भगीरथ-श्रम हर दिल में हिन्दी समायी।

दक्षिण भारत में हिन्दी की धड़कन बनी सभा है
दक्षिण में हिन्दी प्रचार का दर्पण बना सभा है।
जिस बोली की बोल-बोल में तुलसी कलसी छलकी
उस बोली में दक्षिण के हैं महाकवि की झलकी।
तमिलनाडु में, आंध्र देश में, कर्नाटक, केरल में
सब प्रचारकों की अर्पित है सेवा तन-मन-धन की।
दक्षिण भारत में हिन्दी की धडकन बनी सभा है
दक्षिण में हिन्दी प्रचार का दर्पण बना सका।

शब्दार्थ

मधुर वाहिनी - सुहाना यातायात; न्यारी - बेजोड़, अति सुंदर; सुहानी - सुखद, आनंदमय; कालजयी - शाश्वत, काल की सीमा में बंधा न हो; निशानी – चिह्न, पहचान; दर्पण - आइना, आरसी; झरती - लगातार बहकर गिरनेवाली झरना; चतुरानन - ब्रह्मा; सरगम - स रि ग म (स्वर); अंतः सलिला - वह नदी जिसके जल का प्रवाह भीतर हो, बाहर से दिखाई न दे; भगीरथ-श्रम - भगीरथ जैसे कठिन परिश्रम करना; समायी-एक साथ हो गयी; छलकी – एक साथ उमड़कर बाहर आना; झलकी – दृश्य।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. **कवि डॉ. सुब्रहमण्यन 'विष्णुप्रिया' किसको राष्ट्रप्रेम की मधुरवाहिनी कहते हैं?**
   कवि डॉ. सुब्रहमण्यन 'विष्णुप्रिया' हिंदी को राष्ट्रप्रेम की मधुरवाहिनी कहते हैं।

2. **'चतुरानन की वाणी'- इस मुहावरे का अर्थ क्या है?**
   इस कविता में 'चतुरानन की वाणी' - का तात्पर्य है–दक्षिण की चार भाषाएँ ब्रह्मा के चार मुख से विकसित हुईं।

3. **'अंतः सलिला' शब्द किसे सूचित करता है?**
   'अंतः सलिला' शब्द हिंदी को सूचित करता है।

II. कवि-परिचय दीजिए।

डॉ. एस. सुब्रह्मण्यन 'विष्णुप्रिया' का नाम तमिलनाडु के हिन्दी प्रचार क्षेत्र में उल्लेखनीय है। आपका जन्म तमिलनाडु स्थित कुंभकोणम में 18.05.1935 को हुआ। पढ़ाई सब कुंभकोणम में हुई। आपकी पत्नी श्रीमती कामाक्षी सुब्रह्मण्यन भी हिन्दी प्रचार कार्य में आजीवन लगी रही। दोनों मिलकर चेन्नई के मयिलापूर में हिन्दी विद्यालय चला रहे थे और सैकड़ों विद्यार्थी निःशुल्क हिन्दी ज्ञानार्जन करते थे। डॉ. सुब्रह्मण्यन दक्षिण रेलवे के हिन्दी विभाग में विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे थे। उनके सेवा काल में, रेलवे समय सारणी हिन्दी में मुद्रित करने की प्रथा शुरू हुई। आप तमिल, हिन्दी, संस्कृत, तेलुगु, बंगला, मलयालम, उर्दू और अंग्रेजी के प्रखांड पंडित थे। आपने तमिल भाषा के संघ साहित्यों का हिन्दी अनुवाद किया। तमिल भाषा के सिलप्पधिकारम, अंबिकापति-अमरावती, मुत्तोल्लायिरम आदि का काव्य नाटिका भी प्रस्तुत की। आपका त्रिभाषा शब्दकोश (हिन्दी-तमिल-अँग्रेजी) अत्यंत प्रसिद्ध है।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

डॉ. सुब्रह्मण्यन की कविता 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा गीत', सभा की प्रस्तुति में है। इसमें सभा के प्रमुख उद्देश्य, सभा के क्रियाकलाप, प्रचारकों की निःस्वार्थ सेवा आदि का वर्णन है।

अत्यंत सुंदर भाषा हिन्दी, राष्ट्रप्रेम की मधुर वाहिनी है। इस सुंदर भाषा के प्रचार-प्रसार करनेवाली सभा, सभी दिशाओं में प्रसिद्ध है। भारत भूमि की मिट्टी के सुगंध को दूर-दूर तक पहुँचानेवाली सभा, महात्मा गांधी के सपनों का जीता जागता स्वरूप है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा की धड़कन बनकर रहती है। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार की स्थिति को प्रदर्शित करनेवाली संस्था सभा है। अर्थात्, महात्मा गांधी ने 1918 ई में , हिंदीतर प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार करने के लिए सभा की स्थापना की नींव डाली। गांधीजी के प्रत्यक्ष निर्देश में सभा की स्थापना हुई। गांधी ने सभा को हिन्दी के प्रचार मात्र के लिए ही नहीं, बल्कि भारत की सभ्यताओं की वाहिनी के रूप में भी देखना चाहा। उनके सपने को सभा आज साकार बना रही है।

दक्षिण में चार भाषाएँ हैं। कवि कहते हैं कि ये चार भाषाएँ ब्रह्मा के चार मुख से विकसित हुईं। इन चार भाषाओं के संगम में, सरस्वती नदी की तरह, हिन्दी अंतःसलिला बनकर बह रही है। इस तरह भाषाओं के संगम में हिन्दी को एक सशक्त उपकरण बनाने के लिए सभा ने बहुत प्रयत्न किए। जिस तरह भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी में ले आने के लिए प्रयत्न किया उसी तरह, हिन्दी भाषा को दक्षिण में ले आने में सभा ने महान योगदान प्रदान किया। उसके प्रयत्न के परिणामस्वरूप, यहाँ सबके हृदय की रानी बनकर हिन्दी रहती है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा की धड़कन बनकर रहती है। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार की स्थिति को प्रदर्शित करनेवाली संस्था सभा है।

हिन्दी की बोलियों में अनेक सुंदर काव्यों की रचना हुई हैं। तुलसी, सूर जैसे महान कवियों की कृतियाँ हिन्दी की विभिन्न बोलियों में रची गईं। ऐसी भाषा में दक्षिण भारत के महान कवियों की वाणियाँ भी अनूदित हुईं। अर्थात् तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम भाषाओं के महान कवियों की कृतियों की रचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध हैं। सभा प्रमुख रूप में दक्षिण में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रही है। इसकी शाखाएँ आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल एवं तमिलनाडु में हैं। इन राज्यों के हजारों प्रचारक लोग तन-मन-धन से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। ये प्रचारक पूरे दक्षिण भारत में कोने-कोने में रहकर हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं। इन प्रचारकों के प्रयास से सभा की प्रगति अविरत गति से हो रही है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा की धड़कन बनकर रहती है। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार की स्थिति को प्रदर्शित करनेवाली संस्था सभा है।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

(1) **जिस बोली की बोल-बोल में तुलसी की कलसी छलकी .... दर्पण बना सभा है।**

संदर्भ : ये पंक्तियाँ 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा गीत' शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता डॉ. एस. सुब्रह्मण्यन 'विष्णुप्रिया' है।

भावार्थ : इन पंक्तियों में कवि सभा की प्रशस्ति तथा हिन्दी प्रचारकों की निःस्वार्थ सेवा के बारे में कहते हैं। हिन्दी की बोलियों में अनेक सुंदर काव्यों की रचना हुई हैं। तुलसी, सूर जैसे महान कवियों की कृतियाँ हिन्दी की विभिन्न बोलियों में रची गईं। ऐसी भाषा में दक्षिण भारत के महान कवियों की वाणियाँ भी अनूदित हुईं। अर्थात् तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम भाषाओं के महान कवियों की कृतियों की रचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध हैं। सभा प्रमुख रूप में दक्षिण में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रही है। इसकी शाखाएँ आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल एवं तमिलनाडु में हैं। इन राज्यों के हजारों प्रचारक लोग तन-मन-धन से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। ये प्रचारक पूरे दक्षिण भारत में कोने-कोने में रहकर हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं। इन प्रचारकों के प्रयास से सभा की प्रगति अविरत गति से हो रही है।

8. पं. नारायणदेव

आपका जन्म सन् 1909 में केरल राज्य के कोट्टयम के निकटवर्ती गाँव कुटमालूर में हुआ। आप हिन्दी प्रचारक, अनुवादक कवि एवं समीक्षक थे। 'देव केरलीय' नाम से इनकी अनेक कविताएँ प्रकाशित हुई हैं।

इनके 'गाँधी सप्तक' तथा 'आरती' दो कविता-संकलन प्रकाशित हैं। आपकी रचनाएँ 'हिन्दी प्रबोध' और 'आँसू एक अध्ययन' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

अमृत पुत्र

मुड़ मुड़कर मत देखो, मानव!
बहु दूर तुम्हें तो चलना है,
सोचो अपने मन में हरदम
यह देश तुम्हारा अपना है।
कहीं पर बीहड़, कहीं पर परबत
कहीं पर गहरे गड्ढे हैं
कहीं बरसते हैं, धाराधर
कहीं गरजते हैं सागर।
काँटों की है राह तुम्हारी
नहीं कुसुमों की शय्या,
निहित स्वार्थ की रेलपेल से
बचकर तुमको चलना है।
चलो समय से होड़ लगाकर
नयी उमंगें भर मन में,
स्वप्निल मोहों से तुम बचकर
बढ़े चलो द्रुत नित मग में।
धैर्य तुम्हारा होगा संगी
ज्ञान-दीप ले चलना है,
आत्मिक बल की वैसाखी ले
टेक उसीको चलना है।
रण-संकट से मुक्त देश हो,
भ्रांति रहित हों, सभी सुखी हों,
सभी यशस्वी, सभी मनस्वी
सभी धर्मपथ गामी हों।

धीरोदात्त पुरुष हों नेता
त्यागी, तपस्वी, दान वीर हों,
निकषोपल है चारु-चरित तव
जीवन-कंचन कसना है।
जयमाला ले अपने कर में
जय देवी है तुम्हें बुलाती,
अमृत पुत्र हो, डर काहे का
बढ़े चलो तुम बढ़े चलो।
मुड़ मुड़कर मत देखो, मानव!
बहु दूर तुम्हें तो चलना है,
सोचो अपने मन में हरदम
यह हिन्दुस्तान तुम्हारा है।

शब्दार्थः–

हरदम - सदा; बीहड़ - ऊबड़-खाबड़; परबत - पहाड़; धाराधर - बादल; कुसुम - फूल; रेलपेल - भारी भीड़; उमंग - उल्लास, मौज; वैसाखी - सहारा; रण - युद्ध; भ्रांति - भ्रम; निकषोपल - कसौटी का पत्थर।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. **पं. नारायण देव मन में क्या सोचने के लिए कहते हैं?**

   'यह देश हमारा अपना है'– भावना के संबंध सोचने को कवि कहते हैं।

2. **हमें किससे बचकर चलने का आदेश 'अमृत पुत्र' में दिया गया है?**

   स्वार्थ की रेलपेल से बचकर चलने का आदेश हमें 'अमृत पुत्र' कविता से मिलता है।

3. **पं. नारायण देव नेता लोगों के लक्षणों के बारे में क्या बताते हैं?**

   कवि कहते हैं कि नेता लोगों को धीरोदात्त, त्यागी, तपस्वी, दानवीर, चारुचरित होना चाहिए।

II. कवि-परिचय दीजिए।

पंडित नारायण देव का जन्म सन् 1909 में हुआ। आप हिन्दी प्रचारक, अनुवादक कवि एवं समीक्षक थे। 'देव केरलीय' नाम से आपकी अनेक कविताएँ प्रकाशित हुई हैं।

आपके 'गाँधी सप्तक' तथा 'आरती' दो कविता–संकलन प्रकाशित हैं। 'हिंदी प्रबोध' और 'आँसू एक अध्ययन' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

III. कविता का सारांश लिखिए।

पंडित नारायणदेव देश-प्रेमी हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का उद्‌गार ही है।

इस कविता में देश के चित्र-विचित्र वातावरण चित्रित है। कहीं गड्ढा तो कहीं पहाड़ है। स्वार्थहीन रहकर, समय से होड़ लगाकर, स्वप्नों से हटकर तेज़ी से अपने मार्ग पर चलते रहना है। धैर्य के साथ ज्ञान-प्रकाश में आत्मबल के सहारे चलना है। कवि कामना करते हैं कि सभी भारतीय सुख-शांति से धर्मावलंबी तथा यशस्वी बनकर रहें। नेता लोग धीरोदात्त, त्यागी, तपस्वी बनकर समाज का नेतृत्व करें। कवि "मुखिया मुख सों चाहिए" की याद दिलाते हैं। बिना शंका के, बिना डर के जयमाला लेकर चलना है। कवि के आदेशानुसार जीवन बितानेवाले ही अमृत पुत्र बनेंगे।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. धैर्य .... चलना है।

संदर्भः- पंडित नारायण देव की 'अमृत पुत्र' कविता से ये पंक्तियाँ ली गयी हैं।

भावार्थ :- कवि, मानव को यह आदेश देते हैं कि वह धैर्य को अपना संगी बनाकर, ज्ञान-दीप लेकर, आत्म बल के सहारे जीवन बितायें।

2. कहीं पर बीहड .... सागर।

संदर्भः- पंडित नारायण देव की 'अमृत पुत्र' कविता से ये पंक्तियाँ ली गयी हैं।

भावार्थ :- जीवन रूपी रास्ते पर कहीं ऊबड-खाबड, कहीं पहाड और कहीं गड्ढे होते हैं। कहीं बादल बरसते हैं तो कहीं समुद्र गरजता है। मतलब, जीवन हमेशा समान और शांतिपूर्वक नहीं रहता।

9. डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ

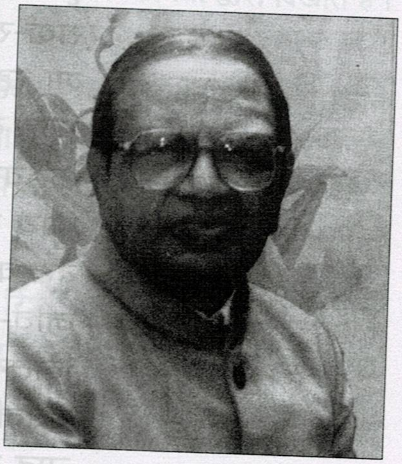

आपका जन्म सन् 1933 में हुआ। कन्नड के बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि, कथाकार डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ भारत की अनेक भाषाओं के ज्ञाता और प्रथम श्रेणी के मौलिक रचनाकार हैं। उन्होंने विभिन्न प्रादेशिक भारतीय साहित्य के श्रेष्ठ ग्रन्थों का कन्नड में अनुवाद कर एक महान सांस्कृतिक सेतुवन्ध का निर्माण किया है। आपकी अनेक रचनाओं का अनुवाद भी कई भाषाओं में हुआ है।

डॉ. पंचाक्षरी जी ने अपने दस साल की उम्र में कलम चलाना प्रारंभ किया और आज (2023) नब्बे वर्ष के होने पर भी निरंतर लिखते जा रहे हैं। आप हिंदी में लिखना अपना परम कर्तव्य समझते हैं। आपने हिंदी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, मलयालम, रूसी आदि भाषाओं से कई रचनाओं का अनुवाद कन्नड में किया है। चंडिदास, लल्लेश्वरी, शेख नूरूद्दीन नूरानी, वळ्ळत्तोळ, जी. शंकर कुरूप, मिर्जा गालिब, मोहम्मद इकबाल, अमृता प्रतीम जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों से कन्नड़ भाषियों को परिचित कराने का श्रेय आपको जाता है।

साहित्य की सभी विधाओं में आपने रचना की है। सत्तर से भी अधिक आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आपकी कविताओं और कथाओं का अनुवाद भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, नेपाली भाषाओं में भी हुआ है।

जीव - प्रदीप

मंद नील मुसकान की ओट में से
झाँक रही है अरुण किरण।
माँ का आँचल इधर-उधर सरका कर
जैसे बच्चा बढ़ा रहा है निज चरण,
रोशनी फैल रही है चहुँ ओर।
कराल रात के गर्भ में ही बड़ा हुआ
रोशनी का यह बच्चा,
इस बच्चे की मधुर मुसकान
रोशनी बन फैल गयी धरती पर।
जनम जनम का रिश्ता हमारा,
अब हममें रोशनी पूर्ण।

आसमान की थाली में सूर्यदीप,
पृथ्वीदेवी की आरती -
सदा-सर्वदा प्रकाशमान है यह जीव-प्रदीप।
गा रहा है पक्षि-संकुल शुभकीरति,
'कुहू कुहू कुहू' -
कड़वा-मीठा है जीवन।
गाय के थन में
दूध का स्रोता,
जीव-जीव की संप्रीति
जितना गावें कम ही है।
नवजीवन का गाना गाओ,
नाद का पथ अपनाओ
गाओ नवजीवन का गाना।

शब्दार्थः-

ओट - आड़, छिपाव; चहुँ ओर - चारों ओर; कराल - भयंकर; संकुल - झुंड, समूह; स्रोता - झरना; संप्रीति - स्नेह, आनंद।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. **'जीव-प्रदीप' के अनुसार अरुण किरण कहाँ से झाँक रही है?**
   मंद नील मुसकान की ओट में से अरुण किरण झाँक रही है।
2. **कवि पंचाक्षरी हिरेमठ के विचार में सूर्यदीप द्वारा किसकी आरती हो रही है?**
   कवि के विचार में सूर्यदीप द्वारा पृथ्वी देवी की आरती हो रही है।
3. **'जीव-प्रदीप' में पक्षि-संकुल क्या गा रहा है?**
   कविता के अनुसार पक्षि-संकुल शुभ कीर्ति गा रहा है।

II. कवि-परिचय दीजिए।

कवि डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ का जन्म सन् 1933 को हुआ। आप भारत की अनेक भाषाओं के ज्ञाता और मौलिक रचनाकार हैं। आप हिंदी में लिखना अपना कर्तव्य समझते हैं। हिंदी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, मलयालम, रूसी आदि भाषाओं से आपने कई रचनाओं का अनुवाद कन्नड में किया है। सत्तर से भी अधिक आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आपकी कविताओं और कथाओं का अनुवाद भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, नेपाली भाषाओं में भी हुआ है।

III. कविता का सारांश लिखिए।

कवि डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ 'सूर्योदय' का स्फूर्तिदायक दृश्य, 'जीव-प्रदीप' कविता द्वारा दिखाते हैं। इस कविता द्वारा नवजीवन का गाना गाने की प्रेरणा देते हैं।

शिशु जिस तरह अपनी माँ का आँचल पकड़कर, अपने प्रथम कदम बढ़ाता है वैसे मंद नील मुसकान की ओट में से अरुण किरण निकलती है। काली रात के गर्भ से निकला हुआ प्रकाश रूपी शिशु धरती पर आता है। प्रकृति-नियम के अनुसार अपना कार्य करती है। कवि सूर्य दीप को पृथ्वीदेवी की आरती कहते हैं। इस जीव-प्रदीप के आने पर पक्षि-वृंद चहचहाता है।

जीवन सुख-दुख का सम्मिश्रण है। जीव-जीवों के बीच स्नेहमय रिश्ता रहना चाहिए। यह स्नेह दीप गाय के थन से बहनेवाले दूध के समान पवित्र तथा बलदायक है। अतएव नवजीवन का गाना गाने की प्रेरणा जीव-प्रदीप देता है।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. कराल रात .... धरती पर।

संदर्भः- कवि डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ सूर्योदय का वर्णन अपनी कविता 'जीव-प्रदीप' में इस तरह करते हैं।

भावार्थ :- वे कहते हैं कि कराल रात्रि के गर्भ में पैदा होकर, प्रकाशमय यह शिशु अपनी मधुर मुसकान से भूमि पर रोशनी बनकर फैल रही है।

2. गाय के थन .... कम ही है।

संदर्भः- कवि डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ सूर्योदय का वर्णन अपनी कविता 'जीव-प्रदीप' में इस तरह करते हैं।

भावार्थ :- कविता 'जीव-प्रदीप' में डॉ. पंचाक्षरी हिरेमठ स्नेहगीत गाने की प्रेरणा देते हैं। गाय के थन से जिस तरह दूध का स्रोत निकलता है, उसी तरह जीव-जीव के स्नेह के बारे में गाते रहने का आदेश देते हैं।

10. रुक्माजी राव 'अमर'

आपका जन्म सन् 1926 में हुआ। आप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के स्नातक हैं। तेलुगु, कन्नड़, तमिल तथा अंग्रेज़ी का आपको सम्यक ज्ञान है। आप कवि, एकांकीकार, कहानीकार, निबंधकार, गीतकार, पत्रकार, आलोचक, निर्देशक, शिक्षक एवं हिन्दी प्रचारक हैं। आकाशवाणी मद्रास केन्द्र से आपकी रचनाएँ प्रसारित होती हैं। हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, संस्मरण-ग्रंथों एवं साहित्यिक संकलनों में आपकी रचनाएँ संगृहीत हैं। 'नया सूरज' आपका कविता-संकलन है। सन् 2011 में आप स्वर्ग सिधारे।

अमन की दुनिया

मेरे भीतर ही भीतर
न जाने कब से –
संघर्ष उठ रहा है,
जिसको रोक पाने की शक्ति
धरती पर अभी तक
पैदा नहीं हुई है।
जानता हूँ और
मानता भी हूँ –
संघर्ष का नतीजा
कभी भला नहीं निकलता।
नुकसान उठाये बग़ैर
फ़ायदे की उम्मीद करना है बेकार,
हर कोशिश कभी
कामयाब नहीं होती।
बिजली कभी
आफ़ताब हो पायी है?
हर साज़िश के पीछे
जुर्म का नकाब पहने

ख्यालात खड़े होते –
मज़बूत शिकंजों में
तुम्हें जकड़ लेने की ख़ातिर।
ज़मीं से आसमान तक
ज़ालिमों का मेला लगा रहता है,
मत भूलो तुम्हारी बाहुओं में –
फौलादी ताक़त मौजूद है –
दिल की मज़बूती के आगे
हिमालय भी झुकता है।
आख़िर यह ख़ून-ख़राबा –
यह छीना-झपटी
यह धोखा-धड़ी किसलिए?
हस्ती मिटकर रह जाएगी,
बस्ती लुटकर बयाबान बन जाएगी।
तुम्हारी अपनी डफली का राग
जंगल के सन्नाटे में खोकर रह जाएगा।
एक जलजला ऐसा आएगा
सारा का सारा किया कराया
नेस्त-नाबूद होकर रह जाएगा।
खुदगर्ज़ी की ख़ातिर अपनी
ज़मीं की ज़िन्दगी को
दोज़ख में मत बदल डालो
चाहो तो अपनी तदबीर से इसे
बेशक ज़न्नतनुमा बना सकते हो –
अक्ल के दुश्मनो,
ग़ौर से सोचो ज़रा -
अपने घरौंदों से बाहर झाँको ज़रा –
अमन की दुनिया
कितनी सलोनी
कितनी बेहतरीन है .....!

शब्दार्थ

कामयाब - सफल; आफ़ताब - सूर्य; साज़िश - षड्यंत्र; जुर्म - अपराध; नकाब - घूँघट; ख्यालात - ख्याल का बहुवचन रूप; ज़ालिम - अत्याचारी; फौलादी - इस्पात का; खून-खराबा - मार-काट; बयाबान - बियाबान, जंगल; डफली - बाजा; जलजला - भूकंप; नेस्त-नाबूद - बरबाद; खुदगर्ज़ी - स्वार्थ; दोज़ख - नरक; तदबीर - उपाय; ज़न्नत - स्वर्ग; घरौंदा - कागज़, मिट्टी का बना घर जिससे बच्चे खेलते हैं; अमन - चैन, शांति

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. **'अमन की दुनिया' के अनुसार क्या हर कोशिश कामयाब होती है?**
   कविता के अनुसार हर कोशिश कामयाब नहीं होती।
2. **कवि 'अमर' के अनुसार ज़ालिमों का मेला कहाँ से कहाँ तक लगा रहता है?**
   कविता के अनुसार जालिमों का मेला ज़मीन से आसमान तक लगा रहता है।
3. **अमन की दुनिया कैसी होती है?**
   अमन की दुनिया सलोनी और बेहतरीन होती है।

II. कवि-परिचय दीजिए।

रुक्माजी राव 'अमर' का जन्म सन् 1926 को हुआ। आप दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के स्नातक थे। तेलुगु, कन्नड, तमिल तथा अंग्रेज़ी का आपको सम्यक ज्ञान है। आप कवि, एकांकीकार, कहानीकार, निबंधकार, गीतकार, पत्रकार, आलोचक, निर्देशक, शिक्षक एवं हिन्दी प्रचारक हैं। आकाशवाणी, मद्रास केन्द्र से आपकी रचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं। हिंदी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरण–ग्रंथों एवं साहित्यिक संकलनों में आपकी रचनाएँ संगृहीत हैं। 'नया सूरज' आपका प्रकाशित कविता–संकलन है।

कवि रुक्माजी राव की 'समय देखा', 'आधुनिक आलोचक', 'पत्नी पुराण', 'बादलों की ओर' आदि रचनाएँ पुरस्कृत हैं।

सन् 2011 में आपका देहांत हुआ।

III. कविता का सारांश लिखिए।

कवि रुक्माजी राव अमर अपनी 'अमन की दुनिया' कविता द्वारा शांति का संदेश देते हैं।

जब संसार में 'धर्मस्य ग्लानिर्भवति' (भगवदगीता–अर्थ–जब धर्म की हानि होती है) तब सच्चे मानव को अपना बाहुबल दिखाना पड़ता है। कवि अपने मन का संघर्ष व्यक्त करते हैं। धर्मयुद्ध को दमन

करने की शक्ति अभी तक पैदा नहीं हुई है। संघर्ष हर विषय में, हमेशा भला नहीं निकलता, मगर एक भलाई के लिए कोशिश करते समय कुछ हानियाँ भी होंगी। बिना मोल के दुनिया में कुछ पा नहीं सकते। मज़बूत शिकंजों में हमें जकड़ने के लिए अनेक लोग कोशिश करते रहेंगे। ज़मीन से आसमान तक अत्याचारियों का मेला लगा रहता है। मगर उस मेले को छिन्न-भिन्न करने की फौलादी ताकत मानवों में है। मन में दृढता हो तो मानव हिमालय को भी झुका सकते हैं।

अत्याचारियों की स्वार्थता अंत में संसार को श्मशान बना देगी। प्रकृति के नियम के अनुसार 'विनाशाय दुष्कृतां' एक भूकंप आएगा। इन सब कुकर्मों को नाश करेगा। सच्चे मानव को अपने घरौंदों से बाहर आकर, अपनी सामर्थ्य से इस संसार को स्वर्ग बनाना है। तभी हम लोग अमन की दुनिया के दर्शन कर सकते हैं।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. मेरे भीतर ही .... नहीं हुई।

संदर्भः- कवि रुक्माजी राव 'अमर' कृत 'अमन की दुनिया' नामक कविता से ये पंक्तियाँ उद्धृत हैं।

भावार्थ :- कवि ज़ालिमों के खिलाफ़ आवाज़ उठाते हैं। साज़िशों को ठुकराकर अमन की दुनिया बनाने की प्रेरणा उनके मन में उठती है। इस धार्मिक उद्वेग को रोकने की शक्ति भूमि पर अभी तक पैदा नहीं हुई। संघर्ष की ऐसी भावना इन पंक्तियों में प्रकट होती है।

2. हस्ती मिटाकर .... रह जाएगा।

संदर्भः- कवि रुक्माजी राव 'अमर' कृत 'अमन की दुनिया' नामक कविता से ये पंक्तियाँ उद्धृत हैं।

भावार्थ :- कवि ज़ालिमों के षड्यंत्र, धोखा-धड़ी के नतीजे के बारे में बताते हैं। इससे मानवों का जीवन मिट जाएगा। उनकी बस्तियाँ छिन्न-भिन्न हो जाएँगी। इस तरह चलने से, मानवों का शांति-राग, बाजा बजने का स्वर हीन होकर भयंकर वातावरण में खो जाएगा।

उर्दू पदय

11. डॉ. मुहम्मद इकबाल

उर्दू और फ़ारसी के इस मशहूर शायर ई. सन् 1877, नवम्बर 9 को स्यालकोट (पंजाब) में पैदा हुए। इनके पिता ने इन्हें उर्दू, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी में उच्च शिक्षा दिलवाई। लाहौर के सरकारी कालेज में प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप विलायत गये। इंग्लैण्ड में बैरिस्टरी हासिल की और लाहौर में वकालत करते थे।

विलायत जाने के पहले आप शुद्ध भारतीय नज़र आते थे। भारत का हित अपना ईमान, हिन्दू मुसलिम एकता अपना मजहब और आजादी अपना लक्ष्य समझते थे और ऐसे ही भाव उनकी इस शायरी में छलकते हैं।

उर्दू और फ़ारसी में आपकी कविताओं के एक दर्जन से अधिक संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। सच्चाई, सादगी, देशभक्ति और नवीनता के साथ आपकी शायरी में 'कल्पना भाव' और भाषा के ऐसे राग भरे हैं कि सुननेवाले भावुक हो जाते हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र के बाद शायरी के बदौलत अंतर्राष्ट्रीय ख्याति आपने ही हासिल की। सन् 1938, अप्रैल 21 के दिन आप अल्लाह के प्यारे हो गये।

बाँग दिरा, कुल्लियात-ए-इकबाल आदि आपकी उर्दू कविताओं के संग्रह हैं।

तराना-ए-हिन्दी

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा।
गुरबत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा हमसाया आस्मां का।
वो संतरी हमारा वो पासवां हमारा।।
गोदी में खेलती हैं इसकी हजारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जनां हमारा।।

ए आब-ए-रूढ-ए-गंगा! वो दिन है याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा।।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।।

यूनान-ओ-मिस्त्र-ओ-रोमा सब मिट गये जहाँ से।
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशा हमारा।।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमां हमारा।।

'इकबाल!' कोई मरहम अपना नहीं जहाँ में।
मालूम क्या किसी को दर्द-ए-निहाँ हमारा।।

शब्दार्थ

जहां - स्थान, देश; हिंदोस्तान - भारत; बुलबुल - एक पक्षी (nightingale); गुलिस्ताँ - फूलों का बाग, फुलवारी; गुरबत - विदेश; वतन - देश, मातृभूमि; परबत - पहाड़, पर्वत; हमसाया - ऊंचा, साया जैसा छाया; आसमां-आसमान; संतरी - सुरक्षा करनेवाला; पासवाँ - पहरेदार; गुलशन - बाग; जिनाँ - स्वर्ग; रश्क - ईर्ष्या; आब-ए-रूढ़-ए-गंगा - गंगा नदी के पानी; (रूद - नदी; आब - पानी; ए - उर्दू भाषा के संबंध कारक); कारवां - अनुगामी समूह, झुंड; मजहब - धर्म; बैर - विरोध; हिन्दी - भारतीय; यूनान - Greece; मिस्त्र - Egypt; रोमा - Rome; नामो - निशान-नाम के चिह्न; हस्ती - अस्तित्व; दुश्मन - विरोधी; दौरे-जमां - जमाने से; मरहम - दवा की पट्टी; दर्द-ए -निहाँ - छुपे दर्द।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **शायर मुहम्मद इक्बाल भारत देश और भारतवासियों की तुलना किसके साथ करते हैं?**
   शायर मुहम्मद इक्बाल भारत देश को फूलों के बाग तथा भारतवासियों को 'बुलबुल' पक्षी के साथ तुलना करते हैं।

2. **भारत के संतरी एवं चौकीदार कौन है?**
   हिमालय पर्वत भारत देश के संतरी और चौकीदार है।

3. **हज़ारों नदियाँ कहाँ खेलती है?**
   भारत की गोद में हज़ारों नदियाँ खेलती हैं।

4. हमारे कारवाँ किस नदी के किनारे उतरे?

हमारे कारवाँ गंगा नदी के किनारे उतरे।

5. मज़हब क्या सिखाता है?

मज़हब सबको मिलकर रहने की शिक्षा देता है।

6. इस शायरी में 'हिन्दी' शब्द का अर्थ क्या है?

इस शायरी में 'हिन्दी' शब्द 'भारतीय', 'हिन्दुस्तानी' अर्थ को सूचित करता है।

III. कविता का सारांश लिखिए :-

इस कविता में शायर हिंदुस्तान की प्राकृतिक संपन्नता के बारे में बताते हैं। कहते हैं कि दुनिया में सर्वोत्कृष्ट देश हमारा भारत, हिंदुस्तान है।

सारी दुनिया में हमारा हिंदुस्तान ही सर्वोत्कृष्ट है। हिंदुस्तान एक बाग है तो हम सब हिन्दुस्तानी इस बाग के बुलबुल हैं। हमारा हिंदुस्तान एक सुंदर फुलवारी है।

जब हम विदेश में रहते हैं, तब भी हमारा दिल हमारे वतन हिंदुस्तान के बारे में ही सोचता रहता है। तो हमें समझना चाहिए कि हमारा दिल जहाँ रहता है वहीं हमारी जी भी रहती है। अर्थात् मात्र हमारा शरीर विदेश में है, लेकिन हमारा दिल, हमारी याद, हमारी स्मृतियाँ सब हिंदुस्तान में ही है।

आगे कवि हिंदुस्तान के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हैं। संसार में सबसे ऊँचा परबत हिमालय है। यह भारत के उत्तर में है। हिमालय इतना ऊँचा है कि मानो वह आकाश को छू रहा है, और आकाश की साया जैसी है। यह हिमालय परबत हमारे रक्षक है। यह गर्व की बात है कि यह परबत हमारे हिंदुस्तान के पास है और हमारे देश का पहरेदार है।

आगे शायर हिंदुस्तान की नदियों का वर्णन करते हैं। हिंदुस्तान की गोदी में हजारों नदियाँ हैं। दुनिया में अनेक ऐसे देश हैं, जहां एक नदी भी नसीब में नहीं है। लेकिन भारत में कोस-कोस में नदी है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। इन नदियों से हमारे हिंदुस्तान के चमन सींचे जाते हैं और हमारा वतन हरा भरा रहता है। इसे देखकर स्वर्ग भी ईर्ष्या करता है।

आगे शायर गंगा नदी को संबोधित करके कहते हैं, ऐ गंगा नदी के पानी, क्या तुमको याद है? तुझपर नाव में सवार होकर कितने यात्री झुंड आते थे। वे सब हमारे देश की संपन्नता के बारे में सुनकर, यहीं रहने के लिए आए।

हमारे देश में अनेक धर्मावलम्बी, अनेक मज़हबों के अनुयायी रहते हैं। लेकिन वे सब अमन से, चैन से रहते हैं। क्योंकि कोई भी धर्म या मज़हब विरोध भावना की शिक्षा नहीं देता। सब धर्मावलम्बी यही सोचते हैं कि, हम 'हिन्दी' यानि भारतीय हैं और हमारा देश है हिंदुस्तान।

आगे कवि भारत की अखंडता और अस्मिता के बारे में कहते हैं। यूनान, मिश्र, रोम जैसे अनेक देश के नाम हमने इतिहास में सुना है। लेकिन अब वे सब कहाँ है? सब मिट गए हैं। लेकिन हमारे देश का नाम रहता है।

भारत की महानता को कोई मिटा नहीं सकता। सदियों से अनेक दुश्मन हमारे अस्तित्व को मिटाने के लिए आए। लेकिन कोई कुछ नहीं कर सके।

इकबाल कहते हैं, हमारे मन में भी अनेक प्रकार के दर्द है, जिन्हे कोई पहचान नहीं सकता और जिनके लिए कोई मरहम भी नहीं है। फिर भी हम एक साथ रहते हैं, हमारे हिंदुस्तान को सबसे प्यारे महसूस करते हैं।

IV. निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. ऐ आब-ए-रूद-ए............... जब कारवाँ हमारा।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ, 'तराना-ए- हिन्दी' शीर्षक उर्दू शायरी से ली गई हैं। इसके शायर डॉ. मुहम्मद इकबाल है। डॉ. मुहम्मद इकबाल उर्दू और फारसी के मशहूर शायर है।

भावार्थ :- इस कविता में शायर हिंदुस्तान की प्राकृतिक संपन्नता के बारे में बताते हैं। कहते हैं कि दुनिया में सर्वोत्कृष्ट देश हमारा भारत, हिंदुस्तान है। इन पंक्तियों में शायर फरमाते (बताते) हैं, सारी दुनिया में हमारा हिंदुस्तान ही सर्वोत्कृष्ट है। आगे शायर गंगा नदी को संबोधित करके कहते हैं, ऐ गंगा नदी के पानी, क्या तुमको याद है? तुझपर नाव में सवार होकर कितने यात्री झुंड आते थे। वे सब हमारे देश की संपन्नता को सुनकर, देश में रहने के लिए आए।

2. 'मज़हब नहीं सिखाता..................... नाम-ओ-निशाँ हमारा।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ, 'तराना-ए-हिन्दी' शीर्षक उर्दू शायरी से ली गई हैं। इसके शायर डॉ. मुहम्मद इकबाल है। डॉ. मुहम्मद इकबाल उर्दू और फारसी के मशहूर शायर है।

भावार्थ :- इस कविता में शायर हिंदुस्तान की प्राकृतिक संपन्नता के बारे में बताते हैं। कहते हैं कि दुनिया में सर्वोत्कृष्ट देश हमारा भारत, हिंदुस्तान है। इन पंक्तियों में शायर फरमाते (बताते) हैं, हमारे देश में अनेक धर्मावलम्बी, अनेक मजहबों के अनुयायी रहते हैं। लेकिन वे सब अमन से, चैन से रहते हैं। क्योंकि कोई भी धर्म या मजहब विरोध भावना की शिक्षा नहीं देता। सब धर्मावलम्बी यही सोचते हैं कि, हम 'हिन्दी' यानि भारतीय हैं और हमारा देश है हिंदुस्तान।

12. कैफ़ी आज़मी

अतहर हुसैन रिज़वी का जन्म 19 जनवरी 1919 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले में मजमां गाँव में हुआ। अदब की दुनिया में आगे चलकर वे कैफ़ी आज़मी नाम से मशहूर हुए। कैफ़ी आज़मी की गणना प्रगतिशील उर्दू कवियों की पहली पंक्ति में की जाती है।

कैफ़ी की कविताओं में एक ओर सामाजिक और राजनैतिक जागरूकता का समावेश है तो दूसरी ओर हृदय की कोमलता भी है। अपनी युवावस्था में मुशायरों में वाह-वाही पाने वाले कैफ़ी आज़मी ने फ़िल्मों के लिए सैकड़ों बेहतरीन गीत भी लिखे हैं।

10 मई 2002 को इस दुनिया से रुखसत हुए। कैफ़ी के पाँच कविता-संग्रह 'झंकार', 'आखिर-ए-शब', 'आवारा सज़दे', 'सरमाया' और फ़िल्मी गीतों का संग्रह 'मेरी आवाज़ सुनो' प्रकाशित हुए।

कर चले हम फ़िदा

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो,
साँस थमती गयी, नब्ज़ जमती गयी,
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया,
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो, (कर चले..........)

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।
ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर,
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं,
हुस्त और इश्क दोनों को रुस्वा करे,
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं,
आज धरती बनी है दुलहन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो। (कर चले..........)

राह कुर्बानियों की न वीरान हो,
तुम सजाते ही रहना नये काफ़िले,
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है,
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले,
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो। (कर चले..........)

खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर,
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई,
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे,
छू न पाए सीता का दामन कोई,
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो। (कर चले..........)

शब्दार्थ :-

फ़िदा - न्योछावर; हवाले - अर्पित; वतन - जन्म भूमि; नब्ज़ - नाड़ी; थमना - रुकना; कदम - पैर; गम - दुख; सर - सिर; बाँकपन - बहादुरी; ज़िंदा - जीवित; रुत - मौसम; हुस्त - सुन्दरता; इश्क - प्रेम; रुस्वा - बदनाम; खूँ - खून; दुलहन - नव-वधू; कुबानियाँ - बलिदान; वीरान - उजाड़; काफ़िला - यात्रियों का समूह; फ़तह - जीत; जश्न - समारोह; कफ़न - शव लपेटने का कपड़ा; लकीर - रेखा।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. **शायर 'कैफ़ी आज़मी' के अनुसार किस हालत में कदम को रुकने न देना चाहिए?**
   शायर 'कैफ़ी आज़मी' के अनुसार साँस के थमने पर, नाडी के जमने पर भी हमें अपने बढ़ते कदम को रुकने न देना चाहिए।
2. **'कैफ़ी आज़मी' के अनुसार कौन-सा मौसम रोज़ नहीं आता?**
   शायर 'कैफ़ी आज़मी' के अनुसार जान देने का मौसम, त्याग करने का अवसर रोज़ नहीं आता।
3. **'कर चले हम फ़िदा' शायरी के अनुसार, ज़िन्दगी किससे गले मिल रही है?**
   'कर चले हम फ़िदा' शायरी के अनुसार ज़िन्दगी मौत से गले मिल रही है।

II. कविता का सारांश लिखिए।

'साथियो, इस देश को हमने तुम लोगों को सौंप दिया। इस देश के लिए हमने बहुत कष्ट उठाया। फिर भी हमने इसका गौरव बचाया।

हम रोज़ ज़िंदा रहते हैं। लेकिन मरने का अवसर रोज़ नहीं आता। तुम जवान हो, दूल्हा हो। इस देश की धरती को दुल्हिन समझो। इसके लिए मर-मिटने तैयार हो जाओ।

त्याग का रास्ता खाली नहीं होना चाहिए। वीरों का दल उसमें चलता रहे। जीत का समारोह बाद में सुनाओ। अब मौत से गले मिलने तैयार रहो। कफ़न सिर पर बाँधकर हर घड़ी तैयार रहो।

तुम लक्ष्मण होकर खून की रेखा ज़मीन पर खींच दो। दुश्मन रूपी रावण का हाथ देश रूपी सीता का दामन छूने इस ओर बढ़े, तुरंत उसे तोड़ डालो। राम, लक्ष्मण सब तुम ही हो।'

यह नवागत पीढ़ी को उद्‌बोधन देनेवाली कविता है।

III. संदर्भ सहित भाव समझाइए :-

1. कर चले हम .... रुकने दिया।

संदर्भः- शायर 'कैफ़ी आज़मी' की 'कर चले हम फ़िदा' शायरी से ये पंक्तियाँ ली गयी हैं।

भावार्थ :- शायर जान की लापरवाही जताते हैं। अगर साँस थमे, नाडी जमे, फिर भी बढ़ते कदम न रुकें। वे मानवों को संबोधित करके यह संदेश देते हैं। शरीर और जान का न्योछावर करने तैयार रहने आहवान देते हैं।

2. राह कुर्बानियों की .... रही है गले।

संदर्भः- शायर 'कैफ़ी आज़मी' की 'कर चले हम फ़िदा' शायरी से ये पंक्तियाँ ली गयी हैं।

भावार्थ :- शायर 'कैफ़ी आज़मी' अपनी शायरी में कहते हैं कि बलिदान व्यर्थ न होने पावें। वीरतापूर्ण लोगों का समूह तैयार रहें। हमें मौत से गले लगाने की तैयारी करने के बाद जीत का समारोह मनाना चाहिए।

प्राचीन पदय

13. संत कबीर

कबीर 15वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी संत कवि थे। आप हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में निर्गुण-ज्ञानाश्रयी शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को गहराई तक प्रभावित किया। वे हिन्दू व इस्लाम धर्म के आलोचक थे। आपने सामाजिक अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की थी।

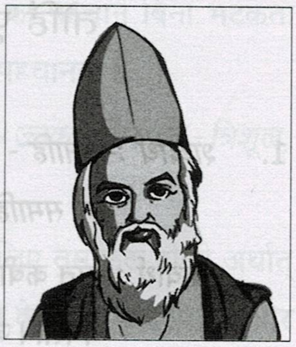

कबीर (लगभग 14वीं-15वीं शताब्दी) के जन्म स्थान के बारे में विद्वानों में मतभेद है। परंतु अधिकतर विद्वान इनका जन्म स्थान काशी ही मानते हैं, और इसकी पुष्टि स्वयं कबीर की पंक्ति करती है–

"काशी में परगट भये, रामानंद चेताये"

कबीर रामानन्द जी को अपना गुरु मानते थे। जीविकोपार्जन के लिए कबीर जुलाहे का काम करते थे। लोगों की मान्यता थी कि काशी में मरने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है। लेकिन कबीर का दृढ़ विश्वास था कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है, स्थान विशेष के कारण नहीं। मगहर में उन्होंने अंतिम साँस ली।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी अर्थात् साधुओं की भाषा थी। इसमें राजस्थानी, हरियाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता है।

शिष्यों ने उनकी वाणियों का संग्रह "बीजक" नामक ग्रंथ में किया। इसके तीन मुख्य भाग हैं – साखी, सबद (पद) रमैनी।

साखी : 'साखी' शब्द संस्कृत के 'साक्षी', शब्द का विकृत रूप है, और यह धर्मोपदेश के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'सबद' गेय पद हैं जिसमें पूरी तरह संगीतात्मकता है। 'रमैनी' चौपाई छंद में लिखी गयी है। इनमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों को प्रकट किया गया है।

कबीर के दोहे - कंठस्थ

1. जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु है हम नाहिं।
   प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं।।
2. चींटी चावल लै चली बीच में मिलि गयी दाल।
   कह कबीर दोउ ना मिलै, इक ले दूजी डार।

3. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगा, बहुरि करेगा कब।।

4. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माहिं।
ऐसैं घटि घटि राम हैं, दुनियाँ देखै नाहीं।।

5. जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, वाको है तिरसूल।।

अभ्यास

1. *शब्दार्थ :- नाहिं - नही; साँकरी - बहुत ही तंगी, बहुत संकीर्ण, कसा हुआ; न समाहिं - रख नहीं सकते;*

भावार्थ :- संत कबीर कहते हैं कि जब तक मुझे अहंकार था तब तक गुरु की कृपा और प्यार नहीं मिला। जब अहंकार से मैं मुक्त हुआ तब मुझे गुरु की कृपा और प्यार मिला। यहाँ कबीर एक सुंदर उदाहरण देते हैं; प्रेम का मार्ग अत्यंत नाज़ुक है। वह तंगी गली जैसी है। उसमें दो नहीं, मात्र एक के लिए जगह है। इसमें एक साथ दो नहीं समा सकते अर्थात् गुरु के रहते हुए अहंकार नहीं होता और जहाँ अहंकार है वहाँ गुरु की कृपा नहीं रहती।

2. *शब्दार्थ :- बीच में - रास्तें में, इक ले - एक लेना; दूजी - दूसरा*

भावार्थ :- संत कबीर कहते हैं कि एक चींटी अपने मुँह में चावल लेकर जा रही थी, चलते-चलते उसने रास्ते में एक दाल को देखा। चींटी अगर दोनों को लेकर जाना चाहती तो असंभव है। किसी एक को लेकर जाना ही संभव है। कबीर इस उदाहरण से माध्यम से हमें बताते है कि जीवन में जो आसानी से मिलता है उससे संतुष्ट रहना ही बुद्धिमत्ता है। सबकुछ लेने का प्रयास करना बुद्धिमानी नहीं है।

3. *शब्दार्थ :- काल - आनेवाले कल; करे - करना है; पल - एक क्षण; परलय - प्रलय; होएगा - हो जाएगा; बहुरि - फिर, पुनः, उपरांत*

भावार्थ :- संत कबीर इस दोहे में समय की पाबंदी का महत्व बताते हैं। कहते हैं कि किसी भी काम को समय पर करना चाहिए। कहते हैं कि जो कार्य कल करने के लिए सोचते हैं उसे आज ही कर लेना है। जिसे आज के दिन पूरा करने लिए सोच रहे हैं उसे अभी करना है। क्योंकि

अगले क्षण की जानकारी किसी को नहीं है। अगर कुछ अनहोनी, प्रलय हो जाए तो सब काम अधूरे रह जाएँगे। अर्थात् जो करना है उसे जल्दी करें, वरना बाद में नहीं कर पाएँगे।

4. *शब्दार्थ :- बसै - बसा हुआ है; माहिं - के अंदर; घटि घटि - हृदय में*

भावार्थ :- कस्तूरी मृग की नाभी में सुगंधित द्रव उत्पन्न होता है। इससे मृग के चारों ओर सुगंधमय रहता है। लेकिन नादान मृग इसे जाने बिना उसी सुगन्ध की खोज में सारा वन सूँघता फिरता है। इसी तरह मनुष्य भी अपने अंदर की परमात्मा को पहचाने बिना भटकता फिरता है। कबीर कहते हैं कि हमें अपने अंदर के भगवान को पहचानना है

5. *शब्दार्थ :- तोको - तुमको; बुवै - बोता है; ताहि - उसके बदले; वाको - उनको; त्रिरसूल - त्रिशूल, काँटा*

भावार्थ :- संत कबीर कहते हैं कि जो तुम्हारे लिए कांटा बोता है, उसके लिए तुम फूल बोओ अर्थात् जो तुम्हारी बुराई करता है तुम उसकी भलाई करो। तुम्हें फूल के बदले फूल मिलेंगे और जो कांटे बोता है उसे कांटे मिलेंगे। तात्पर्य यह कि नेकी के बदले नेकी और बदी के बदले बदी ही मिलता है। यही प्रकृति का नियम है। अतः हमें सदा भलाई करते जाना है।

14. गोस्वामी तुलसीदास

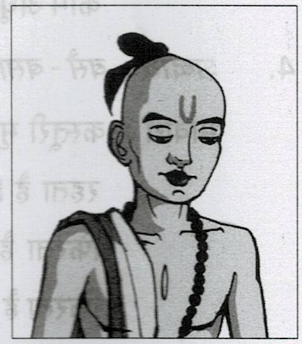

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के महान संत एवं रामभक्त कवि थे। अधिकांश विद्वान मानते हैं कि तुलसीदास का जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले स्थित एक गाँव है। उनकी पत्नी का नाम रत्नावली है। तुलसीदास अपनी पत्नी को बहुत चाहते थे। एक दिन उन्होंने भयंकर अँधेरी रात में उफनती यमुना नदी तैरकर पार की और सीधे अपनी पत्नी के शयन कक्ष में जा पहुँचे। रत्नावली इतनी रात गये अपने पति को अकेले आये देखकर अचंभित और लज्जित हो गयी। वे उसी समय पत्नी को घर वापस चलने का आग्रह करने लगे। उनकी इस अप्रत्याशित जिद से खीझकर रत्नावली ने कहा, 'अस्थि चर्म' मय देह मम, ता सों ऐसी प्रीति। नेकु जो होंती राम से, तो काहे भव-भीत" इस उक्ति ने ही तुलसीराम को तुलसीदास बना दिया। वे गाँव में ही रहकर लोगों को भगवान राम की कथा सुनाने लगे।

कुछ काल राजापुर रहने के बाद वे पुनः काशी चले गये और वहाँ की जनता को राम-कथा सुनाने लगे। कथा के दौरान उन्हें एक दिन मनुष्य के वेष में एक प्रेत मिला, जिसने उन्हें हनुमानजी का पता बतलाया। हनुमानजी से मिलकर तुलसीदास ने उनसे श्रीरघुनाथजी का दर्शन कराने की प्रार्थना की। हनुमानजी ने कहा - "तुम्हें चित्रकूट में रघुनाथजी का दर्शन होगा।" इस पर तुलसीदासजी चित्रकूट की ओर चल पड़े।

चित्रकूट पहुँचकर उन्होंने रामघाट पर अपना आसन जमाया। वहीं उन्हें श्रीराम का दर्शन मिला। तुलसीदास भगवान श्रीरामजी की उस अद्भुत छवि को निहारकर अपने शरीर की सुध-बुध ही भूल गये। अन्ततोगत्वा भगवान ने स्वयं अपने हाथ से चंदन लेकर तुलसीदासजी के मस्तक पर लगाया और अन्तर्ध्यान हो गये। संवत् 1680 में तुलसीदासजी ने "राम-राम" कहते हुए अपना शरीर का परित्याग किया। रामचरितमानस, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, कवितावली, दोहावली, गीतावली, विनय पत्रिका आदि तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ हैं।

रामचरितमानस : अयोध्या कांड – भरत मिलाप

यहाँ, तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्या कांड से कुछ छंद प्रस्तुत है। पिता के वचन के अनुसार राम चौदह साल वनवास चले गये। राम का अनुज भरत, राम को किसी प्रकार वापस अयोध्या ले आने के उद्देश्य से वन जाते हैं। लेकिन राम अपने लक्ष्य में अटल रहे। इससे भरत का मन दुखता है। तो राम भरत को समझाते हैं। यहाँ अयोध्या कांड के दोहा 304 एवं 305, चौपाइयों के साथ दिए गए हैं।

1. **करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।**
   गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात।। (दोहा)

2. जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती।।
   समउ समाजु लाज गुरजन की। उदासीन हित अनहित मन की।। (चौपाई)

3. तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू।
   मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा।। (चौपाई)

4. तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी।।
   नतरु प्रजा परिजन परिवारू। हमहि सहित सबु होत खुआरू।। (चौपाई)

5. जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू। जग केहि कहहु न होइ कलेसू।
   तस उतपातु तात बिधि कीन्हा। मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा।।(चौपाई)

6. **राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।**
   गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम।। (दोहा)

7. सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुर प्रसाद रखवारा।।
   मातु पिता गुर स्वामि निदेसू। सकल धरम धरनीधर सेसू।। (चौपाई)

8. सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू।
   साधक एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूतिमय बेनी।। (चौपाई)

9. सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी।
   बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई।।(चौपाई)

10. जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा।
    होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए।।(चौपाई)

11. **भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल।**
    सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल।। (दोहा)

भावार्थ

1. हे भाई। कर्म से, वचन से और मन से निर्मल तुम्हारे समान और कोई नहीं है। फिर यहाँ हमारे गुरुजन उपस्थित है। उनके सम्मुख छोटे भाई के गुण वर्णन करना औचित्य नहीं हैं।

2. हे भाई। तुम सूर्यकुल की रीति को, सत्यप्रतिज्ञ पिताजी की कीर्ति और प्रीति को, समय, समाज आदि को जानते हो। अतः इस माहौल में छोटे भाई के गुण किस तरह कहे जा सकते हैं?

3. तुमको सबके कर्मों (कर्तव्यों) - का और अपने तथा मेरे परम हितकारी धर्म का पता है। यद्यपि मुझे तुम्हारा सब प्रकार से भरोसा है, तथापि मैं समय के अनुसार कुछ कहता हूँ। अर्थात् सबकी उपस्थिति में जो उपयुक्त है, वह बात बताते हैं।

4. हे भाई। पिताजी के बिना (उनकी अनुपस्थिति में) हमें केवल गुरुवंश की कृपा ने ही संभाल रखी है; नहीं तो हमारी समेत प्रजा, कुटुम्ब, परिवार सभी बर्बाद हो जाते।

5. यदि बिना समय के (संध्या से पूर्व ही) सूर्य अस्त हो जाय तो कहो जगत् में किसको क्लेश न होगा? हे भाई! उसी प्रकार का उत्पात विधाता ने अब (पिता की असामयिक मृत्यु) किया है। पर मुनि महाराज ने तथा मिथिलेश्वर ने सबको बचा लिया।

6. राज्य के सब कार्य, लज्जा, प्रतिष्ठा, धर्म, पृथ्वी, धन, घर - इन सभी का पालन (रक्षण) गुरुजी का प्रभाव(सामर्थ्य) करेंगे और परिणाम शुभ होगा।

7. गुरुजी का प्रसाद (अनुग्रह)ही घर में और वन में समाज सहित तुम्हारा और हमारा रक्षक है। माता, पिता, गुरु और स्वामी की आज्ञा (का पालन)समस्त धर्मरूपी पृथ्वी को धारण करने में शेषजी के समान है।

8. हे भाई! तुम वही करो और मुझसे भी कराओ तथा सूर्यकुल के रक्षक बनो। साधक के लिए यह एक ही (आज्ञापालन रूपी साधना) संपूर्ण सिद्धियों को देनेवाली, कीर्तिमयी, सद्गतिमयी और ऐश्वर्यमयी त्रिवेणी है।

9. इसे विचारकर भारी संकट सहकर भी प्रजा और परिवार को सुखी रखो। हे भाई! मेरी विपत्ति सभी ने बाँट ली है, परंतु तुमको तो निर्धारित अवधि (चौदह वर्ष) तक बड़ी कठिनाई है। (सबसे अधिक दुख है)।

10. तुमको कोमल जानकर भी मैं कठोर (वियोगी की बात) कह रहा हूँ। हे भाई! बुरे समय में मेरे लिए यह कोई अनुचित बात नहीं है। कुठौर (कुअवसर) में श्रेष्ठ भाई ही सहायक होते हैं। वज्र के आघात भी हाथ से ही रोके जाते हैं।

11. समस्त सुंदर मंगलों का मूल भरतजी और श्रीरामचन्द्रजी का संवाद सुनकर देवलोग रघुकुल की सराहना करके कल्पवृक्ष के फूल बरसाने लगे।

निम्नलिखित छंदों का सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

1. राज काज ....होइहि परिनाम।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से उद्धृत है। भरत राम से मिलने के लिए आते हैं। भरत चाहते हैं कि राम वापस आयें और राज्यभार संभालें। इस संदर्भ में श्रीराम भरत से इस प्रकार कहते हैं।

भावार्थ :- श्रीराम भरत से कहते हैं–राज्य के सब कार्य, लज्जा, प्रतिष्ठा, धर्म, पृथ्वी, धन, घर - इन सभी का पालन (रक्षण) गुरुजी का आशिर्वाद और सामर्थ्य करेंगे और परिणाम शुभ होगा।

2. सहित समाज .... धरनीधर सेसू।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से उद्धृत है। भरत राम से मिलने के लिए आते हैं। भरत चाहते हैं कि राम वापस आयें और राज्यभार संभालें। इस संदर्भ में श्रीराम भरत से इस प्रकार कहते हैं।

भावार्थ :- श्रीराम भरत से कहते हैं–गुरुजी का प्रसाद (अनुग्रह)ही घर में और वन में समाज सहित तुम्हारा और हमारा रक्षक है। माता, पिता, गुरु और स्वामी की आज्ञा (का पालन)समस्त धर्मरूपी पृथ्वी को धारण करने में शेषजी के समान है।

3. सो बिचारि .... बढ़ि कठिनाई।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से ली गयी हैं। भरत राम से मिलने के लिए आते हैं। भरत चाहते हैं कि राम वापस आयें और राज्यभार संभालें। इस संदर्भ में श्रीराम भरत से इस प्रकार कहते हैं।

भावार्थ :- श्रीराम भरत से कहते हैं– मेरी बातों को विचारकर भारी संकट सहकर भी प्रजा और परिवार को सुखी रखो। हे भाई! मेरी विपत्ति सभी ने बाँट ली है, परंतु तुमको तो निर्धारित अवधि (चौदह वर्ष) तक बड़ी कठिनाई है तुम्हें अधिक दुख है।

4. जानि तुम्हहि .... असनिहु के घाए।।

संदर्भ :- ये पंक्तियाँ तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के अयोध्या कांड से उधृत है। भरत राम से मिलने के लिए आते हैं। भरत चाहते हैं कि राम वापस आयें और राज्यभार संभालें। इस संदर्भ में श्रीराम भरत से इस प्रकार कहते हैं।

भावार्थ :- श्रीराम भरत से कहते हैं–तुमको कोमल जानकर भी मैं कठोर (वियोगी) की बात कह रहा हूँ। हे भाई! बुरे समय में मेरे लिए यह कोई अनुचित बात नहीं है। कुठौर (कुअवसर, परेशानी) में श्रेष्ठ भाई ही सहायक होते हैं। वज्र के आघात भी हाथ से ही रोके जाते हैं।

15. अब्दुररहीम खानखाना

अब्दुररहीम ख़ानख़ाना, एक मध्यकालीन कवि, सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, राजनीतिज्ञ, बहुभाषाविद, कलाप्रेमी, एवं विद्‌वान थे। वे भारतीय सामासिक संस्कृति के अनन्य आराधक तथा सभी संप्रदायों के प्रति समादर भाव के सत्यनिष्ठ साधक थे। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न था।

रहीम ने अपनी रचनाओं में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों से उदाहरण दिया है। यह उनकी विशाल हृदय का परिचय देता है।

अब्दुररहीम खानखाना का जन्म (सन् 1556) में लाहौर में हुआ। रहीम की माँ सुल्ताना बेगम थी। पिता बैरामखाँ थे। बैरामखाँ बादशाह अक़बर के अभिभावक थे। रहीम ने बाबा जंबूर की देख-रेख में अध्ययन किया। सन् 1627 में रहीम का देहांत हुआ। रहीम ने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में ही कविता की, जो सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है। उनके काव्य में शृंगार, शांत तथा हास्य रस हैं। दोहा, सोरठा, बरवै, कवित्त और सवैया उनके प्रिय छंद हैं। प्रमुख रचनाएँ - रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा आदि।

रहीम के दोहे - कंठस्थ

1. पावस देखि रहीम मन, कोयल साधे मौन।
   अब दादुर वक्ता भए, हम कहें पूछत कौन।।
2. रहिमन कठिन चितान तैं, चिंता को चित चेत।
   चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत।।
3. निज कर क्रिया रहीम कहि, सिधि भावी के हाथ।
   पाँसा अपने हाथ में; दाँव न अपने हाथ।।
4. अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
   साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम।।
5. ओछो काम बड़े करैं तौ न बड़ाई होय।
   ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहे न कोय।।

1. **शब्दार्थ :-** दादुर - मेंढ़क; पावस - वर्षा; साधे मौन - मौन धारण; वक्ता - भाषण देनेवाला; पूछत - पूछनेवाला।

भावार्थ :- वर्षा ऋतु को देखकर कोयल ने मौन साध लिया है। उसने सोचा, अब मेंढ़क ही बोलने वाला है। हमारी बात कोई नहीं सुनेगा। अभिप्राय यह है कि कुछ अवसर ऐसे आते हैं जब बुद्‌धिमानों को चुप रह जाना पड़ता है, उनका कोई आदर नहीं करता और गुणहीन वाचाल व्यक्तियों का ही बोलबाला रहता है। ऐसे समय में मौन एवं शांत रहना ही उचित है।

2. **शब्दार्थ :-** चितान - चिता (मृत शरीर पर लगानेवाली आग); तें - से (अपादान); चेत - समझो; चिंता को चित चेत - अपने चित को मुक्त करो; दहति - जलाता।

भावार्थ :- कविवर रहीम कहते हैं कि चिता से अधिक कष्टप्रद चिंता होती है। चिंता चित्त (मन) को दग्ध करती रहती है और चिता, निर्जीव (शव) को जलाती है। रहीम चिंता से मुक्त रहने की सलाह देते हैं।

3. **शब्दार्थ :-** निजकर क्रिया - काम करना अपने हाथ में है, सिधि - फल, परिणाम।

भावार्थ :- रहीम जी कहते हैं कि अपने हाथ में तो केवल कर्म करने का अधिकार मात्र है। सिद्धि देना भगवान के अधीन है। चौपड़ आदि खेलते समय पाँसे अपने हाथ में रहते हैं, पर दाँव क्या आएगा यह अपने हाथ में नहीं होता। अर्थात् परिणाम या फल की चिंता किए बिना काम करते जाना है।

4. **शब्दार्थ:-** गाढ़े - कठिन; मुश्किल पड़ी - मुशिकल हो गयी; साँचे - सच्चाई; जग नहीं - संसार में परेशानी होगी; मिलै न राम - भगवान नहीं मिलेंगे।

भावार्थ :- रहीम कहते हैं कि अब बड़ी कठिन परिस्थिति हो गई है यदि सत्य पर चलता हूँ तो जग में जीना कठिन है और असत्य का सहारा लेता हूँ तो राम की प्राप्ति (सद्‌गति) कठिन है।

5. **शब्दार्थ:-** ओछा काम - तुच्छ एवं साधारण कार्य; करैं - करेंगे तो; हनुमंत - हनुमान।

भावार्थ :- यदि छोटे व्यक्ति बड़ा काम करते हैं, तो उनकी कोई तारीफ़ नहीं करते, जैसे हनुमान के पहाड़ उठा कर ले जाने पर भी उन्हें गिरिधर की पदवी से किसीने विभूषित नहीं किया। लेकिन महाविष्णु या कृष्ण ने जब पहाड़ उठाया तो उनको 'गिरिधर' नाम मिला।

दूसरा भाग – गद्य

विषयानुक्रमणिका

पौराणिक कथा :

1. नचिकेता – कठोपनिषद् से 60

बालमनोवैज्ञानिक कथा :

2. तीन बच्चे – सुभद्राकुमारी चौहान 66

व्यंग्यात्मक लेख :

3. बेचारा भला आदमी – हरिशंकर परसाई 76

जन जागरण - लेख :

4. स्वच्छता अभियान – आर. राजवेल 81

सूचना प्रौद्योगिकी लेख :

5. यूनिकोड - डॉ. एस. विजया 86

स्त्री-शिक्षा :

6. प्राचीन भारत की महिलाएँ-शिक्षा के संदर्भ में - महावीरप्रसाद द्विवेदी 92

भावुक कहानी :

7. छोटा जादूगर – जयशंकर प्रसाद 98

संस्मरण :

8. मेरे बचपन के दिन – महादेवी वर्मा 103

पशु मनोविज्ञान - कहानी :

9. दो बैलों की कथा – प्रेमचंद 108

हास्य कहानी :

10. साइकिल की सवारी - सुदर्शन 118

पौराणिक कथा :

1. नचिकेता

- कठोपनिषद् से

सत्य, दान, धर्म न्याय आदि के विषयों में हमारे पौराणिक ग्रन्थ अत्यन्त महत्व रखते हैं। हमारे जीवन से सम्बन्धित अनेक पहलुओं का समाधान इन ग्रन्थों से प्राप्त होता है। प्रस्तुत कहानी 'नचिकेता' भी ऐसी ही एक पहलू को लेकर लिखी गयी एक कहानी है। इस कहानी में सत्य दान धर्म, न्याय, आत्मा का रहस्य आदि बातों पर व्याख्या की गयी है। यह कहानी कठोपनिषद् से ली गयी है। इस कहानी में लेखक ने 'नचिकेता' पात्र पर विशेष ध्यान दिया है। नचिकेता और यमराज के बीच जो संवाद चलता है, वह उच्चकोटि का है। हमारी दृष्टि में नचिकेता एक बालक है। एक बालक होकर आध्यात्मिक विषय के सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट करता है। आशा है कि आज की युवा पीढी भी ऐसे विषयों में जिज्ञासा प्रकट करेगी।'

'यज्ञ समाप्त हुआ। ब्राह्मणों ने वाजश्रवा को आशीर्वाद दिया और वाजश्रवा ने उन्हें दक्षिणा देना प्रारंभ किया। किन्तु यह क्या? यज्ञ की इस अंतिम घडी में वाजश्रवा को किस मोह ने घेर लिया? कहाँ तो उसने निश्चय किया था कि यज्ञ की समाप्ति पर वह अपनी सारी संपत्ति दान कर देगा और कहाँ दक्षिणा में देने लगा ऐस निर्बल और बूढ़ी गायें, जिन्होंने दूध देना ही बंद कर दिया था।

लोग दबी जबान से वाजश्रवा की आलोचना कर रहे हैं।

किंतु सबसे अधिक दुःखी है कोने में बैठा वह किशोर बालक।

कौन है वह?

वह है वाजश्रवा का पुत्र नचिकेता।

अपने पिता की इस कृपणता को देखकर नचिकेता से न रहा गया। खिन्न मन से वह उनके पास गया और बोला, 'पिताजी, दक्षिणा में तो यजमान अपनी प्रिय-से-प्रिय वस्तु देते हैं। आपने तो ऐसी गायें दी हैं, जिनका आपके लिए कोई उपयोग ही नहीं रह गया है। इससे आपको पुण्य नहीं मिलेगा।'

फिर कुछ रुककर बोला, 'पिताजी आपको सबसे प्रिय तो मैं हूँ। आप मुझे ही किसी को दक्षिणा में क्यों नहीं दे देते?'

वाजश्रवा ने नचिकेता की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, पर नचिकेता अपना प्रश्न दुहराता रहा। वह बार-बार पूछता, 'आप मुझे किसको दक्षिणा में दे रहे हैं?'

वाजश्रवा झुंझला उठे। बच्चे के हठ से क्रुद्ध होकर वह बोले, 'जा, मैंने तुझे मृत्यु को दिया।'

नचिकेता विनम्र भाव से बोला, 'पिताजी, आप क्रुद्ध न हों। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा। मुझे मृत्यु के देवता यमराज के पास जाने की अनुमति दीजिए।'

यमराज उस समय यमपुरी में नहीं थे। तीन दिन तक वह किशोर भूखा-प्यासा उनके दरवाज़े पर पड़ा रहा। यमराज लौटे तो एक ब्राह्मण कुमार को अपने घर इस दशा में देखकर बहुत दुःखी हुए। साथ ही उनका ध्यान इस बात पर गए बिना नहीं रहा कि वह बालक अन्य बालकों से बहुत भिन्न था। उसके मुख पर तेज़ था और चेहरे पर दृढ़ता झलक रही थी। जिन यमराज के नाम से सभी मनुष्य थर-थर काँप उठते हैं, उनके सम्मुख बालक नचिकेता बिना किसी भय के, स्वाभिमान के साथ खड़ा था।

यमराज ने नचिकेता का यथोचित सत्कार किया और फिर उसके आने का प्रयोजन पूछा। नचिकेता ने अपने पिता के यज्ञ की सारी कथा सुनाकर आने का कारण बताया। यमराज बोले, 'नचिकेता, तुम्हारी पितृ-भक्ति और दृढ़ निश्चय से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। साथ ही मुझे इस बात का बहुत दुःख है कि तुम्हें तीन दिन मेरे दरवाज़े पर भूखा-प्यासा रहना पड़ा। इसका प्रायश्चित करने के लिए मैं तुम्हें तीन वर देना चाहता हूँ। बोलो, क्या माँगते हो।

नचिकेता बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, "धर्मराज, मुझे पहला वर तो यह दीजिए कि मेरे पिताजी का मुझ पर क्रोध शांत हो जाए, और जब मैं आपके पास से वापस जाऊँ तो वे मुझे पहचान लें और प्यार से बोलें।"

"ऐसा ही होगा", यमराज ने कहा, "तुम्हारे लौटने पर तुम्हारे पिता तुमसे उसी तरह प्यार से बोलेंगे, जैसे पहले बोलते थे, वे अपना सारा क्रोध भूल जाएँगे।"

"अब दूसरा वर माँगो", यमराज बोले। वर माँगने से पहले नचिकेता ने काफ़ी विचार किया। क्या माँगे वह? इस संसार में तो किसी चीज़ की इच्छा थी नहीं उसे। फिर उसे ध्यान आया कि बहुत-से मनुष्य इस संसार से परे स्वर्ग की इच्छा करते हैं। उसके पिता ने भी तो स्वर्ग की अभिलाषा से ही यज्ञ किया था। वह यमराज से बोला, "लोग कहते हैं कि स्वर्गलोक में बहुत सुख मिलता है। न वहाँ भूख-प्यास की चिन्ता है, न बुढ़ापा है, न कोई रोग। वहाँ के निवासी हर समय अलौकिक सुख का ही उपभोग करते रहते हैं। वहाँ आपका पाश भी नहीं पहुँचता और न लोगों को किसी अन्य प्रकार का भय ही लगता है। उस आनंदपूर्ण स्वर्ग को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है, मुझे इसका उपदेश दीजिए।"

स्वर्ग के बारे में नचिकेता की जिज्ञासा जानकर यमराज को कुछ आश्चर्य हुआ। इतना छोटा-सा बालक इस लोक में सुख देनेवाली वस्तुएँ न माँगकर अदृश्य स्वर्ग के बारे में प्रश्न कर रहा है! वचनबद्ध यमराज ने नचिकेता को वे सब विधियाँ समझाईं, जिनसे मनुष्य स्वर्ग प्राप्त कर सकता है। नचिकेता ने जो कुछ सीखा, उसे जैसे का तैसा यमराज को सुना दिया। उसकी तीव्र बुद्धि और स्मरणशक्ति से यमराज बहुत प्रसन्न हुए।

'वत्स, अब तीसरा वर माँगो, यमराज ने कहा।

नचिकेता ने फिर विचार किया। इस पृथ्वी की किसी वस्तु की अभिलाषा उसे थी नहीं। स्वर्ग का रहस्य यमराज ने बता ही दिया था। फिर वह क्या माँगे?

पर संसार में एक वस्तु है कि जो पृथ्वी और स्वर्ग के सुख से भी बढ़कर है, और वह है हमारी अपनी आत्मा। "मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ? मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा? मेरी आत्मा का सच्चा स्वरूप क्या है?" इस तरह के अनेक प्रश्न प्रायः नचिकेता के मन में उठते रहते थे।

वह यमराज से बोला, "भगवन्, कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा रहती है, कुछ कहते हैं कि नहीं रहती। इस विषय अज्ञान अब तक दूर नहीं हुआ। तीसरे वर के रूप में मुझे आत्मा का रहस्य समझाइए।"

धर्मराज को उस अल्पवयस्क बालक से ऐसे गंभीर प्रश्न की आशा नहीं थी। बोले, 'वत्स, यह तुमने कैसा वर माँगा! तुम अभी छोटी अवस्था के बालक हो। आत्मा का रहस्य तो बड़े-बड़े विद्वान् भी नहीं जान सके हैं। यहाँ तक कि देवताओं को भी इसके विषय में संदेह रहता है। तुम मुझसे कोई और वर माँग लो।"

पर नचिकेता अपनी बात पर दृढ़ रहा। बोला, "जब बड़े-बड़े विद्वान् भी आत्मा रहस्य नहीं जान पाए हैं और जब देवताओं को भी इसके विषय में संदेह रहा है तब तो मैं आत्मा का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहूँगा। इस ज्ञान को देनेवाला भी तो आपसे बढ़कर और कोई नहीं मिलेगा। आप मुझे कृपाकर आत्मा के बारे में ही बताइए।"

तब यमराज ने नचिकेता को अनेक प्रलोभन दिए। बोले, "नचिकेता, तुम इस प्रश्न का उत्तर जानने के बजाय कुछ और क्यों नहीं माँग लेते? तुम यथेच्छ भूमि, महल, नौकर-चाकर, सोना-चाँदी और अन्य प्रकार की धन-संपत्ति ले लो। तुम जब तक जीना चाह तब तक जिओ। तुम्हारी अन्य जो कोई भी इच्छा हो, मैं उसे पूरा करने को तैयार हूँ। किन्तु नचिकेता, आत्मा और मृत्यु के रहस्य के बारे में, मत पूछो।"

शांत और गंभीर भाव से नचिकेता बोला "आपने जो इतनी चीजों का वरदान मुझे देने के लिए कहा है, क्या इनमें से किसी से भी मनुष्य को सच्चा सुख मिल सका है? संसार के सुख शरीर और इंद्रियों को क्षीण ही तो करते हैं। धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती। मैं तो जन्म और मृत्यु के पीछे छिपे हुए रहस्य को ही जानना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त और कोई वर मुझे नहीं चाहिए।"

यमराज की परीक्षा में नचिकेता खरा उतरा। संसार का कोई भी प्रलोभन उसे अपने निश्चय से डिगा नहीं सका।

प्रसन्न होकर यमराज ने उसे उपदेश देना आरंभ किया।

"आत्मा न तो कभी पैदा होती है, न मरती है। वह अजर-अमर है और शरीर के नष्ट हो जाने पर भी विद्यमान रहती है।"

"आत्मा का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों के अपने अंदर और अपने आप को सब प्राणियों के अंदर देखता है। सभी के अंदर उसकी आत्मा रहती है, इसलिए न तो वह किसी से राग रखता है, न द्वेष। ऐसा मनुष्य कभी भी अशांत और दुःखी नहीं होता।"

"वत्स, आत्मा का ज्ञान वाद-विवाद या तर्क करने से नहीं प्राप्त होता। यह बहुत गूढ़ विषय है और इसे वे ही समझ सकते हैं, जो सांसारिक आकर्षणों को ठुकराकर साधना के मार्ग पर चलते हैं।"

"अपने शरीर को यदि तुम एक रथ मानो तो इंद्रियाँ उसके घोड़े होंगी। मन उन घोड़ों की लगाम है और बुद्धि सारथि के स्थान पर है। इस रथ पर बैठकर यात्रा करनेवाला यात्री आत्मा है। उसी के लिए यह सारा खेल रचा गया है।"

"जिस प्रकार दुष्ट घोड़े रथ में सवार व्यक्ति को संकट में डाल देते हैं, उसी प्रकार अनियंत्रित इंद्रियाँ मनुष्य को दुर्दशा की ओर ले जाती हैं।"

"ज्ञानी मनुष्य अपनी बुद्धि और मन के द्वारा इंद्रियों को सदा वश में रखता है। ऐसा व्यक्ति ही आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है।"

"तो पुत्र, उठो, जागो और श्रेष्ठ व्यक्तियों के पास जाकर उनसे ज्ञान प्राप्त करो।"

बालक नचिकेता ने यम के उपदेश पर आचरण किया। वह बड़ा होकर विद्वान् और धर्मात्मा ऋषि बना।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

प्रज्वलित - जोर से जलना, भभकना; आयोजित - प्रबंध किया हुआ; पूर्णाहुति - यज्ञ के अंत में दी जानेवाली संपूर्ण आहुति; कृपणता - नीचता, कंजूसी; यथोचित - उचित; अलौकिक - दैविक, लोकोत्तर, असाधारण; वचन बद्ध - वादा निभानेवाला, वचन से बंधा हुआ; जिज्ञासा - जानने की इच्छा; यथेच्छ - इच्छा के अनुसार, पर्याप्त; इंद्रिय - शरीर के ज्ञान और कर्म के साधन-रूप अंग; क्षीण होना - घट जाना; प्रलोभन - लालच; अनियंत्रित - मन माना, बिना रोक-टोक का; आत्म ज्ञान - आत्मा-संबंधी ज्ञान; आचरण - व्यवहार; धर्मात्मा - धर्म के अनुसार चलनेवाला।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **यज्ञ की समाप्ति पर वाजश्रवा का निश्चय क्या था?**

   यज्ञ की समाप्ति पर वाजश्रवा ने सारी संपत्ति दक्षिणा के रूप में देने का निश्चय किया था।

2. **पिता के कृपासागर पर नचिकेता ने क्या कहा?**

   नचिकेता ने कहा, "पिताजी, दक्षिणा में तो यजमान अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु देते हैं। आप तो निर्बल व अप्रिय गायों को देते हैं। इससे आपको पुण्य नहीं मिलेगा।"

3. **वाजश्रवा ने नचिकेता को किसे दान के रूप में दिया? क्यों?**

   वाजश्रवा ने नचिकेता को दान के रूप में यमराज को दिया। नचिकेता ने अपने पिताजी की दानशीलता पर आलोचना की। इससे क्रुद्ध होकर वाजश्रवा ने नचिकेता को दान के रूप में यमराज को दिया। दान में प्रिय वस्तु ही दी जाती है। वाजश्रवा को नचिकेता प्रिय था।

4. **यमराज से नचिकेता के तीन वर क्या-क्या थे?**

   प्रथम वर से नचिकेता ने यमराज से अपने पिताजी का क्रोध शान्त करने के लिए प्रार्थना की। द्वितीय वर से अपने पिताजी को स्वर्ग-प्राप्ति प्रदान करने की विनती की। तृतीय वर से उसने यमराज से आत्मा के रहस्य के बारे में बताने के लिए कहा।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आत्मा का रहस्य क्या है?

यमराज नचिकेता को समझाने लगे कि आत्मा न तो कभी पैदा होती न मरती है। वह अमर है। ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों के अपने अंदर और अपने आपको सब प्राणियों के अंदर देखता है। सभी के अंदर उसकी आत्मा रहती है। इसलिए वह कभी भी अशांत व दुःखी नहीं होता। अपने शरीर को यदि रथ मानें तो इन्द्रियाँ उसके घोडे होंगे। मन लगाम तो बुद्धि सारथी है। रथ पर बैठकर यात्रा करनेवाला यात्री आत्मा है।

2. नचिकेता के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

नचिकेता वाजश्रवा का पुत्र था। वह अन्य बालकों से अलग और विलक्षण था। उसके मुख पर तेज था और चेहरे पर दृढ़ता झलक रही थी। यमराज के सम्मुख वह बिना किसी भय के स्वाभिमान के साथ खड़ा था। स्वर्ग के बारे में नचिकेता की जिज्ञासा जानकर यमराज को भी आश्चर्य हुआ। एक छोटा-सा बालक इस लोक में सुख देनेवाली वस्तुएँ न मांगकर अदृश्य स्वर्ग के बारे में प्रश्न कर रहा था। उसकी तीव्र बुद्धि और स्मरणशक्ति प्रशंसनीय है। उसने यमराज से जो पहले व दूसरे वर माँगे उनसे उसकी पितृ भक्ति प्रकट होती है। पिताजी ने ब्राह्मणों को जब नालायक गाएँ दक्षिणा के रूप में दीं, निडर होकर उनसे प्रश्न किया। तीसरे वर से आत्मा का रहस्य पर प्रश्न किया। इससे उसका ज्ञान परिलक्षित होता है।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

हमारे जीवन से संबंधित अनेक पहलुओं का समाधान पौराणिक ग्रंथों से प्राप्त होता है। इस कहानी में सत्य, दान, धर्म, न्याय, आत्मा का रहस्य आदि बातों पर व्याख्या की गयी है। यह कहानी कठोपनिषद् से ली गयी है।

वाजश्रवा स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ की समाप्ति के उपरांत ब्राह्मणों ने वाजश्रवा को आशीर्वाद दिया। लेकिन वाजश्रवा ब्राह्मणों को निर्बल और बूढ़ी गायें दक्षिणा के रूप में देने लगे। इसे देखकर सब आश्चर्य में पड़ गये। उनका किशोर बालक नचिकेता पिताजी से पूछने लगा कि दक्षिणा में गाएँ देते हैं जो बूढ़ी हो गयी हैं। लेकिन वाजश्रवा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। आगे नचिकेता बोला 'आपको मैं ही सबसे प्रिय हूँ। अतः मुझे ही किसी को दान के रूप में दे दें।' नचिकेता यह वाक्य दुहराता रहा। वाजश्रवा क्रोध से बोले, 'मैं तुझे मृत्यु को दान कर देता हूँ।' तदनुसार नचिकेता सबसे बिदा लेकर यमराज के पास पहुँचा। यमराज उस समय यमपुरी में नहीं थे। वे तीन दिन के बाद आये। तब तक नचिकेता भूखा-प्यासा दरवाजे पर खड़ा रहा। यमराज लौटे तो एक ब्राह्मण कुमार को इस दशा में देखकर बहुत दुःखी हुए।

यमराज ने नचिकेता से उसके आने का कारण पूछा और उसकी इस दशा के प्रायश्चित के रूप में तीन वर देना चाहा। पहले वर से नचिकेता ने अपने पिताजी का क्रोध शांत करने की प्रार्थना की। दूसरे वर से अपने पिताजी की स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा व्यक्त की। तीसरे वर से उसने आत्मा के रहस्य के बारे में बताने की विनती की। यमराज ने कहा, 'तुम अभी छोटे बालक हो। आत्मा का रहस्य तो बड़े-बड़े विद्वान भी नहीं जान सके और देवताओं को भी इसके विषय में संदेह रहता है। तुम और कोई वर मांग लो।' पर नचिकेता ने डटकर कहा कि मैं तो जन्म और मृत्यु

के पीछे छिपे हुए रहस्य को ही जानना चाहता हूँ। फिर यमराज उसे समझाने लगे कि आत्मा न तो कभी पैदा होती न मरती है वह अमर है। ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों के अपने अंदर और अपने आपको सब प्राणियों के अंदर देखता है। सभी के अंदर उसकी आत्मा रहती है। इसलिए वह कभी भी अशांत व दुःखी नहीं होता। अपने शरीर को यदि रथ मानें तो इन्द्रियाँ उसके घोडे होंगे। मन लगाम तो बुद्धि सारथी है। रथ पर बैठकर यात्रा करनेवाला यात्री आत्मा है। इस उत्तर से नचिकेता संतुष्ट हुआ। आगे, नचिकेता विद्वान एवं धर्मात्मा बना।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. पिताजी, दक्षिणा में तो यजमान अपनी प्रिय- से - प्रिय वस्तु देते हैं। आपने तो ऐसी गायें दी हैं, जिनका आपके लिए कोई उपयोग ही नहीं रह गया है। इससे आपको पुण्य नहीं मिलेगा।

यह प्रसंग 'नचिकेता' नामक पाठ से लिया गया है। यह कहानी कठोपनिषद् से ली गयी है।

संदर्भः यह वाक्य नचिकेता ने अपने पिता वाजश्रवा से कहा। यज्ञ की समाप्ति पर पिता ने निर्बल गायों को ब्राह्मणों को दान के रूप में दिया। इसे देखकर नचिकेता ने ऐसा कहा।

व्याख्या : किसी भी यज्ञ की समाप्ति पर दान देने से उस यज्ञ का पूर्ण लाभ कर्ता को मिलता है। दान सच्चे दिल से दिया जाना है। दान के रूप में कोई अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तु देने से, दान का फल कर्ता को नहीं मिलेगा। यहाँ वाजश्रवा ने निर्बल एवं बूढ़ी गायें दीं, जिनसे कोई प्रयोजन नहीं है। यह कार्य वाजश्रवा के यज्ञ और दान की महिमा को भ्रष्ट कर देगा। इसलिए नचिकेता का यह वाक्य अर्थ संगत एवं विवेकपूर्ण है।

2. आत्मा न तो कभी पैदा होती है, न मरती है। वह अजर-अमर है और शरीर के नष्ट हो जाने पर भी विद्यमान रहती है।

यह प्रसंग 'नचिकेता' नामक पाठ से लिया गया है। यह कहानी कठोपनिषद् से ली गयी है।

संदर्भः यह वाक्य यमराज ने नचिकेता से कहा। जब नचिकेता आत्मा के बारे में पूछता है तब यमराज इस प्रकार कहते हैं।

व्याख्या : यमराज ने नचिकेता को समझाया कि आत्मा न तो कभी पैदा होती न मरती है, वह अमर है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा अमर रहती है। सभी प्राणियों के अंदर आत्मा रहती है। इसलिए कभी भी अशांत व दुखी नहीं होना चाहिए।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

बालमनोवैज्ञानिक कथा :

2. तीन बच्चे

–सुभद्राकुमारी चौहान

मेरे बच्चों में से प्रत्येक ने अपने लिए एक-एक फूलों का बगीचा लगाया था। बग़ीचा क्या था, फूलों की छोटी-छोटी क्यारियाँ थीं। एक दिन सबेरे हम लोगों ने देखा कि उन क्यारियों में फूल खिल आये हैं।

बच्चे ही तो ठहरे! हर एक को अपनी-अपनी क्यारी के फूल अधिक सुंदर जान पड़े और इसी बात पर उन लोगों में लड़ाई छिड़ गयी। हर एक का कहना था कि उसकी क्यारी के फूल सबसे सुन्दर हैं।

बात बढ़ते-बढ़ते फूलों से हटकर दूसरे ही क्षेत्र में जा पहुँची। एक हिटलर बना, तो दूसरा मुसोलिनी और तीसरा स्टालिन, और मुझे उन तीनों की माँ बनने का सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया।

संग्राम में विषैले वाक्यों का प्रयोग होते सुनकर मुझे चौके का काम छोड़ बगीचे की ओर जाना पड़ा। मुझे देखते ही सब एक साथ अपने-अपने पक्ष का समर्थन कर, न्याय की दुहाई देने लगे। न्याय का कार्य उतना आसान न था जितना कि एक अदालत के जज का होता है। जज के पथ-प्रदर्शन के लिए कानून होते हैं और नज़ीरें भी। लकीर के फ़कीर से अन्याय ही क्यों न हो जाए, पर उसका मार्ग स्पष्ट रहता है। मेरे सामने न कानून था, न नज़ीर; फिर भी मुझे यह लडाई समाप्त करनी थी, और न्यायपूर्वक!

मैं सोच ही रही थी कि निर्णय के लिए जूरी क्यों न नियत कर दिये जाएँ कि इतने में ही बच्चों के काकाजी आते दीखे। चीखना-चिल्लाना तो दूर, उन्हें किसीके पंचमस्वर के ऊपर बोलना तक पसंद नहीं है। बच्चों को लड़ते देखकर बोले "अच्छा, यह लड़ाई किसलिए है? यदि तुम लोग लड़े-भिड़े तो मैं तुम्हारी माँ को सत्याग्रह न करने दूंगा।"

मेरे हिटलर - मुसोलिनी शाँत हो गये। माँ के बिना जिन्हें स्कूल जाने तक में कष्ट होता है, माँ के बिना जिनका एक भी काम नहीं हो सकता, वही मेरे बच्चे जी से चाहते थे कि मैं सत्याग्रह करूँ और जेल जाऊँ।

अब मैंने पूछा कि कोई शिकायत तो नहीं है, तो सब एक स्वर से बोल उठे "नहीं माँ; सभी क्यारियों के फूल बहुत सुन्दर हैं। तुम सत्याग्रह करो और जल्दी जेल जाओ।

हम सब भीतर जाने को उठ ही रहे थे कि बाहर से गाने की आवाज़ आयी। गाना कोरस में था और स्वर था बच्चों का-सा-

"भगवान, दया करना इतनी,
मेरी नैया को पार लगा देना।"

अब तो हम सभी दर्वाजे की ओर दौड़ पड़े। इसी समय दूसरा पद सुनाई पड़ा-

मैं तो डूबत हूँ मँझधार पड़ीं,
मोरी बैयाँ पकड़के उठा लेना।

बाहर आकर देखा, तीन बच्चे थे– दो लड़कियाँ और एक लड़का। बड़ी लड़की होगी दस बरस की; छोटी आठ और सात के बीच में थी और लड़का - वह बड़ी की गोद में ही था, कोई पाँच साल का। हम लोगों को देखते ही उन्होंने गाना बंद कर दिया। लड़के को गोद से उतारकर बड़ी ने ज़मीन से उसकी माथा टेककर हमें प्रणाम किया। और लड़के ने भी ज़मीन से माथा टेका और तीनों ने चीथड़ों में छिपे हुए पेट को दिखाकर यह बतलाया कि भूखे हैं। बड़ी के हाथ में एक झोली थी और छोटी के हाथ में एक टीन का डिब्बा। उन्होंने एक बार झोली की ओर देखा जो बिलकुल खाली जान पड़ती थी; फिर हमारी ओर याचना की दृष्टि से देखने लगे। मैंने उनसे कहा-हो; तुम गाती तो बहुत अच्छा और भी कोई गाने जानती हो?

बड़ी के बोलने के पहले ही छोटी बोल उठी–'हमें भजन भी आते हैं, बड़ी मालकिन! और आदेश पाये बिना ही वे दोनों गाने लगीं–

कमर कस ले रे बिलोची, तेरे संग चलूंगी।
तेरे संग चलूंगी रे तेरे साथ चलूंगी।
कमर कस ले...
मेरे साथ चलोगी तो तेरी अम्मा लड़ेगी।

हम लोगों की हँसी अब दबाये न दबी। वे सभी शरमाकर चुप हो गये। अम्मा के लड़ने की बात सुनते ही वह फूट पड़ी। उनकी दृष्टि से ऐसा जान पड़ता था कि वे किसी अज्ञात भूल से दुखी हो गये हैं। मैंने हँसी रोककर आश्वासन के स्वर में कहा- 'बहुत अच्छा गाया। मेरी बात सुनते ही वे फिर बैठकर लगे ज़मीन से माथा टेकने। मैंने पूछा- 'तुम्हें क्या चाहिए, पका हुआ खाना या कच्चा?

बड़ी ने फिर जमीन से माथा टेककर कहा- कुछ भी खाने को चाहिए, बड़ी मालकिन! कल से कुछ नहीं खाया है। मैंने बच्चों से कहा कि उन्हें दो-दो पूरियाँ लाकर दे दो, और मैं अन्दर चली गयी।

बच्चों ने उन्हें कितनी-कितनी पूरियाँ दीं। यह तो मैं नहीं कह सकती, पर जब चौके में जाकर देखा तो न डिब्बे में एक पूरी थी और न कटोरे में तरकारी।

(2)

दूसरे दिन हम सुबह की चाय पीकर उठनेवाले थे कि वे बाल गवैये फिर आ पहुँचे। हमें कोमल स्वर में सुनाई पड़ा-

"साँवरिया हमें भूल गयो, सखि, साँवरिया।
बिरिंदाबन की कुंज गलिन में बाज रही बाँसुरिया।"

हमने अपने बच्चों से कहा– "कल तुमने खूब पूरियाँ खिलायी थीं न? अब वे सब फिर आ गये, जैसे उनके लिए रोज ही पूरियाँ धरी हैं!"

"धरी तो हैं माँ" एक साथ ही बच्चों के मुँह से निकला और सबके हाथ एक साथ ही पूरी के डिब्बे की ओर बढ़े।

मैंने उन्हें रोकते हुए कहा–"ठहरो, ठहरो! रोज उन्हें पूरियाँ खिलाओगे तो वे दर्वाज़ा ही न छोड़ेंगे। उन्हें चावल या आटा देकर जाने को कह दो।

एक बच्चा बोल उठा–"बिचारे छोटे-छोटे बच्चे, न जाने उनकी माँ भी है या नहीं। वे भला कहाँ पकाएँगे?

दूसरा ताने के स्वर में बोला- इससे तो यही अच्छा है कि उन्हें कुछ भी न दिया जाए।

सबसे छोटा बोला- "तुम भी माँ होकर ऐसा क्यों कहती हो माँ? सब बिचारों को भी भूख लगी होगी। हमारे हिस्से की ही दे दो।"

लड़की सबमें समझदार थी। उसकी दृष्टि यही चाह रही थी कि माँ का इशारा-भर मिले और पूरियों का डिब्बा ले जाकर वह उन बच्चों को खिला दे।

मैंने उदासीनता से कहा- ' पूरियाँ ही दे दो पर शाम को फिर तुम्हारे लिए नाश्ता बनाना पड़ेगा।"

"माँ हम शाम को नाश्ता नहीं करेंगे," एक स्वर में एक साथ बच्चों ने कहा और हाथ में पूरियाँ लिए हुए दर्वाजे की ओर दौड़ पड़े।

चौके का काम निपटाकर मैं भी बाहर गयी। देखा, वे तीनों बड़े मजे में पूरियाँ खा रहे थे और मेरे बच्चे भी बड़े उत्साह से उन्हें परोस रहे थे। जब वे खा-पीकर उठे तो मैंने कहा। "देखो भाई! तुमने पूरियाँ तो खा लीं। अब बिना गाना सुनाये न जाने पाओगी।" उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक माथा जमीन पर टेककर गाना शुरू किया–

"अब न रहूँगी कान्हा, तोरी नगरिया।
हाट-बाट मोरी गैल न छोड़े,
पनघट पर मोरी फोरे गगरिया।
अब न रहूँगी ......"

गाना गा चुकने के बाद उन्होंने फिर ज़मीन से माथा टेका जैसे हमें आशीर्वाद देकर जाने के लिए उद्यत हों पर मैंने उन्हें रोककर पूछा– 'क्या तुम तीनों भाई-बहन हो?'

'हाँ, बड़ी मालकिन'–बड़ी लड़की ने कहा।

मैंने पूछा– 'तुम्हारा नाम क्या है?' अपना नाम उसने ईठी, छोटी बहन का नाम सीठी और भाई का नाम प्रेमा बतलाया।

'ईठी, सीठी, प्रेमा,' उनका नाम दुहराते हुए मैंने पूछा– क्या तुम्हारे माँ-बाप कोई नहीं है? तुम कल भी अकेले आये थे, आज भी।

छोटी लड़की बड़ी तत्परता से बोल उठी–'माँ भी है और बाप भी है, बड़ी मालकिन, हमारे सब कोई हैं।

कहाँ हैं तुम्हारे माँ-बाप जो तुम्हें इस तरह अकेले फ़िरने को भेज देते हैं? '

'बाप अमरावती में हैं और माँ...

अमरावती में तुम्हारा बाप क्या करता है? 'मेरा छोटा लड़का बीच में ही पूछ बैठा।

'जेल में हैं छोटे बाबू, लड़की ने उत्तर दिया।

जेल में है?' मैंने कुछ अनास्था से पूछा–"जेल क्यों हुई उसे?

लड़की बोली–"वह दारू जो पीता था! और दारू पीकर वह चुप नहीं रहता था दंगा करता था, माँ को मारता था, गाली बकता था और इसलिए तो... (लड़की आँख उठाकर मेरी ओर देखते हुए बोली) बड़ी मालकिन, पुलिसवालों ने उसे पकड़ा, और, सब लोग कहते हैं, पुलिसवालों ने ठीक किया।

और तुम्हारी माँ? वह अब कहाँ हैं?" मैंने पूछा।

लड़की बोली–"माँ? वह भी तो जेल में है। और उसीके साथ हमारा सबसे छोटा भाई भी है। वह तो (अपने भाई की ओर उंगली से दिखाकर लड़की ने कहा) प्रेमा से भी छोटा है। वह रोता नहीं। इससे अच्छा है।"

बेचारे बच्चे! 'मेरे मुँह से निकल पड़ा– "माँ- बाप दोनों जेल में और ये अनाथ सड़क पर भीख माँगते फिरते हैं!"

मैंने फिर पूछा - "तुम्हारी माँ ने क्या किया था।"

लड़की बोली–"हमारी माँ ने पुलिसवाले को मारा था, जिसने हमारे बाप को पकड़ा था उसीको। और फिर वे माँ को भी पकड़ ले गये। बड़े बुरे होते हैं पुलिसवाले। हमारी माँ को भी ले गये। माँ के बिना हमको बुरा लगता है; यह प्रेमा तो रात-दिन रोता ही रहता है।"

मैंने लड़के की ओर देखा– बेचारा छोटा-सा बच्चा, मुश्किल से पाँच बरस का; फटे चीथड़े में लिपटा हुआ; सिर में महीनों से तेल का नाम नहीं; रूखे बिखरे बाल; न जाने कब से नहाया नहीं था, शरीर पर मैल की तह-सी जम गयी थी; गालों पर आँसुओ के निशान बने हुए थे; आँसुओं के साथ-साथ उस स्थान का मैल जो धुल गया था। मुझे उस बच्चे पर बड़ी दया आयी। मैंने पूछा–"तुम लोग जेल में अपनी माँ से मिलने नहीं जातीं?

छोटी बोल उठी–"जाती हैं बड़ी मालकिन। बड़ी ने कहा–'तीन महीने में एक बार मुलाक़ात होती है। एक बार मुलाक़ात करने गये थे; दूसरी बार तीन महीने के बाद जब हम लोग गये थे तब मालूम हुआ कि माँ को यहाँ के जेल में भेज दिया है। तो हम सब काली माँ के साथ यहाँ चले आये। काली माँ भी भीख माँगती है।

"तुम लोग रात को कहाँ रहती हो? सोती कहाँ हो तुम्हें डर नहीं लगता" मैंने पूछा।

बड़ी लड़की ने कहा- 'जेल के पास एक नाला है। हम लोग रात को वहीं पुल के नीचे माँ की बातें करते-करते सो जाते हैं। कभी-कभी काली माँ भी आ जाती है! पर वह रोज़ नहीं आती।

'माँ की सज़ा कितने दिन की है?'

'दो साल की", बड़ी लड़की ने कहा, 'हम रोज़ जेल को देखते हैं। हमारी माँ वहीं तो है। जब माँ छूटेगी, हम उसको साथ लेकर देश जाएँगे।' एक प्रकार की खुशी से बालिका पुलकित हो उठी; अपनी माँ को लेकर जैसे वह सचमुच देश जाने की तैयारी कर रही हो।

मैंने लड़की से पूछा–"तुम नहाती हो कभी?"

संकोच से बड़ी लड़की चुप रही। छोटी ने कहा- 'हमारे पास दूसरे कपड़े नहीं हैं न।

मेरा इशारा पाते ही मेरे बच्चों ने अपने पुराने कपडों में से उनके पहनने के लिए बहुत-से कपड़े ला दिये।

मेरा चित्त उदास हो गया। मैं कमरे में बैठकर कुछ सोचने लगी और वे बच्चे कपड़े लेकर खुशी-खुशी चले गये।

कुछ दूर से गाने की आवाज़ आयी–

"मैं तो डूबत हूँ मँझधार पड़ी,

मोरी बैयाँ पकड़के उठा लेना।"

बहुत-से सुन्दर सुन्दर पद पढ़े, लिखे और सुने थे। पर स्वर और आत्मा का ऐसा संयोग तो कहीं नहीं देखा था, शब्द और वस्तु का ऐसा मेल तो कभी चित्रित नहीं हुआ।

मैं उन्हें बुलाने के लिए झपटी, परन्तु तब तक वे दूर निकल गये।

(3)

इस घटना के दूसरे ही दिन, मैं भी सत्याग्रह करके जेल की अतिथि बनी। मेरे और बच्चों ने तो हँसी-खुशी से बिदाई दी, पर सबसे छोटी - मिनू - बहुत छोटी होने के कारण मुझे छोड़कर घर में न रह सकती थी। अतएव वह मेरे साथ गयी।

उस समय जबलपुर जेल में कोई अन्य राजबंदिनी न थी। अकेली होने के कारण मैं अस्पताल में रखी गयी। मेरी सेवा के लिए दो साधारण क़ैदी स्त्रियाँ रात में रहती थीं। दिन में सब लोग एक साथ रह सकते थे।

कैदी की दुनिया भी एक विचित्र ही वस्तु हैं। यह कौन है? चोर!

यह? यह चरस बेचती थी और इसने अपने नवजात शिशु की हत्या करने की चेष्टा की थी, पर माँ होकर यह हत्या कर सकती थी-इसका मुझे विश्वास न हुआ।

और यह लड़की? यह तो अभी बहुत कम उमर है! इसने अपने पति और सास को जहर दिया था! मैं कांप उठी। विधाता! क्या यह सचमुच स्त्रियाँ हैं? क्या तुम्हारी ही आज्ञा से इनका सृजन हुआ था? किंतु, इसी समय जैसे कोई अंदर से बोल उठा– 'यह तसवीर का एक ही पहलू है, इसकी दूसरी ओर भी देखो! संभव है ये निर्दोष हों; संभव है ये देवियाँ हों।'

मेरी सेवा के लिए जो दो औरतें तैनात थीं, उनमें से एक तो अल्हड़ -सी थी, जिसे कुछ काम-काज न आता था, पर दूसरी समझदार थी। वह प्रौढ़ा थी। उसकी गोद में भी एक बच्चा था। वह बड़ी फ़िक्र से सब काम करती थी। वह अधिकतर चुप रहती थी जैसे सदा मन ही मन कुछ सोचा करती हो। मिनू को तो उसने इस प्रकार हिला था जैसे वह उसकी बच्ची हो। उसका खुद का बच्चा पाँव-पाँव चलता और मिनू उसके साथ होती; दाल दलती तो मिनू उसके साथ और बरतन मलती तो मिनू भी उसके साथ छोटी-छोटी कटोरियाँ और गिलास मलती दीख पड़ती। अंत को बात इतनी बढ़ी कि वह मिनू को अपनी पीठ से बाँधकर झाड़ू देने लगी। उसका नाम था लखिया।

लखिया और मिनू के इस स्नेह-संबंध से लखिया के बच्चे को जो अभाव ज्ञात हुआ उसकी पूर्ति मैं उसे मिनू के फल और मिठाइयाँ दे-देकर करने लगी। वह प्रायः मेरे ही पास खेला करता। फल और मिठाइयाँ खाने से इस बच्चे को और पानी भरने, बरतन मलने तथा बगीचा सींचने से मिनू को थोड़े ही दिनों में स्वास्थ्य का लाभ होता दिखाई पड़ा।

मैं बहुत सोचती थी कि यह लखिया कौन है। वह जेल क्यों आयी? एक दिन अचानक मैंने मेट्रन से पूछा, जिसका उत्तर मिला– 'ओह, यह बड़ी खतरनाक औरत है। इसने पुलिस को मारा है। पुलिस को, पर हमने उसका दिमाग़ ठीक कर दिया है। आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं होती?

अचानक मुझे उन बच्चों का ख्याल आ गया। उनकी माँ भी तो पुलिस को मारने के कारण जेल भेजी गयी थी और उसके साथ भी तो एक छोटा बच्चा था। पूछना मैंने कई बार चाहा, पर लखिया की गंभीर और उदास मुद्रा देखकर हिम्मत मेरी एक बार भी न हुई।

एक दिन रात को खूब पानी बरसा। खूब दहाड़ दहाड़-कर बादल गरजे और कड़क-कड़ककर बिजली चमकी। मुझे अपने बच्चों की याद आ गयी। छोटा लड़का डरा होगा। दूसरे पलंग पर सोने पर भी वह बादलों के गरजते ही मेरे पास आकर सो जाता था। इसके साथ मुझे उन तीनों बच्चों की भी याद आयी जो बिचारे पुल के नीचे सोते थे। कहीं ... आगे सोचने की मेरी हिम्मत न पड़ी। मैंने प्रार्थना की, 'हे ईश्वर, सब माँ के बच्चों को अच्छी तरह रख और सबके बाद मेरे बच्चों की भी रक्षा कर।'

(4)

जेल में मेरे पास अखबार आया करते थे। जेल की सभी कैदी स्त्रियाँ लड़ाई की खबरें सुनने को उत्सुक रहा करती थीं। उन्हें विश्वास था कि एक दिन ऐसा होगा जब जेल के फाटक टूट जाएँगे और अवधि से पहले ही उनका छुटकारा हो जाएगा। मैं भी उन्हें योरप की और भारत के सत्याग्रह की खबरें सुना दिया करती।

उस दिन शाम को अखबार आया और पढ़ते-पढ़ते मेरा जी धक से रह गया। जबलपुर की ख़बर थी–

"कल रात यकायक पानी वरसा और खूब बरसा। जेल के पास के नाले में तीन गरीब बच्चे बह गये। उन तीनों की लाशें मिली हैं। बहुत खोज करने पर भी उनकी शिनाख्त नहीं हो सकी। दो लड़कियाँ हैं और एक लड़का ऐसा सुना गया है कि गाना गाकर भीख माँगा करते थे।"

मेरे घर पर आकर गानेवाले उन तीन बच्चों का चित्र हठात् मेरी आँखों के सामने खिंच गया और ऐसा जान पड़ा जैसे दूर से कोई गा रहा है–

'मैं तो डूबत हूँ मँझधार पड़ी,
मोरी बैयाँ पकड़के उठा लेना।'

अख़बार रखकर मैं आँसू रोकने का प्रयत्न करने लगी अचानक मेरे मुँह से निकल गया–"बेचारे बच्चे!"

लखिया पास ही बैठी मेरे लिए चाय तैयार कर रही थी। उसने पूछा–"क्या ख़बर है, बाई साहब! अरे, उदास क्यों हो गयीं? बच्चों की याद आ रही है?

मैं उसे कुछ उत्तर न दे सकी। वह फिर बोली– "थोड़े ही दिन तो और हैं, बाई साहब। कट ही जाएँगे। फिर बच्चे अपने बाप के साथ तो हैं; फ़िकर क्यों करती हो?"

उसकी ओर देखने की मेरी हिम्मत नहीं थी, पर मुझे ऐसा जान पड़ा जैसे उसने बात ख़तम होते न होते एक गहरी साँस ली और आँखों के आँसू पोंछ लिये। मैंने अपनी सब शक्ति संचित करके उससे पूछा– "लखिया, तेरे और बच्चे हैं या यही एक है?"

आँखों में आँसू और ओंठों पर एक क्षीण मुस्कुराहट के साथ वह बोली, 'एक ही क्यों बाई साहब, (मेरी बच्ची की ओर इशारा करके) यह बिटिया भी तो है?'

मैंने कहा–"ये तो जेल के भीतर। जेल के बाहर कितने हैं?

लखिया एक गहरी साँस लेकर बोली- "जेल के बाहर, बाई साहब! वो तो भगवान के हैं, अपने कैसे कहूँ?'

और इसके बाद वह अखबार की खबर पूछती ही रह गयी, पर मैं उसे कुछ भी न बतला सकी।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

दुहाई - ऊँचे स्वर में पुकारना; अदालत - न्यायालय; कोरस - सम्मिलित आवाज; माथा - मस्तक; गवैया - गायक; बांसुरिया - मुरली की आवाज; टेक्कर - सहारा देना; नगरिया - शहरीय; पनघट - पानी भरने का घाट; दारू - शराब; तैनात - नियुक्त; दहाड़ - गर्जन; मंझदार - नदी के बीच का स्थान।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **लेखिका ने अपने तीन बच्चों के नाम क्या-क्या रखा था?**

   लेखिका ने अपने तीन बच्चों के नाम हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन रखा था।

2. **तीन भिखमंगे बच्चे कौन-कौन थे?**

   तीन भिखमंगे बच्चे ईठी, सीठी और प्रेमा थे।

3. **भिखमंगे बच्चों के बाप क्यों जेल गए?**

   उनके बाप ने दारू पिया। इसलिए पुलिस ने उसको जेल में डाल दिया।

4. **भिखमंगे बच्चों की माँ क्यों जेल गई?**

   भीखमंगे की मां इसलिए जेल गई कि उसने पुलिस को मार दिया।

5. **लेखिका क्यों जेल गई?**

लेखिका ने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और इसलिए जेल गई।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. **लखिया और लेखिका के संबंध के बारे में लिखिए।**

एक बार सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण लेखिका को जेल जाना पड़ा। जेल में लेखिका की सेवा के लिए दो महिलाएँ थीं। उनमें एक प्रौढ़ा थी और उसका नाम लखिया था। यह बहुत ही समझदारी के साथ हर काम मन लगाकर करती थी। इसके अलावा लेखिका की बच्ची को अपने छोटे बच्चे से भी अधिक प्यार से देखभाल करती थी। बाद में लेखिका को पता चलता है कि लखिया उनके घर आनेवाले तीन भिखमंगे बच्चों की माँ है। एक दिन समाचार पत्र से लेखिका को मालुम पड़ता है कि लखिया के बच्चे पानी में बह गये। लेकिन यह बात लखिया को बताने में लेखिका हिचकती थीं।

2. **लेखिका को आखिर बच्चों का समाचार कैसे मिला?**

लेखिका ने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। अतः सरकार ने उसे कैद करके जेल भेजा। जेल में उनकी सेवा में एक प्रौढ़ा नारी भी थी। उसका नाम लखिया था। लेखिका को पता चलता है कि लखिया के बच्चे ही उनके घर में भीख माँगने आते थे। जेल में एक दिन समाचार पत्र द्वारा लेखिका को पता चलता है कि लखिया के तीन बच्चे जो जेल के बाहर पुल के नीचे रहते थे, पानी में बह गये हैं। समाचार पत्र पढ़ते समय लखिया पास बैठी थी। लेकिन लेखिका उसको कुछ नहीं बता सकी।

3. **'तीन बच्चे' कहानी में विकसित बाल-मनोविज्ञान का परिचय दीजिए।**

तीन बच्चे कहानी एक बाल-मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस बात का परिचय हमें लेखिका के बच्चों के व्यवहार से मिलता है। लेखिका के प्रत्येक बच्चे ने एक-एक फूलों का बगीचा लगाया था और हर बच्चे ने अपने बगीचे को उत्कृष्ट बताया; लेकिन बाद में माँ की बात मान लेते हैं। घर के बाहर तीन बच्चे भीख मांगते हुए आये तो लेखिका के तीनों बच्चे उनकी सहायता में आत्मविभोर हो जाते हैं। वे साधारण-सी बात पर आपस में झगड़ते थे लेकिन जब सहायता करने की बात आती तो सब एक होकर सहायता करते हैं। यह बच्चों की प्रवृत्ति है।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

सुभद्रा कुमारी चौहान (16 अगस्त 1904-15 फरवरी 1948) हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। झाँसी की रानी (कविता) उनकी प्रसिद्ध कविता है। राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री हैं। आप स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल गयी। जेल में अपने अनुभवों को अपनी कहानियों में भी व्यक्त किया है।

लेखिका के बच्चों ने घर की क्यारियों में फूलों के पौधे लगाए थे। थोड़े दिन बाद क्यारियों में फूल खिल आए। बच्चे आपस में झगड़ने लगे कि अपनी-अपनी क्यारी के फूल ही सबसे सुंदर हैं। लेखिका ने बच्चों की लड़ाई को न्यायपूर्वक समाप्त किया। इस बीच में बाहर से कुछ बच्चों के गाने की आवाज आई, 'भगवान दया करना इतनी, मेरी नैया को पार लगा देना।' सब बच्चे दरवाजे की ओर दौड़ पड़े। बाहर आकर देखा तो तीन बच्चे थे।

उनके कपड़े फटे-पुराने थे। उन्होंने बताया कि वे भूखे हैं। लेखिका अपने बच्चों से उन्हें दो-दो पूड़ियाँ लाकर देने को कहकर, अंदर चली गईं। बच्चों ने उन्हें भरपेट पूरियाँ खिलाईं।

दूसरे दिन जब वे लोग चाय पी रहे थे, उन बच्चों की टोली फिर आ पहुँची। लेखिका बच्चों के साथ दरवाजे पर पहुँचीं। बातों-बातों में लेखिका को पता चला कि वे तीनों भाई-बहन हैं। उनमें से बड़ी लड़की का नाम 'ईठी', छोटी बहन का नाम 'सीठी' और भाई का नाम 'प्रेमा' था। उनके माँ-बाप जेल में थे। उनकी माँ के साथ उनका एक छोटा भाई भी जेल में था। लेखिका को बड़ा दुख हुआ कि माँ-बाप जेल में और ये अनाथ बच्चे सड़क पर भीख माँगते फिरते हैं।

वे तीनों बच्चे जेल के पास वाले नाले के पुल के नीचे रहते थे। लेखिका के बच्चों ने उनको कपड़े आदि दिये।

लेखिका इस बीच में सत्याग्रह में शामिल होकर, जेल गयीं। उनकी सबसे छोटी बेटी मिनू उनके साथ ही गई। लेखिका की सेवा के लिए दो साधारण कैदी स्त्रियों को लगा दिया गया था। लेखिका की सेवा में तैनात औरतों में से एक प्रौढ़ा थी। उसकी गोद में एक बच्चा था। उस औरत का नाम लखिया था। वह सब काम लगन से करती थी। और लेखिका के बच्चे को भी अपने ही बच्चे जैसे देखभाल करती थी। लेखिका को बाद में पता चला कि पुलिस को मारने के कारण लखिया को जेल भेजा गया है। इस पर लेखिका अंदाजा लगाती हैं कि लखिया उनके घर आनेवाले उन तीन बच्चों की माँ है। लेकिन लेखिका लखिया से कुछ पूछने का साहस न जुटा पाईं।

एक दिन खूब मूसलधार बरसात हुई। अगले दिन समाचार पत्र में ख़बर आयी कि जेल के पास के नाले में तीन गरीब बच्चे बह गए; वे गाकर भीख माँगा करते थे; उनकी लाशें मिलीं।

लेखिका के सामने उन तीनों बच्चों के चित्र खिंच आए। उन्होंने जबरदस्ती अपने आँसू को रोक लिया। लेखिका ने लखिया से उसके बच्चों के बारे में पूछा। लखिया ने लेखिका की बच्ची को अपनी बच्ची कहा। लेखिका ने जेल के बाहर रहनेवाले उनके बच्चों के बारे में पूछा तो लखिया ने कहा "वे तो भगवान के हैं।" इस तरह कहानी समाप्त होती है।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. "हमारे पास दूसरे कपड़े नहीं है न।"

प्रसंग :- श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कहानी 'तीन बच्चे' से यह पंक्ति दी गयी है। सुभद्राकुमारी चौहान हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी और लेखिका हैं। 'तीन बच्चे' एक बालमनोवैज्ञानिक कहानी है। लेखिका के तीन बच्चे थे। उनके घर के द्वार पर रोज़ तीन बच्चे, गाना गाते हुए भीख मांगने आते हैं। लेखिका जब उनके बारे में पूछताछ करतीं तो बच्चों ने यह वाक्य कहा।

व्याख्या :- बच्चों को देखकर लेखिका को लगता है कि वे बहुत दिनों से नहाए तक नहीं है। इस संबंध में जब लेखिका ने बच्चों से पूछा तो बच्चों ने कहा कि उनके पास बदलने के लिए दूसरे कपड़े नहीं हैं। इसलिए वे बहुत दिनों से नहीं नहाये।

यहाँ लेखिका गरीब बच्चों की हृदयस्पर्शी हालत की ओर इशारा करती हैं।

2. पर माँ होकर यह हत्या कर सकती थी–इसका मुझे विश्वास न हुआ।

प्रसंग :- श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कहानी 'तीन बच्चे' से यह वाक्य दिया गया है। सुभद्राकुमारी चौहान हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी और लेखिका हैं। एक बार सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने के कारण, सरकार ने उनको कैद करके जेल भेज दिया। जेल में लेखिका ने अन्य कैदी स्त्रियों से बात की। कैद होकर जेल आनेवाली हर एक नारी के पीछे एक कहानी रहती है। इसके बारे में लेखिका यहां बताती हैं।

व्याख्या :- लेखिका को पता चलता है कि एक स्त्री ने अपने नवजात शिशु की हत्या करने की चेष्टा की थी। इसलिए वह कैद हुई और बंदिनी बनी। यह सुनकर लेखिका सोचती है कि एक माँ अपने बच्चे की हत्या क्यों और कैसे कर सकती है?

3. जेल के बाहर, भाई साहब! वो तो भगवान के हैं, अपने कैसे कहूँ?

प्रसंग :- श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कहानी 'तीन बच्चे' से यह पंक्ति दी गयी है। लेखिका ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इसलिए सरकार ने उन्हें जेल भेज दिया। जेल में लेखिका की सेवा करने के लिए दो स्त्रियाँ तैनात हुई। उनमें एक प्रौढ़ा थीं। उसका नाम लखिया था। लेखिका को बाद में पता चलता है कि लखिया के तीन बच्चे ही उनके घर आकर भीख माँगते थे। वे बच्चे जेल के पासवाले पुल के नीचे रहते थे।

व्याख्या :- एक दिन खूब बारिश हुई। अगले दिन समाचार पत्र पढ़ने के बाद लेखिका को पता चलता है कि लखिया के तीन बच्चे पानी में बह गये। लेकिन लेखिका ने इस संबंध में लखिया से नहीं कहा। बातों-बातों में लखिया से उसके बच्चों के बारे में पूछा कि जो जेल के बाहर रहते हैं, वे कैसे हैं? तो लखिया ने उत्तर दिया कि वो तो भगवान के हैं, अपने कैसे कहूँ?

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

व्यंग्यात्मक लेखः

3. बेचारा भला आदमी

– हरिशंकर परसाई

मैंने सुना कि एक दुकानदार ने भले आदमी के रूप में मेरा उदाहरण दिया। मैं उदाहरण बनने से बहुत डरता हूँ। मार्कट्वेन ने कहा है कि लोग जिस चीज़ से सबसे अधिक चिढ़ते हैं, वह है अच्छा उदाहरण। अच्छा उदाहरण एक बार बन जाने पर आदमी अच्छाई का गुलाम बन जाता है। मेरे एक मित्र को लोगों ने जवानी में ही त्याग का उदाहरण बनाकर उनकी जिन्दगी बरबाद कर दी। मैं अच्छेपन का उदाहरण बनाकर उनकी जिन्दगी बरबाद कर दी। मैं अच्छेपन का उदाहरण बनकर नहीं रहना चाहता। कोई बुराई करता है, तो मुझे संतोष होता है कि कभी भूले-भटके उस आदमी का भला मेरे हाथों हो गया होगा। तारीफ़ से डर लगता है। कोई मुँह पर तारीफ करे तो उससे पूछ लेता हूँ कि बता भाई! मैं कौन-सी बेवकूफी करूँ! नाली में कूद पड़ूं? धूल में लोटूँ? तारीफ करके आदमी से कोई भी बेवकूफी कराई जा सकती है। पीठ पीछे कोई किसी की तारीफ़ करेगा, इस बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा। कुछ मित्रों के बारे में एक बार एक व्यक्ति ने हमसे आश्चर्य से कहा, ये लोग तो ऐसे दोस्त हैं कि पीठ पीछे भी एक दूसरे की तारीफ़ करते हैं। हम लोगों ने बाद में इस पर बहुत विचार किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि हम लोग मित्रता के आधार की अवहेलना कर रहे हैं – मित्र तो वही होता है, जो मुंह पर तारीफ करे; पीठ पीछे तारीफ़ करने वाला भी कोई मित्र है?

दूकानदार मेरा मित्र नहीं है। उसने मुझे भला आदमी कहा, तो मैं चिन्तित हो गया। उसकी दूकान से मैं उधार सामान लेता हूँ और जितना बिल वह बता देता है, बिना हिसाब देखे दे देता हूँ। हिसाब न देखना कोई मेरा देवत्व नहीं है, आलस्य है। कई बार बुराई भलाई के रूप में प्रचार पाती है। एक धनवान लेखक के बारे में यह बुराई फैली कि वह पैसे देकर दूसरों से पुस्तकें लिखवाता है। मैंने लोगों को समझाया कि अगर तुम उनकी पुस्तकें पढ़ो, तो तुम्हें विश्वास हो जाएगा कि वे किताबें उन्होंने ही लिखी हैं। इतना रद्दी उनके सिवाय हिन्दी में और कौन लिख सकता है? घटिया लिखना उनकी ईमानदारी का सबूत हो गया। कई दूकानदारों की मीठी बातें जो व्यापारिक चतुरता है, मानवीयता के नाम से बाजार में चलती हैं। मेरा आलस्य भलमनसाहत के रूप में चलता है। दूकानदार से कोई ग्राहक हिसाब को लेकर झगड़ रहा था। दूकानदार ने कहा, आप तो बड़ी झिकझिक करते हैं। परसाई जी बेचारे भले आदमी हैं। जो हिसाब बता दो, बिना देखे दे जाते हैं। मुझे देखकर ग्राहक बिलकुल प्रभावित नहीं हुआ। उसने मुझे भला तो नहीं पर बेवकूफ़ ज़रूर समझा होगा।

मैं भी चिन्तित हो गया। मैं कोई खास भला नहीं हूँ। देना भूल जाता हूँ, लेना नहीं भूलता। मैं भला हूँ, क्योंकि आलसी हूँ। बुरा होने के लिए हाथ, पाँव और मन को हिलाना पड़ता है। अगले महीने मैंने बुरा आदमी बनने की कोशिश की। मैं घर में हिसाब रखता गया। महीने के अंत में जब उससे हिसाब पूछा तो पाया कि उसने दस रुपये

बढ़ा लिए हैं। काफी महँगा प्रमाणपत्र दे रहा था वह मुझे। मैंने दस रुपये भेजकर विश्वविद्यालय से एम.ए. का प्रमाणपत्र ले लिया था जो मुझे जिन्दगी-भर शिक्षित बताने के लिए काफी है। दूकानदार का प्रमाणपत्र जिसे मैं पढ़कर टाँग भी नहीं सकता, 10 रुपये में सिर्फ़ एक महीने के लिए मिलता है। मुझे हर साल 120 रुपये इसलिए देने पड़ते हैं कि एक छोटे से शहर का एक सामान्य दूकानदार मुझे भला आदमी कहे। अगर मैं उससे शेष जिन्दगी यानी लगभग 30 साल सामान खरीदता रहूँ तो लगभग साढ़े तीन हज़ार रुपये मैं सिर्फ़ इसको दूंगा कि उसने मुझे भला आदमी कहा। सारा बाजार मुझे भला कहे, इसके लिए तो पूरी आमदनी बाँट देनी पड़ेगी। मुझे यह मंजूर नहीं। मैं हिसाब देखने लगा। भले आदमी के उदाहरण के लिए किसी और का उपयोग होगा।

लेकिन तब से मैं भले आदमियों के बारे में छानबीन कर रहा हूँ। एक मकान मालिक कहता था कि पांडेजी बेचारे भले आदमी हैं! पांडेजी उसके मकान में किराए पर रहते हैं। एक बरसात के दिन मैं पांडेजी के घर गया। देखा कि सारे घर में पानी टपक रहा है। उनसे कहा कि मकान मालिक से मरम्मत के लिए क्यों नहीं कहते। पांडेजी ने लापरवाही से कहा, ऊँह, 10-15 दिन ही तो पानी के हैं। निकल जाएँगे। मकान मालिक कहता है कि पांडेजी बेचारे भले आदमी हैं। एक सज्जन अधिकारी कहते हैं कि राजेन्द्र मास्टर बेचारा भला आदमी है। जाँच करने पर मालूम हुआ कि मास्टरजी उनके बेटे को मुफ्त में पढ़ा जाते थे।

मैं देखता हूँ कि हर इस तरह का प्रशंसक भला के पहले बेचारा ज़रूर लगाता है – बेचारा भला आदमी है। यह अकारण नहीं है। हमारी पूरी विचार-प्रक्रिया इन दो शब्दों के साथ चलने में झलकती है। हम भला उसी को कहेंगे जो बेचारा न बना दें, जब तक उसे भला नहीं कहेंगे। क्यों? इसके दो कारण हैं। – पहला तो यह कि जो बेचारा नहीं है, वह हमें अपने लिए चुनौती देने लगता है। उसे हम भला क्यों कहें? दूसरा कारण यह है कि जो बेचारा है, उसे हम खा सकते हैं, लूट सकते हैं – उसका शोषण कर सकते हैं। किसी को भला कहना उसकी प्रशंसा नहीं है। उसपर दया प्रकट करना है। जो हर काम के लिए कुछ न कुछ दे देता है, वह बेचारा भला आदमी है। जो रिक्शावाला कम पैसे ले लेता है, वह बेचारा भला आदमी है। जो लेखक बिना पैसे लिए अखबार के लिए लिख देता है, उसे संपादक बेचारा भला आदमी कहते हैं। टिकट कलेक्टर बेचारा भला आदमी है, क्योंकि वह बिना टिकट जाने देता है। अपनी व्यवस्था ने बहुत सोच-समझकर यह मुहावरा तैयार किया है।

पिछले दस सालों से एक व्यक्ति के बारे में सुन रहा हूँ कि वह बेचारा भला आदमी है, लंगोटी तक उतारकर दे देता है। उस भले आदमी ने कोट उतारकर दे दिया और लंगोटी उतारकर दे ही रहा था कि सावधान हो गया। उसने फिर पूरे कपड़े पहन लिये। अब कोई उसे भला आदमी नहीं कहता, क्योंकि वह बेचारा नहीं रहा।

एक पाठ्य पुस्तक छापने और बेचनेवाला मुझे बेचारा भला आदमी कहता था– मैं उसे पुस्तकें लिख देता, और जो वह देता ले लेता। उसके बाप-दादे पीढ़ियों से ऐसे बेवकूफ़ की तलाश में थे। अब आकर मैं मिला था। यह मेरा यश फैलाता था– परसाई बेचारा भला आदमी है। एक बार मैं बीमार पड़ा। तभी मैं उसके लिए पुस्तक लिख

रहा था जो, आधी दे दी थी, और आधी की पांडुलिपि मेरे पास थी। वह मेरी तबीयत पूछने आया। बीमारी के बारे में पूछा, लेखक के संघर्ष के प्रति सहानुभूति बतलाई, संसार की असारता पर अपना मत प्रकट किया और अंत में सिद्ध किया कि लिखना तो तपस्या है। उसने मुझे वह भी समझाया कि सच्चा लेखक तो भौतिक उपलब्धियों से मुँह फेर लेता है, वह तो त्यागी होता है। चोर ही सबसे अधिक इस बात का प्रचार करते हैं कि इस महान देश में पहले लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे। मैं उसके प्रवचन को सुनता रहा। जब उसने बाकी पांडुलिपि मांगी तो मैंने कहा कि मुझे पैसों की जरूरत है। आप शाम तक भेज दीजिए। मिनट पहले ही उस ज्ञानी का चेहरा एकदम गिर गया, उसकी आँखों में क्लेश आ गया और वह ऐसा कातर हो गया जैसे मैंने उससे कह दिया हो कि भाई, तुम यहाँ बैठे हो, घर में तुम्हारे पिताजी की मृत्यु हो गई है। इसके बाद उसने मुझे भला आदमी नहीं कहा। कहता था– मैं तो समझता था कि वह भला आदमी है। पर मैं तो उसकी तबीयत देखने गया और वह पैसे मांगने लगा।

मुझे इस बेचारे भले आदमी से डर लगता है। अगर देखता हूँ कि मेरे वचन में ऐसा आदमी बैठा है, जो मुझे बेचारा भला आदमी कहता है, तो जेब संभाल लेता हूँ। क्या पता वह जेब काट ले।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

चिढ़ना - गुस्सा करना; भलमनसाहत - सज्जानता; झिक-झिक करना - हिचकना; छान-बीन - जांच; क्लेश - दुख।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. आदमी अच्छाई का गुलाम कब बन जाते हैं?

अच्छा उदाहरण एक बार बन जाने पर आदमी अच्छाई का गुलाम बन जाता है।

2. लेखक के अनुसार सच्चा मित्र कौन है?

लेखक के अनुसार सच्चा मित्र वही होता है जो पीठ पर प्रशंसा न करके मुंह पर तारीफ करता है।

3. दूकानदार ने ग्राहक को क्यों बेवकूफ़ समझा?

दूकानदार ने ग्राहक को इसलिए बेवकूफ़ कहा क्योंकि परसाई जी इतने बेचारे भले आदमी है कि वे बिना हिसाब देखकर बिल चुका देते हैं।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. बेचारा भला आदमी कौन बन जाते हैं?

अपने मकान मालिक से मरम्मत के लिए माँग न करनेवाले किरायादार, मुफ़्त में पढ़ानेवाले मास्टर, कम

पैसे लेनेवाले रिक्शावाला, बिना पैसे के अख़्बारी लेख प्रदान करनेवाले रचनाकार और बिना टिकट जाने की अनुमति देनेवाले टिकट कलक्टर– ये सब तो बेचारा भला आदमी हैं।

2. प्रकाशक का विचार लेखक के बारे में कैसे बदला?

प्रकाशक के अनुरोध पर लेखक पुस्तक लिख देते थे और वह जो देते उसे बिना किसी वाद-विवाद ले लेते थे। एक पुस्तक लिखते समय लेखक की तबीयत खराब हो गयी थी। इसके कारण उस पुस्तक की कुछ पांडुलिपियाँ लेखक के पास रह गयीं। प्रकाशक ने इसके लिए लेखक से माँगने आते समय उनकी प्रशंसा की। तब लेखक ने कहा कि उन्हें पैसों की जरूरत है। तुरंत प्रकाशक का विचार लेखक के बारे में बदल गया।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

मार्क ट्वेन ने कहा कि लोग जिस चीज़ से सबसे अधिक चिढ़ते हैं, वह है अच्छा उदाहरण। अच्छा उदाहरण एक बार बन जाने पर आदमी अच्छाई का गुलाम बन जाता है। उनके इस कथन को साबित करते हुए हरिशंकर परसाई ने 'बेचारा भला आदमी' नाम पर एक व्यंग्य लेख प्रस्तुत किया है। लेखक कहते हैं कि उनके एक मित्र ने ऐसे त्याग एवं भले आदमी का नमूना बनकर अपनी जिंदगी बरबाद कर ली है। तारीफ करके कोई भी बेवकूफी कराई जा सकती है। ऐसा बदमाशी हमारे मित्रों के बीच में अकसर हो ही जाती है। मुँह पर तारीफ़ करनेवालों को लोग पसंद करते हैं, पीठ के पीछे होनेवाली बात को कोई परवाह नहीं करता।

परसाई जी अपने आलसीपन के कारण हिसाब-किताब न देखते थे और दूकानदार ने जो बिल दिया उसे चुकाते थे। इससे दूकानदार की नज़र में परसाई जी भले आदमी बन गये। कई बार ऐसी बुराई भलाई के रूप में प्रसार पाती है। फलतः कई दूकानदारों की मीठी बातें जो व्यापारिक चालाकी है मानवीयता का रूप धारण भी कर लेती है। लेखक कहते हैं कि बुरा होने के लिए कुछ न कुछ शारीरिक चेष्टाओं की जरूरत है। जब परसाई जी अपने दूकानदार से एक महीने की हिसाब देखने लगे तो दूकानदार की नज़र में वे बुरे हो गये।

मकान मालिक से मरम्मत के लिए माँग न करनेवाला किरायादार, मुफ़्त में पढ़ाने वाले मास्टर, आदि बेचारे भले आदमी हैं। इस तरह की प्रशंसा में भला के आगे 'बेचारा' शब्द जरूर लगाया जाता है। इसका कारण यह है कि इस संसार में किसी भी बेचारे को खा सकते हैं, लूट सकते हैं और शोषण भी कर सकते हैं। हमें यह महसूस करना है कि 'भला' शब्द प्रशंसा सूचक नहीं बल्कि एक बेचारे पर प्रकट किए जानेवाली दया की भावना मात्र है। इसी क्रम में कम पैसे लेनेवाले रिक्शावाला, बिना पैसे के अख़्बारी लेख प्रदान करनेवाले रचनाकार, बिना टिकट जाने की अनुमति देनेवाले टिकट कलेक्टर–ये सब तो बेचारा भला आदमी हैं।

अत : बेचारा भला आदमी रात दिन अपने परिवार व समाज को अपनी बहुमूल्य सेवा प्रदान कर सकते हैं पर इसके बदले में वही परिवार और समाज उन्हें सिर्फ़ 'बेचारा भला आदमी' का खिताब ही दे सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सिर्फ सेवा करने का अधिकार है, पर बदले में कुछ लेने के अधिकार से वे हमेशा वंचित ही रहते हैं।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. **जो बेचारा है उसे हम खा सकते हैं, लूट सकते हैं–उसका शोषण कर सकते हैं। किसी को भला कहना उसकी प्रशंसा नहीं है।**

   यह कथन 'बेचारा भला आदमी' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस निबंध का लेखक हरिशंकर परसाई है।

   लेखक खुद यह वाक्य कहता है। लेखक का कहना है कि संसार में जो भी व्यक्ति बिना किसी अपेक्षा के काम करते हैं वे बेचारे हैं। कारण है कि समाज में ऐसे बेचारों को खा सकते हैं, लूट सकते हैं और उनको दबा सकते हैं। मतलब है कि भला शब्द जो बेचारे शब्द के आगे प्रयुक्त किया जाता है, वह प्रशंसा सूचक नहीं बल्कि एक बेचारे पर प्रकट की जानेवाली दया की भावना ही है।

2. **चोर ही सबसे अधिक इस बात को प्रचार करते हैं कि इस महान देश में पहले लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे।**

   यह कथन 'बेचारा भला आदमी' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस निबंध का लेखक हरिशंकर परसाई है। इस लेख में 'बेचारा व भला आदमी' शब्दों का अर्थ व्यंग्यात्मक ढंग से समझाते हैं।

   यह वाक्य प्रकाशक लेखक से कहते हैं। लेखक अपने अनुभव के बारे में यहाँ प्रकट करते हैं। एक प्रकाशक लेखक से किसी पुस्तक की शेष पाण्डुलिपि माँगने आये। बातों-बातों में प्रकाशक लेखक से कहते हैं कि सच्चा लेखक भौतिक उपलब्धियों से मुँह फेरनेवाले त्यागी होते हैं और चोर लोग ही अधिक प्रचार करते हैं कि देश में पहले लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे। यह सुनकर लेखक को गुस्सा आता है; क्योंकि प्रकाशक से उनके लेखों के लिए पारिश्रमिक राशि मिलनी है।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जन जागरण - लेख :

4. स्वच्छता अभियान

- आर. राजवेल

भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि में तीन तत्व हैं - ईश्वर, जीव और प्रकृति। पर्यावरण प्रकृति का ही अंश है। इस धरती में मनुष्य के अलावा करोड़ों जीवराशियाँ हैं। सभी जीवराशियाँ पर्यावरण पर निर्भर रहती हैं और वे प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखते हुए आगे बढ़ती हैं - लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति से होड़ लगाने के प्रयास में प्रकृति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा देता है। अतः प्रकृति में संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार को एक अभियान शुरू करना पड़ा।

परिचयः

'स्वच्छता अभियान' आधिकारिक रूप में सन् 1999 से चल रहा है। पहले इसका नाम 'ग्रामीण स्वच्छता अभियान' था। लेकिन 1 अप्रैल, 2009 के दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इस योजना में परिवर्तन करके, इसका नाम 'निर्मल भारत अभियान' रखा और बाद में सरकार ने इसका संशोधन करके 'पूर्ण स्वच्छता अभियान' कर दिया था। 24 सितंबर, 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की मंजूरी दी।

शुरुआतः

स्वच्छता अभियान का उदघाटन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्तूबर, 2014 को महात्मा गांधीजी की 145 वीं जयंती के सुअवसर पर किया था। गांधीजी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के अन्य कई देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ और निर्मल दिखाई दें। इस बात को ध्यान में रखकर प्रधान मंत्री जी ने गाँधी जयंती के अवसर पर इस अभियान की शुरुआत दिल्ली के राजघाट से की थी।

उद्देश्यः

संपूर्ण देश साफ सुथरा हो। लोगों को बाहर खुले में शौच करने से रोका जाएँ; इससे बीमारियाँ फैलने से रोक सकते हैं। बच्चों को बीमारियों से बचा सकते हैं। भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घरों में शौचालय का निर्माण करवाए जाएँ। शहर और गाँव की प्रत्येक सड़क, गली और मोहल्ले साफ-सुथरा हों। हर एक गली में कम से कम एक कूड़ेदान आवश्यक रूप से लगाये जाएँ। 2019 तक सभी घरों में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करके गाँव में पाइपलाइन लगवाना है। इससे स्वच्छता बनी रहेगी।

आवश्यकताः

कूड़ा करकट और गंदगी के कारण विदेशी लोग हमारे देश आने के लिए हिचकते हैं। इससे हमारे देश को आर्थिक नुकसान होता है। पृथ्वी भी प्रदूषित होती जा रही है। नगर निगम के कचरे का पुनःचक्रण करने का प्रबंध करना, सुरक्षित रूप से उसका निपटान करना, वैज्ञानिक तरीके से नल प्रबंधन को लागू करना, भारत को स्वच्छ

और हरियालीयुक्त बनाना, ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन यापन की गुणवत्ता में सुधार लाना आदि स्वच्छता अभियान की प्रमुख आवश्यकताएँ हैं।

प्रदूषण का कारण :

लोगों की असावधानी ही पर्यावरण-प्रदूषण का कारण है। अपने घर की स्वच्छता जितनी जरूरी है उतनी ही हमारी भूमि की स्वच्छता भी जरूरी है। प्रकृति को प्रदूषित करके मनुष्य ज़हरीले वातावरण को फैला रहा है। इसके कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित प्रकार हैं–

शिक्षा के अभाव के कारण अनेक लोग अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषित करते हैं। वे यह महसूस नहीं करते हैं कि वातावरण का प्रदूषण करते समय वे खुद का भी नुकसान कर रहे हैं।

अक़सर लोग यह कहते हैं कि थोड़ा-सा कचरा फैलाने से देश गंदा न हो जाएगा। कहा जाता है, "एक से एक मिले तो राई बन सकती है परबत", थोड़े-थोड़े भी जब इकट्ठे हो जाते हैं तब बहुत अधिक हो जाते हैं। पहले मनुष्य को इस मानसिकता से बाहर आना होगा।

गाँवों में लोग शौचकर्म के लिए खेतों में जाते हैं या रेल की पटरियों के पास जाते हैं। इससे हर तरफ़ गंदगी का माहौल फैल जाता है। एक तो उर्वर भूमि का नाश हो रहा है और दूसरी ओर बीमारियाँ फैल रही हैं।

अधिक जनसंख्या के कारण संसाधनों का उपयोग बढ़ रहा है। कचरा और गंदगी भी अधिक होती जा रही हैं और इनकी सफ़ाई करने के लिए हमें अधिक खर्च करना पड़ता है।

छोटे-मोटे उद्योग धंधों को चलानेवाले लोग अपशिष्ट पदार्थ को पास ही बह रही नदी नालों में बहा देते हैं, जिससे पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है; पेय जल की कमी होती है। जल प्रदूषण के साथ-साथ मृदा (मिट्टी) का प्रदूषण भी बढ़ता है, जीवराशियों का अंत हो जाता है, संतुलन बिगड़ जाता है।

राज्य सरकार और केंद्र सरकार के शहरी विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, गैर सरकारी संगठन, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम व निगम आदि मिलकर देश को सुरक्षित रखने के लिए अभियान चला रहे हैं। इसमें देश के हर नागरिक को शामिल होना चाहिए।

उपाय या निवारण:

जब तक लोग खुद जागरूक नहीं होंगे तब तक हमारे देश में साफ़-सफ़ाई और स्वच्छ वातावरण बनाए रखना आसान नहीं है। अतः हमें कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए। विशेष रूप से सरकार को इस दिशा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। जिससे स्वच्छता को हर हालत में बनाए रख सकें।

देश के हर एक घर में शौचालय बनवाने होंगे। सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाने होंगे। लोगों में साफ-सफ़ाई और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलानी होगी। जगह-जगह कूड़ेदान लगाने की व्यवस्था होनी चाहिए। लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ़-सफ़ाई के संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचाना होगा।

लोगों को अवगत कराना है कि गंदगी फैलाने से पूरे वातावरण को कितना नुकसान पहुँचता है। बढ़ती हुई जनसंख्या को कम करना होगा। कचरे के निस्तारण की सही विधि का पता लगाकर उसको अमल में लाना होगा। अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति से खिलवाड़ करनेवालों में जागरूकता फैलानी होगी। क्योंकि उनके स्वार्थ के कारण पूरा वातावरण प्रदूषित हो रहा है और प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। इससे सुनामी, बाढ़, अकाल, प्लेग, कोरोना जैसी महामारियाँ फैलती हैं।

भारत सरकार जनता में जागरूकता लाने के लिए 'नमामी गंगे', 'पर्यावरण संरक्षण इकोनामिक्स' जैसे अनेक कार्यक्रम चला रही हैं। हमें यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि यह धरती हमारी माँ है। इस धरती को आनेवाली पीढ़ी के लिए स्वच्छ रखना और उन्हें इसे स्वच्छपूर्ण सुपुर्द करना हमारा कर्तव्य है।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

स्वच्छता - सफ़ाई; अभियान - मिशन, मोर्चा, जनप्रदर्शन; पर्यावरण - वायु मंडल, वातावरण; तालमेल - ठीक तरह संयोग होना; संतुलन - बराबरी; प्रदूषित होना - वायु, जल, मिट्टी आदि का अवांछित द्रव्यों से दूषित होना; जहरीला - विषैला; उर्वर भूमि - भूमि जिसमें फसलें अच्छी तरह उपजती हों; गुणवत्ता - उत्कृष्ट गुण; माहौल - वातावरण, पर्यावरण; संसाधन - साधन सामग्री; अपशिष्ट पदार्थ - रद्दी, हानिकारक, अवांछित; कचरे के निस्तारण - कचरे चीज़ों का पुनः चक्रण (रीसाइक्लिग); अस्तित्व - मौजूदगी, उपस्थिति; निर्भर - अवलंबित, आश्रय में रहना; आधिकारिक - साधिकार (authorised); पुनर्गठन - दुबारा या फिर से गठन करना; योजना - कोई काम का विचार, भावी कार्य पद्धति की पूर्व कल्पना।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **महात्मा गाँधी का सपना क्या था?**

   महात्मा गाँधी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के कई देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ हो।

2. **पहले पहल किसने और कब स्वच्छता अभियान शुरु किया?**

   1 अप्रैल 2001 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 'निर्मल भारत अभियान' नाम से स्वच्छता अभियान शुरु किया।

3. **स्वच्छता अभियान में कौन-कौन से मंत्रालय लगे हैं?**

   केंद्र सरकार का शहरी विकास मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय, गैर सरकारी संगठन, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम व निगम आदि मिलकर इस अभियान को चला रहे हैं।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कचरा बढ़ जाने के क्या-क्या कारण हैं?

अधिक जनसंख्या होने के कारण संसाधनों का उपयोग बढ़ रहा है। अतः कचरा अधिक होता जा रहा है। छोटे-मोटे उद्योग धंधे चलानेवाले लोग अपशिष्ट पदार्थ को पास ही बहती नदी-नालों में बहा देते हैं, जिससे पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। इसलिए जीवराशियों का अंत हो जाता है और संतुलन बिगड़ जाता है।

2. स्वच्छता अभियान को कार्यान्वयन करने के सही उपाय क्या-क्या हैं?

देश के हर घर में शौचालय बनवाने होंगे। सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाने होंगे। जगह-जगह कूड़ेदान लगाने होंगे। लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ़-सफ़ाई के संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचाना होगा।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

धरती की सभी जीवराशियाँ पर्यावरण पर निर्भर रहती हैं और प्रकृति के साथ तालमेल बनाते हुए आगे बढ़ती हैं। पर मानव मात्र प्रकृति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगाता आ रहा है। महात्मा गाँधी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के अन्य देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ हो। तदनुसार 1 अप्रैल 2001 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 'निर्मल भारत अभियान' नाम से स्वच्छता अभियान शुरु किया।

भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घरों में शौचालय का निर्माण हो और प्रत्येक सड़क, गली और मोहल्ले साफ़-सुथरा हो। इस उद्देश्य से 2 अक्तूबर 2014 को महात्मा गाँधीजी की 145वीं जयंती के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता अभियान दिल्ली के राजघाट से शुरु किया। केंद्र सरकार का शहरी विकास मंत्रालय, राज्य सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय, गैर सरकारी संगठन, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम व निगम आदि मिलकर इस अभियान को चला रहे हैं। इसमें देश के हर नागरिक को शामिल होना चाहिए।

कूड़ा-करकट और गंदगी के कारण विदेशी लोग हमारा देश आना कम ही पसंद करते हैं। अतः हमारे देश को आर्थिक नुकसान होता है। पृथ्वी भी प्रदूषित होती जा रही है।

शिक्षा के अभाव के कारण अनजान में ही मनुष्य अपने आसपास के वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। गाँवों में लोग शौचकार्य के लिए खेतों में या रेल की पटरियों के पास जाते हैं। इस गंदगी के माहौल के कारण अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। अधिक जनसंख्या होने के कारण संसाधनों का उपयोग बढ़ रहा है। अतः कचरे अधिक होते जा रहे हैं। छोटे-मोटे उद्योग धंधों को चलानेवाले लोग अपशिष्ट पदार्थ को पास ही बहती नदी-नालों में बहा देते हैं, जिससे पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। इसलिए जीवराशियों का अंत हो जाता है और संतुलन बिगड़ जाता है।

जब तक लोग खुद जागरुक नहीं होंगे तब तक हमारे देश में साफ़-सफ़ाई और स्वच्छ वातावरण का निर्माण होना आसान नहीं। देश के हर घर में शौचालय बनवाने होंगे। सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाने होंगे। जगह-जगह कूड़ेदान लगाना होगा। लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ़-सफ़ाई के संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचाना होगा। भारत सरकार जनता में जागरुकता लाने के लिए 'नमामी गंगे' पर्यावरण संरक्षण इकोनामिक्स जैसे कार्यक्रम चला रही है। हमें यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि यह धरती हमारी माँ है। इस धरती को आनेवाली पीढ़ी के लिए स्वच्छ रखना और उन्हें इसे स्वच्छपूर्ण सुपुर्द करना हमारा कर्तव्य है।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. गाँधीजी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के कई देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ और निर्मल दिखाई दें।

धरती की सभी जीवराशियाँ पर्यावरण पर निर्भर रहती हैं और प्रकृति के साथ तालमेल बनाते हुए आगे बढ़ती हैं। पर मानव मात्र प्रकृति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगाता आ रहा है। महात्मा गाँधी का सपना था कि हमारा देश भी विश्व के अन्य देशों की तरह पूरी तरह से स्वच्छ हो। तदनुसार अप्रैल 2001 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 'निर्मल भारत अभियान' नाम से स्वच्छता अभियान शुरु किया।

लेखक का कहना है कि गाँधी जी के सपने को साकार बनाने के उद्देश्य से सन् 2001 में यह अभियान शुरु किया गया है।

2. भारत सरकार जनता में जागरुकता लाने के लिए 'नमामी गंगे', 'पर्यावरण संरक्षण इकोनामिक्स' जैसे अनेक कार्यक्रम चला रही हैं।

यह प्रसंग 'स्वच्छता अभियान' नामक पाठ से दिया गया है।

जब तक लोग खुद जागरुक नहीं होंगे तब तक हमारे देश में साफ़-सफ़ाई और स्वच्छ वातावरण का निर्माण होना आसान नहीं। लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ़-सफ़ाई के संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचाना होगा। भारत सरकार जनता में जागरुकता लाने के लिए 'नमामी गंगे', 'पर्यावरण संरक्षण इकोनामिक्स' जैसे कार्यक्रम चला रही है।

लेखक का कहना है कि स्वच्छता के विषय में जनता में जागरुकता लाने के लिए खुद भारत सरकार अनेक कार्यक्रम चलाती आ रही है।

❊❊❊❊❊

सूचना प्रौद्योगिकी लेख :

5. यूनिकोड

- डॉ. एस. विजया

यूनिकोड क्या है?

यूनिकोड को समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि कंप्यूटर कार्य कैसे करता है? जब हम कंप्यूटर के की-बोर्ड पर कोई अक्षर, उदाहरण के लिए "A', दबाते हैं तो हमें तत्काल स्क्रीन पर A दिखाई देता है, पर हम शायद यह नहीं जानते हैं कि कंप्यूटर ने इसे A के रूप में नहीं बल्कि ज़ीरो (0) और वन (1) के कुछ कांबिनेशन (मिश्रण) में सुरक्षित (save) किया है, क्योंकि कंप्यूटर का हर कार्य केवल ज़ीरो और वन से ही होता है। हर अक्षर और हर संकेत कंप्यूटर में 'ज़ीरो' (0) और 'वन' (1) के आधार पर ही मुद्रित होते हैं। कंप्यूटर में पहले पहल रोमन वर्णमाला का प्रयोग हुआ था, इसलिए अंग्रेजी के अक्षरों के लिए कोड बनाए गए। बाद में युरोपीय भाषाओं और चीनी, जापानी आदि भाषाओं के लिए भी कोड तैयार हुए। पर, इसके साथ ही यह बात सामने आई कि किसी एक भाषा के लिए तैयार कोड दूसरे कंप्यूटर पर कार्य नहीं करते हैं। तब यह निर्णय किया गया कि ऐसे कोड बनाने चाहिए जो वैश्विक रूप से एक समान हों। यह निर्णय ही यूनिकोड तैयार करने का आधार बना।

वास्तव में यूनिवर्सल केरेक्टर इनकोडिंग स्टैंडर्ड (universal character encoding standard)– अर्थात् विश्व की सभी लिपियों के प्रत्येक वर्ण के लिए वैश्विक स्तर पर मान्य कोड तैयार करने को ही संक्षेप में यूनिकोड कहा जाता है। इसके अंतर्गत हर लिपि के हर वर्ण को एक सुभिन्न संख्या, जो शून्य (0) और (1) से मिलकर बनी होती है, दी गई है। इसके अतिरिक्त विराम चिह्नों और संकेतों को। जैसे रुपया, डॉलर, पाउंड आदि को भी विशिष्ट कोड प्रदान किए गए हैं, जो पूरी दुनिया के लिए एक समान हैं।

यूनिकोड किसने बनाया–

यूनिकोड तैयार करने का कार्य यूनिकोड संघ (Unicode Consortium) ने किया है। यह व्यापार या लाभ के लिए कार्य करने वाली संस्था नहीं है। दुनिया की बड़ी-बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियाँ, जैसे गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल आदि इसके सदस्य हैं और इसे वित्तीय सहायता देती हैं। विश्व के अनेक देशों के साथ भारत भी इसका सदस्य है।

'यूनिकोड़' कंप्यूटरों की परिचालन प्रणालियों (operating systems) में पाठ कोडीकरण की प्रणाली (text encoding system) है। परिचालन प्रणाली चाहे विंडोज़ हो या लिनक्स या मैक या अन्य कोई, पाठ कोडीकरण के लिए यूनिकोड का ही प्रयोग किया जाता है। यूनिकोड के अंतर्गत विश्व की सभी भाषाओं (लिपियों) के प्रत्येक अक्षर और संकेत के लिए एक सुभिन्न वैश्विक (universal) कोड निर्धारित किया जाता है। दुनिया की किसी भी भाषा का कोई भी ऐसा अक्षर या रूप नहीं है, जो यूनिकोड में समाहित न हो।

यूनिकोड के भाषायी खंड (blocks)

प्रयोक्ताओं की सुविधा का ध्यान रखते हुए यूनिकोड में विभिन्न भाषाओं के लिए विभिन्न खंड बनाए गए हैं। मौटे तौर पर पश्चिमी युरोप की भाषाओं को '**लैटिन ब्लॉक**' में रखा गया है। चीनी, जापानी, कोरियाई,

वियतनामी आदि को **'यूनिहान खंड'** में, अरबी, उर्दू आदि को **'अरबी खंड'** में और स्लेविक भाषाओं को **'सिरिलिक खंड'** में रखा गया है। भारत और युरोप की बहुत-सी भाषाएँ स्लेविक वर्ग में आती हैं।

यूनिकोड की विशेषताएँ और लाभ

यूनिकोड के अंतर्गत विश्व की सभी भाषाओं के सभी वर्णों और संकेतों को एक विशिष्ट संख्या प्राप्त हो जाने से विश्व की किसी भी भाषा का कंप्यूटर पर प्रयोग संभव हो गया है। प्रत्येक अक्षर को सूचित करने के लिए अधिकतम 4 बाइट्स् का प्रयोग किया जाता है। किसी भी कंप्यूटर प्लेटफॉर्म और प्रोग्राम में यूनिकोड का प्रयोग आसानी से हो सकता है। यूनिकोडिंग से सूचनाओं के इलेक्ट्रॉनिक आदान-प्रदान में कोई बाधा शेष नहीं रही है। विश्व की किसी भी भाषा में किसी भी कंप्यूटर पर किया गया कार्य विश्व के किसी भी अन्य कंप्यूटर पर आसानी से देखा और पढ़ा जा सकता है। मोबाइल, सोशल मीडिया और इंटरनेट पर हम भारतीय भाषाओं का जो प्रयोग देखते हैं, वह यूनिकोड से ही संभव हुआ है। यूनिकोड के कारण अलग-अलग भाषाओं के लिए अलग-अलग सॉफ्टवेयर रखने की झंझट समाप्त हो गई है। हर कंप्यूटर में अब यूनिकोड इन-बिल्ट (अन्तर्निहित) होता है, इसलिए किसी भी अतिरिक्त सॉफ्टवेयर के बिना कंप्यूटर पर किसी भी भाषा में कार्य किया जा सकता है।

कंप्यूटर पर यूनिकोड डाउनलोड कैसे करें?

भारत में अधिकांश प्रयोक्ता 'ऑपरेटिंग सिस्टम' के रूप में 'विंडोज़' का प्रयोग करते हैं। विंडोज़ 2000 और उससे आगे के सभी वर्ज़नों (पाठ) में यूनिकोड बिल्ट-इन होता है, इसे अलग से डाउनलोड (उतार लेना) करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। केवल भाषा को सक्रिय करना होता है। पहली भाषा (डिफॉल्ट लेंग्वेज) के रूप में अंग्रेजी होती है, किंतु हम चाहे सभी वाँछित भाषाओं को कंप्यूटर पर सक्रिय कर सकते हैं। इसे इस प्रकार सक्रिय किया जा सकता है–

1. कम्प्यूटर के 'कंट्रोल पैनल' या 'सेटिंग्स' खोलना है।
2. उसमें "Clock, Language , Region' (घड़ी, भाषा, क्षेत्र) का विकल्प रहता है। उसे 'क्लिक' करना है।
3. 'Languages' में 'भाषा जोड़ो' (Add a language) पर 'क्लिक' करना है। Add a Language पर क्लिक करते ही सारी भाषाओं की सूची सामने आ जाती है। उसमें से अपनी पसंद की भाषा पर क्लिक करने पर वह भाषा कंप्यूटर पर सक्रिय हो जाती है; यानी हम उस भाषा में कार्य कर सकते हैं।
4. उसमें "Search bar' (खोजो पट्टी) में 'हिन्दी' टंकित करना है। अगर आप अन्य कोई भाषा डाऊनलोड करना चाहते हैं तो उस भाषा का नाम टंकित करना है।
5. उसके बाद स्क्रीन में जो निर्देश आते हैं उनके अनुसार करते जाना है।

बस, आपके कंप्यूटर में यूनिकोड की सुविधा उपलब्ध हो गई है। अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार आप किसी भी भाषा में टंकित कर सकते हैं।

अब समस्या आती है की-बोर्ड की। ज्यादातर प्रयोक्ता रोमन (अंग्रेजी) की-बोर्ड तो जैसे-तैसे सीख लेते हैं, किंतु भारतीय भाषा का की-बोर्ड नहीं सीखते। कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं के लिए डिफॉल्ट की-बोर्ड के रूप में इन्स्क्रिप्ट

की-बोर्ड दिया होता है। यदि रोमन की-बोर्ड के सहारे भारतीय भाषाओं में कार्य करना हो तो 'फोनिटिक की-बोर्ड' (उच्चारण आधारित) डाउनलोड करना होता है। 'फोनिटिक' की-बोर्ड कई प्रकार के होते हैं। माइक्रोसॉफ्ट के फोनिटिक की-बोर्ड (Microsoft indic language input tool) भी उपलब्ध हैं, जिन्हें उसकी साइट bhashaindia.com से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड

जिस प्रकार यूनिकोड के आगमन से कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं के प्रयोग में आने वाली बाधाएँ स्वतः समाप्त हो गईं, उसी प्रकार इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड से टाइपिंग में आने वाली बाधाएँ समाप्त हो गई हैं। पहले हर भाषा के लिए अलग-अलग की-बोर्ड हुआ करते थे, जिसके कारण एक ही व्यक्ति अलग-अलग भाषाओं में गति और शुद्धता के साथ टाइप नहीं कर पाता था, किंतु इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान है अर्थात् किसी भी एक भारतीय भाषा के लिए यह की-बोर्ड सीख लेने पर, किसी अन्य भारतीय भाषा में भी बहुत आसानी से कार्य किया जा सकता है। बहुत-से प्रयोक्ता भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए रोमन की-बोर्ड का प्रयोग करते हैं, पर उससे टाइपिंग में वह गति और शुद्धता नहीं आ पाती, जो इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड से प्राप्त होती है। इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड बहुत वैज्ञानिक रीति से तैयार किया गया है और कुछ ही घंटों में सीखा जा सकता है। इसीलिए कंप्यूटरों पर 'इनबिल्ट की-बोर्ड' के रूप में यही 'की-बोर्ड' उपलब्ध कराया गया है।

इस प्रकार यूनिकोड और इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड भारतीय भाषाओं के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं। इनसे भारतीय भाषाओं में ई-मेल, एस एम एस, व्हाट्सअप पर संदेश आदि भेजना संभव हो सका है और इन कार्यों के लिए भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

तत्काल - तुरन्त; वैश्विक - विश्व स्तर पर; सुभिन्न - विशिष्ट रूप में अलग; सूचना प्रौद्योगिकी - IT, Information Tehnology; वित्तीय सहायता - धन प्रदान करके सहयोग देना; परिचालन - कार्य चलाना; कोड़ीकरण - कूट या कोड़ तय करना; निर्धारित करना - तय करना, निश्चित करना; समाहित - शामिल हुआ; प्रयोक्ता - उपयोग करनेवाले; निर्देश - आदेश, अनुदेश, हिदायत; फ़ोनिटिक - उच्चारण आधारित।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **कम्प्यूटर में कार्य कैसे होता है?**

   कम्प्यूटर सभी अक्षरों को ज़ीरो (0) और वन (1) के मिश्रित रूप में सुरक्षित कर लेता है और इससे ही कंप्यूटर का हर कार्य संपन्न होता है।

2. **कम्प्यूटर में सबसे पहले किस भाषा के लिए कोड़ निर्मित हुआ?**

   कम्प्यूटर में सबसे पहले अंग्रेज़ी भाषा के लिए कोड़ निर्मित हुआ।

3. **यूनिकोड़ की स्थापना किस उद्देश्य से की गई?**

सभी भाषाओं को वैश्विक स्तर पर एक समान कोड़ निर्धारित करने के उद्देश्य से यूनिकोड़ की स्थापना हुई।

4. **यूनिकोड़ तैयार करने का काम किसने किया?**

यूनिकोड़ तैयार करने का काम यूनिकोड़ संघ ने किया।

5. **यूनिकोड़ संघ के लिए कौन-कौन वित्त सहायता देते हैं?**

यूनिकोड़ संघ के लिए बड़ी-बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियां जैसे गूगल, माइक्रोसाफ़्ट आदि वित्तीय सहायता देती हैं।

6. **पाठ कोड़ीकरण के लिए किसका प्रयोग किया जाता है?**

पाठ कोड़ी करण के लिए यूनिकोड़ का प्रयोग किया जाता है।

7. **यूनिकोड़ के विभिन्न भाषा खंड क्या-क्या है?**

लेटिन ब्लॉक, यूनिहान खंड, अरबी खंड, सिरिलिक खंड, स्लेविक वर्ग।

8. **यूनिकोड़ में प्रत्येक अक्षर को सूचित करने के लिए अधिकतर कितने बाइट्स होते हैं?**

यूनिकोड़ में प्रत्येक अक्षर को सूचित करने के लिए अधिकतर चार बाइट्स होते हैं।

9. **यूनिकोड़ के लिए उपयुक्त की बोर्ड क्या है?**

यूनिकोड़ के लिए उपयुक्त की बोर्ड इन्-स्क्रिप्ट है।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. **'यूनिकोड़' क्या है ?**

सभी भाषाओं के हर एक वर्ण के लिए विशिष्ट एवं अलग 'कोड़' तैयार करने की प्रक्रिया 'यूनिकोड़' है। 'यूनिवर्सल कैरेक्टर इनकोडिंग स्टैंडर्ड' को ही संक्षेप में यूनिकोड़ कहते हैं। यूनिकोड़ को निःशुल्क रूप में हमारे कंप्यूटर में आसानी से डाउनलोड़ कर सकते हैं। ऐसा करने से किसी भी भाषा में ई-मेल करना, इन्टरनेट में टंकित करना आसान हो जाता है। यूनिकोड़ में टंकित विषय को किसी भी कंप्यूटर में, किसी अलग एवं विशिष्ट साफ्टवेअर के बिना आसानी से पढ़ सकते हैं।

2. **यूनिकोड़ के भाषाई खंड क्या-क्या हैं ?**

प्रयोक्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यूनिकोड़ में विभिन्न भाषाओं के लिए विभिन्न खंड बनाए गए हैं। मोटे तौर पर पश्चिमी यूरोप की भाषाओं को 'लैटिन ब्लॉक' में रखा गया है। चीनी, जापानी, कोरियाई, वियतनामी आदि को 'यूनियन खंड'में, अरबी, उर्दू आदि को 'अरबी खंड' में और स्लेविक भाषाओं को 'सिरिलिक खंड' में रखा गया है। भारत और यूरोप की बहुत-सी भाषाएँ स्लेविक वर्ग में आती है।

3. कंप्यूटर पर यूनिकोड़ डाउनलोड़ कैसे करना है ?

1. कंप्यूटर के 'कंट्रोल पैनल' या 'सेटिंग्स' खोलना है।
2. उसमें 'Clock, Language, Region' (घड़ी, भाषा, क्षेत्र) का विकल्प रहता है। उसे 'क्लिक' करना है।
3. Languages' में भाषा जोड़ो (Add a language) पर क्लिक करना है। Add a Language पर क्लिक करते ही सारी भाषाओं की सूची सामने आ जाती है। उसमें से अपनी पसंद की भाषा पर क्लिक करने पर वह भाषा कंप्यूटर पर सक्रिय हो जाती है यानी हम उस भाषा में कार्य कर सकते हैं।
4. उसमें 'Search Bar' (खोज़ो पट्टी) में 'हिंदी' टंकित करना है। (अगर आप अन्य कोई भाषा डाउनलोड़ करना चाहते हैं तो उस भाषा का नाम टंकित करना है।)
5. उसके बाद स्क्रीन में जो निर्देश आते हैं उनके अनुसार करते जाना है।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

इस पाठ में लेखिका ने 'यूनिकोड़' संबंधी सभी जानकारियाँ प्रदान की हैं।

'यूनिकोड' सभी भाषाओं के माध्यम से आदान-प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है। पहले सभी भाषाओं के लिए विश्वस्तरीय कोड़ नहीं थे। अतः उन भाषाओं में टंकित करने तथा टंकित की गई सामग्रियों को पढ़ने एवं समझने के लिए विशिष्ट एवं अलग साफ्टवेअर की आवश्यकता थी। अतः भारतीय भाषाओं में टंकित करने में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। 'यूनिकोड़' के आगमन से सभी समस्याएँ दूर हो गयी। अतः यूनिकोड़ वैश्विक स्तर पर एक समान कोड़ प्रदान करता है।

यूनिकोड़ का अर्थ है 'यूनिवर्सल केरेक्टर इनकोडिंग स्टैंडर्ड'। इसमें हरेक भाषा के हरेक अक्षर के लिए एक विश्वस्तरीय कोड़ है। इसके अलावा रुपया (₹) डालर ($) पाउंड(£) आदि के लिए भी विश्वस्तरीय कोड़ है।

यूनिकोड़ संघ :

'यूनिकोड़ संघ' यूनिकोड़ निर्माण का कार्य करता है। इस संघ में अनेक देश सदस्य हैं। भारत भी इस संघ का सदस्य है। यह संघ कोई लाभ या व्यापार के उद्देश्य से यह कार्य नहीं कर रहा है। इस संघ को अनेक सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियाँ वित्त सहायता करती हैं।

भाषायी खंड :

यूनिकोड़ में, उपयोग करनेवालों की सुविधा के लिए विभिन्न खंड बनाए गए हैं। हर एक खंड के अंतर्गत विश्व की अनेक भाषाएँ समाहित हैं। पश्चिमी यूरोप की भाषाएँ 'लैटिन ब्लाक' में है। चीनी, जापानी, कोरियाई, वियतनामी आदि भाषाएँ 'यूनिहान खंड' में आती है। अरबी, उर्दू आदि 'अरबी खंड' में रखी गयी हैं तथा भारत तथा यूरोप की स्लेविक भाषाएँ 'सिरिलिक खंड' में शामिल हैं।

यूनिकोड़ में निम्न प्रकार की सुविधाएँ हैं –

1. इसमें विश्व की सभी भाषाओं के हरेक वर्ण एवं संकेत के लिए एक विशिष्ट कोड़ है। अतः यूनिकोड़ के सहारे सभी भाषाओं में टंकित कर सकते हैं और यूनिकोड़ में टंकित सामग्री को पढ़ने के लिए किसी विशिष्ट साफ्टवेअर की आवश्यकता नहीं है।

2. इसे नि:शुल्क रूप में आसानी से डाउनलोड़ कर सकते हैं।
3. मोबाइल, सोशल मीडिया और इंटरनेट सब में यह काम में आता है।
4. इससे भारतीय भाषाओं में ई.मेल, एस.एम.एस आदि आसान हो गया।

यूनिकोड़ को डाउनलोड़ करना बहुत आसान है। कंप्यूटर के 'कंट्रोल पैनल' में जाकर इसे अनायास डाउनलोड़ कर सकते हैं।

इनस्क्रिप्ट की बोर्ड:

जिस तरह यूनिकोड़ ने भाषा संप्रेषण में बहुत बड़ा योगदान दिया, उसी तरह 'इनस्क्रिप्ट', 'की-बोर्ड' ने टंकण कार्य को बहुत आसान बना दिया। इनस्क्रिप्ट 'की बोर्ड' में टंकण सीखना अत्यंत सुलभ है। 'इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड' सभी भारतीय भाषाओं के लिए समान है।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. **यूनिकोड़ के अंतर्गत विश्व की सभी भाषाओं (लिपियों) के प्रत्येक अक्षर और संकेत के लिए एक सुभिन्न वैश्विक (universal) कोड़ निर्धारित किया जाता है। दुनिया की किसी भी भाषा का कोई भी ऐसा अक्षर या रूप नहीं है, जो यूनिकोड़ में समाहित न हो।**

   संदर्भः यह गद्यांश 'यूनिकोड़' शीर्षक पाठ से प्रस्तुत है। इस पाठ में 'यूनिकोड़' की विशिष्टताएँ एवं उपयोगिताओं के बारे में बताया गया है। इस निबंध की रचना डॉ. एस. विजया द्वारा हुई है।

   व्याख्याः यूनिकोड़ की सबसे बड़ी विशेषता यह हे कि विश्व की सभी भाषाओं के हरेक अक्षर के लिए विशिष्ट वैश्विक कोड़ है। अतः यूनिकोड़ में टंकित सभी सामग्रियों को, वह चाहे किसी भी भाषा में हो, किसी भी कंप्यूटर से आसानी से पढ़ सकते हैं और डाउनलोड़ भी कर सकते हैं।

2. **इन् स्क्रिप्ट की-बोर्ड सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान है अर्थात् किसी भी एक भारतीय भाषा के लिए यह की-बोर्ड सीख लेने पर किसी अन्य भारतीय भाषा में भी बहुत आसानी से कार्य किया जा सकता है।**

   संदर्भः यह गद्यांश 'यूनिकोड़' शीर्षक पाठ से प्रस्तुत है। इस पाठ में 'यूनिकोड़' की विशिष्टताएँ एवं उपयोगिताओं के बारे में बताया गया है। इस निबंध की रचना डॉ. एस. विजया द्वारा हुई है।

   व्याख्याः इस निबंध में लेखिका यूनिकोड़ के आगमन से कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं के प्रयोग में रहनेवाली सुविधाओं के बारे में बताती हैं। साथ ही इन भाषाओं के टंकण में इन-स्क्रिप्ट के योगदान के संबंध में भी बताती हैं। पहले हर भाषा के लिए अलग-अलग की-बोर्ड में टंकण सीखने की विडंबना थी। लेकिन इन-स्क्रिप्ट की-बोर्ड में टंकित करना सीख लेंगे तो सभी भारतीय भाषाओं को आसानी से टंकित कर सकते हैं। क्योंकि इन-स्क्रिप्ट की-बोर्ड सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान है।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

स्त्री-शिक्षाः

6. प्राचीन भारत की महिलाएँ–शिक्षा के संदर्भ में

- महावीरप्रसाद द्विवेदी

बड़े शोक की बात है, आजकल भी ऐसे लोग विद्यमान हैं जो स्त्रियों को पढ़ाना उनके और गृह-सुख के नाश का कारण समझते हैं। और, लोग भी ऐसे-वैसे नहीं, सुशिक्षित लोग - ऐसे लोग जिन्होंने बड़े-बड़े स्कूलों और शायद कॉलिजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्म - शास्त्र और संस्कृत के ग्रंथ साहित्य से परिचय रखते हैं, और जिनका पेशा कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना, कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मतत्त्व समझाना है। उनकी दलीलें सुन लीजिए–

1. पुराने संस्कृत–कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों से अपढ़ों की भाषा में बातें कराई गई हैं। इससे प्रमाणित है कि इस देश में स्त्रियों को पढ़ाने की चाल न थी। होती तो इतिहास - पुराणादि में उनको पढ़ाने की नियमबध्द प्रणाली ज़रूर लिखी मिलती।

2. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। शकुंतला इतना कम पढ़ी थी कि गँवारों की भाषा में मुश्किल से एक छोटा-सा श्लोक वह लिख सकी थी। तिस पर भी उसकी इस इतनी कम शिक्षा ने भी अनर्थ कर डाला। शकुंतला ने जो कटु वाक्य दुष्यंत को कहे, वह इस पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।

3. जिस भाषा में शकुंतला ने श्लोक रचा था वह अपढ़ों की भाषा थी। अतएव नागरिकों की भाषा की बात तो दूर रही, अपढ़ गँवारों की भी भाषा पढ़ाना स्त्रियों को बरबाद करना है।

इस तरह की दलीलों का सबसे अधिक प्रभावशाली उत्तर उपेक्षा ही है। तथापि हम दो-चार बातें लिखे देते हैं।

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हज़ारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शाक्य, मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव

प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पंडितों ने गाथा-सप्तशती, सेतुबंध - महाकाव्य और कुमारपालचरित आदि ग्रंथ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिंदी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का संपादक इस ज़माने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है; क्योंकि वह अपने ज़माने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है। हिंदी, बाँग्ला आदि भाषाएँ आजकल की प्राकृत हैं, शौरसेनी, मागधी. महाराष्ट्री और पाली आदि भाषाएँ उस ज़माने की थीं। प्राकृत पढ़कर भी उस ज़माने में लोग उसी तरह सभ्य, शिक्षित और पंडित हो सकते थे जिस तरह कि हिंदी, बाँग्ला, मराठी आदि भाषाएँ पढ़कर इस ज़माने में हम हो सकते हैं। फिर प्राकृत बोलना अपढ़ होने का सबूत है। यह बात कैसे मानी जा सकती है?

जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र - संबंधी नियम बनाए थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत न थी । चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। इसी से उन्होंने उनकी भाषा संस्कृत और दूसरे लोगों तथा स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का नियम कर दिया।

पुराने ज़माने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था। फिर नियमबद्ध प्रणाली की उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य। और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो? पुराने ज़माने में विमान उड़ते थे। बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र! बड़े-बड़े जहाज़ों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे। दिखाइए, जहाज़ बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ! पुराणादि में विमानों और जहाज़ों द्वारा की कई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गँवार बताते हैं! इस तर्कशास्त्रज्ञता और इस न्यायशीलता की बलिहारी! वेदों को प्रायः सभी हिंदू ईश्वर - कृत मानते हैं। सो ईश्वर तो वेद मंत्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से करावे और हम उन्हें ककहरा पढ़ाना भी पाप समझें । शीला और विज्जा आदि कौन थीं? वे स्त्री थीं या नहीं? बड़े - बड़े पुरुष - कवियों से आदृत हुई हैं या नहीं? शाङ्र्गधर - पद्धति में उनकी कविता के नमूने हैं या नहीं? बौद्ध-ग्रंथ त्रिपिटक के अंतर्गत थेरीगाथा में जिन सैकड़ों स्त्रियों की पद्य-रचना उद्धृत है वे क्या अपढ़ थीं? जिस भारत में कुमारिकाओं को चित्र बनाने, नाचने, गाने, बजाने, फूल चुनने, हार गूंथने, पैर मलने तक की कला सीखने की आज्ञा थी उनको लिखने-पढ़ने की आज्ञा न थी। कौन विज्ञ ऐसी बात मुख से निकालेगा? और, कोई निकाले भी तो मानेगा कौन?

अत्रि की पत्नी पत्नी - धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे! गज़ब! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं। यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है। समझे । स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं।

मान लीजिए कि पुराने ज़माने में भारत की एक भी स्त्री पढ़ी-लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की ज़रूरत न समझी गई होगी। पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए। हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं? तो चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह है कि स्त्री-शिक्षा के विपक्षियों को क्षणभर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने ज़माने में यहाँ की सारी स्त्रियाँ अपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी। जो लोग पुराणों में पढ़ी-लिखी स्त्रियों के हवाले माँगते हैं उन्हें श्रीमद्भागवत, दशमस्कंध, के उत्तरार्द्ध का त्रेपनवाँ अध्याय पढ़ना चाहिए। उसमें रुक्मिणी हरण की कथा है। रुक्मिणी ने जो एक लंबा-चौड़ा पत्र एकांत में लिखकर एक ब्राह्मण के हाथ, श्रीकृष्ण को भेजा था वह तो प्राकृत में न था। उसके प्राकृत में होने का उल्लेख भागवत में तो नहीं। उसमें रुक्मिणी ने जो पांडित्य दिखाया है वह उसके अपढ़ और अल्पज्ञ होने अथवा गँवारपन का सूचक नहीं। पुराने ढंग के पक्के सनातन-धर्मावलंबियों की दृष्टि में तो नाटकों की अपेक्षा भागवत का महत्त्व बहुत ही अधिक होना चाहिए। इस दशा में यदि उनमें से कोई यह कहे कि सभी शकुंतला की तरह, अपने परित्याग को अन्याय समझने वाली सीता का रामचंद्र के विषय में, कटुवाक्य कहना सर्वथा स्वाभाविक है। न यह पढ़ने-लिखने का परिणाम है न गँवारपन का, न अकुलीनता का।

पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज़ नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

जो लोग यह कहते हैं कि पुराने ज़माने में यहाँ स्त्रियाँ न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दंडनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है-समाज की उन्नति में बाधा डालना है।

'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए घर में या स्कूल में इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए: पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है-वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

दलील - तर्क; गज़ब - विचित्र; पीयूष - अमृत; हरगिज़ - किसी हालत में; मुमानियत - रोक, मनाही; संशोधन - सुधार; मिथ्या - झूठी; ककहरा - वर्णमाला; छक्का छुडाना - हराना।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. **पुराने जमाने में किसे स्त्रियों की भाषा कहते थे?**

   पुराने जमाने में प्राकृत भाषा को ही स्त्रियों की भाषा कहते थे।

2. **उस ज़माने की प्राकृत भाषाएँ क्या-क्या थीं?**

   शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री और पाली आदि भाषाएँ उस जमाने की प्राकृत भाषाएँ थीं।

3. **आजकल की प्राकृत भाषाएँ क्या-क्या हैं?**

   हिन्दी और बांग्ला आदि भाषाएँ आजकल की प्राकृत भाषाएँ हैं।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. **'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं'–इस दलील का खंडन द्विवेदी ने कैसे किया है?**

   पढ़ाई करने से अनर्थ नहीं होता और न ही स्त्री को शिक्षा के कारण अनर्थ होता है। अनर्थ होना हो तो पुरुष से भी हो सकता है। समाज पर होनेवाले अत्याचार, दुराचार आदि व्यक्ति विशेष के चरित्र और स्वभाव पर निर्भर हैं। यदि पढ़े-लिखे व्यक्ति दुष्कर्म करता है तो सभी शिक्षण संस्थाएँ बंद कर देनी चाहिए। अतः स्त्री को अवश्य ही शिक्षित कराना चाहिए। लेखक कहते हैं, जो लोग स्त्रियों को शिक्षा दिलाने के पक्ष में नहीं है वे समाज के हितैषी नहीं हैं।

2. **पुराने ज़माने में भी स्त्रियाँ अपना पांडित्य प्रकट करती थीं–सोदाहरण समझाइये।**

   लेखक का कहना है कि पुराने समय में भी स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी थीं। ऋषि-पत्नियाँ व्याख्यान में बड़े-बड़े विद्वानों को परास्त कर देती थीं। इस बात को लेखक श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी और सीतादेवी आदि के उदाहरणों के माध्यम से सिद्‌ध करते हैं। इन पौराणिक स्त्रियों की बातें पांडित्यपूर्ण थीं। इस तरह अनेक उदाहरणों के माध्यम से लेखक सिद्‌ध करते हैं कि पुराने ज़माने में भी स्त्रियों अपना पांडित्य प्रकट करती थीं।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

इस निबंध का लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। यह निबंध उनकी 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य में एक नवीन युग के प्रवर्तक थे। अतः उनके काल को 'द्विवेदी युग' की संज्ञा दी गई है।

लेखक इस बात पर दुख व्यक्त करते हैं कि वर्तमान समय में भी बहुत से सभ्य और सुशिक्षित स्त्री शिक्षा को अवनति का कारण मानते हैं। शकुंतला का उदाहरण देकर लेखक पूछते हैं कि अगर शकुंतला अनपढ़ होती तो अपने पति के सम्मुख कैसे तर्क आदि करती।

यहाँ लेखक प्राकृत भाषा के संबंध में भी उल्लेख करते हैं। क्योंकि शकुंतला ने प्राकृत भाषा का प्रयोग किया था। उस समय संस्कृत बीलनेवालों की संख्या कम थी।

लेखक कहते हैं, प्रायः हिन्दू मानते हैं कि वेदों की रचना ईश्वर ने की थीं। पर ईश्वर ने वेद मंत्रों का उच्चारण स्त्रियों से करवाया है और मनुष्य स्त्री को पढ़ाना पाप मानता है। ऋषि-पत्नियाँ व्याख्यान में बड़े-बड़े विद्वानों को परास्त कर देतीं थीं। व्यंग्यात्मक रूप में लेखक कहते हैं कि वे स्त्रियाँ पढ़ती नहीं तो महान पुरुषों से मुकाबला करने का पाप न होता। स्त्री के लिए शिक्षा जहर और पुरुष के लिए शिक्षा अमृत बनाई गई है। ऐसे लोग इस प्रकार के तर्क देकर स्त्री को अनपढ़ रखकर भारत का गौरव बढ़ाने में लगे रहते हैं।

लेखक का कहना है कि पुराने समय में भी स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी थीं। इस बात को लेखक श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी और सीतादेवी आदि के उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध करते हैं। इन पौराणिक स्त्रियों की बातें पांडित्यपूर्ण थीं। इस तरह अनेक उदाहरणों के माध्यम से लेखक सिद्ध करते हैं कि पुराने ज़माने में भी स्त्रियों अपना पांडित्य प्रकट करती थीं।

लेखक कहते हैं, पढ़ाई करने से अनर्थ नहीं होता और न ही स्त्री को शिक्षा देने पर ही अनर्थ होता है। अनर्थ होना हो तो पुरुष से भी हो सकता है। समाज पर होनेवाले अत्याचार, दुराचार व्यक्ति विशेष के चरित्र और स्वभाव पर निर्भर हैं और उन्हें जाना भी जा सकता है। यदि पढ़-लिखकर व्यक्ति दुष्कर्म करता है तो सभी शिक्षण संस्थाएँ बंद कर देनी चाहिए। अतः स्त्री को अवश्य ही शिक्षित करना चाहिए। जो लोग स्त्रियों को शिक्षा दिलाने के पक्ष में नहीं है वे समाज का बुरा करने के साथ-साथ अपराध भी कर रहे हैं और समाज के विकास में बाधक हैं।

द्विवेदी जी के इस लेख की पहली विशेषता है कि आप उन सभी पुरातन पंथी विचारों से लोहा लेते हैं जो स्त्री शिक्षा को व्यर्थ अथवा समाज के विघटन का कारण मानते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें परंपरा को ज्यों का त्यों नहीं स्वीकार किया है; उसका जो हिस्सा सड-गल चुका हो, उसे रूढ़ी मानकर छोड़ देने का संदेश दिया है। आज यह निबंध अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक महत्व रखता है।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. **जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्री-संबंधी नियम बनाए थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत न थी।**

   प्रस्तुत प्रसंग 'प्राचीन भारत की महिलाएँ–शिक्षा के संदर्भ में' नामक पाठ से लिया गया है। इस निबंध के लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं। हिन्दी साहित्य में आपका नाम उल्लेखनीय है।

   संस्कृत भाषा के बारे में लेखक इस प्रकार कहते हैं।

जिस समय नाट्यशास्त्र संबंधी नियम बनाए गए थे तब संस्कृत भाषा बोलनेवालों की संख्या बहुत कम थी। चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते थे। पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न होने के कारण नियमबद्ध शिक्षा नहीं मिली।

2. व्यक्ति विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं।

प्रस्तुत प्रसंग 'प्राचीन भारत की महिलाएँ–शिक्षा के संदर्भ में' नामक पाठ से लिया गया है। इस निबंध के लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं। हिन्दी साहित्य में आपका नाम उल्लेखनीय है।

'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं' - इस वाद पर खंडन करते हुए लेखक इस प्रकार कहते हैं।

पढ़ने-लिखने में कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। समाज में होनेवाले सभी अनर्थ, दुराचार आदि व्यक्ति विशेष स्वभाव पर निर्भर है और उनके चाल-चलन देखकर भी जाने जा सकते हैं। इसलिए स्त्रियों को पढ़ाना चाहिए।

इस वाक्य के जरिए लेखक स्त्रियों को पढ़ाने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं।

3. स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है–समाज की उन्नति में बाध्य डालना है।

यह प्रसंग 'प्राचीन भारत की महिलाएँ–शिक्षा के संदर्भ में' नामक पाठ से लिया गया है। इस निबंध के लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं। हिन्दी साहित्य में आपका नाम उल्लेखनीय है।

स्त्री शिक्षा के महत्व के बारे में लेखक इस प्रकार कहते हैं।

पुराने जमाने में जो लोग स्त्री शिक्षा आवश्यक नहीं बताते थे उन लोगों को दंड देना चाहिए। स्त्री को शिक्षा से वंचित रखना समाज के लिए बड़ा अहित करना है। समाज के विकास में बाधा भी है। इसलिए लेखक स्त्री शिक्षा पर ज़ोर देते हैं।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

भावुक कहानी :

7. छोटा जादूगर

–जयशंकर प्रसाद

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे-से फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीनेवालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी कुछ सम्पूर्णता थी। मैंने पूछा– 'क्यों जी तुमने इसमें क्या देखा?'

'मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ। उसने बड़े जोश से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा– 'और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?'

'नहीं, मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।'

मैंने कहा– तो चलो मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ। मैंने मन ही मन कहा– 'भाई! आज के तुम ही मित्र रहे!'

उसने कहा– 'वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।'

मैंने उससे सहमत होकर कहा– 'तो चलो पहले शरबत पी लिया जाए।' उसने हाँ के बहाने सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा– 'तुम्हारे और कौन हैं?'

'माँ और बाबूजी।'

'उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?'

'बाबूजी जेल में हैं।'

'क्यों?'

'देश के लिए।' – वह गर्व से बोला।

'और तुम्हारी माँ?'

'वह बीमार है।'

'और तुम तमाशा देख रहे हो?'

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा– 'तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक तसल्ली होती!'

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

'हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ जी बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया।'

'कहाँ?'

'जेल में! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना भी पेट भरूँ।'

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा– 'अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।'

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया; लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा– 'बाबूजी, आपको तमाशा दिखलाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।

वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा– इतनी जल्द आँख बदल गई।'

मैं घूमकर पान की दूकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा– 'बाबूजी!'

मैंने पूछा– 'कौन?'

'मैं हूँ, छोटा जादूगर!'

(2)

कलकत्ता के सुन्दर बोटानिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ़ जाँघिया और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा–

'बाबूजी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।'

'नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।'

'फिर इसके बाद गाना-बजाना होगा, बाबूजी?'

'नहीं जी– तुमको...' मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था; श्रीमतीजी ने कहा– 'दिखलाओ जी, तुम तो

अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।' मैं चुप हो गया; क्योंकि श्रीमतीजी की बोली में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बन्दर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की बातों से ही खेल हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को ज़रूरतों ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा– 'अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।'

श्रीमतीजी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा– 'लड़के!'

'छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसीसे मेरी जीविका है।'

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा– 'अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?'

'पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूंगा।' मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा–ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता - कुंज देखने के लिए चले।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। डूबते हुए सूर्य की अन्तिम किरण पेड़ों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। चारों ओर सुनसान था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कम्बल कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा– 'तुम यहाँ कहाँ?'

'मेरी माँ यहीं हैं न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा– 'माँ!'

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

(3)

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ़ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब

होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा– 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

'माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।' अविचल भाव से उसने कहा।

'तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए!' मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दुःख का माप अपना ही साधन तो है। उसी के हिसाब से वह तुलना करता है।

उसने कहा– 'क्यों न आता!'

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा– 'जल्दी चलो।' मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में 'माँ-माँ' पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था किन्तु स्त्री के मुंह से बे... निकलकर रह गया। दुर्बल हाथ उठकर गिर पड़े। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं भौंचक्का खड़ा था। उस साफ धूप में सारा संसार जैसे जादू सा मेरे चारों ओर नाच रहा था।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :–

जादूगर - जादू करनेवाला, तमाशा दिखानेवाला; ताश - खेल के पत्ते; निशानेबाजी - निशान मारनेवाला; निकम्मा - आलसी; तसल्ली - आश्वासन; जाँधिया - काछा; सुनसान - निर्जन; बटोरना - इकट्ठा करना; भौंचक्का - हैरान; जाड़ा - शीत; पथ्य - नियमित खाना; नौ दो ग्यारह होना - गायब होना; चार खाना - एक प्रकार का कपड़ा; माय - मेरा; चिथडा - फ़टा हुआ; थपथपाना - पीठ पर धीरे से पीटकर प्रोत्साहन देना।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. छोटा जादूगर कैसे दिखाई पड़ता था?

छोटा जादूगर गंभीर विषाद के साथ धैर्य सहित दिखायी पड़ा।

2. छोटे जादूगर के माँ-बाप के बारे में बताइए।

छोटा जादूगर के बाप देश के खातिर जेल में था और उसकी माँ बीमार पड़ी थी।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. छोटे जादूगर के खेल के बारे में लिखिए।

लेखक ने बारह टिकट खरीदकर छोटे जादूगर को दिया। छोटा जादूकर ने उनसे सभी बारह खिलौनों को अपने पक्का निशाने से गिरा दिया। उसकी कोई भी गेंद खाली नहीं गई। बाद में कार्निवल के खेल में वे सब खिलौने अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा तो, बिल्ली रूठने लगी; बंदर घुडकने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। देखनेवाले सब हँसते हँसते लोट पोट हो गये।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

'छोटा जादूगर' जयशंकर प्रसाद जी की भावुक कहानी है। इसमें एक तेरह-चौदह वर्षीय लड़के का वर्णन है। वह आर्थिक संकट और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए जिम्मेदारियों को सकारात्मक रूप से निभाता है। वह धीरज और परिश्रमी बालक है। उसको जादू की कला आती है और उसीसे पैसे कमाकर अपनी माँ के साथ रहता है।

छोटा जादूगर निर्धन है। तथापि स्वाभिमानी है। वह जीवन की कठिनाइयों से घबराता नहीं है। बहुत बुरी स्थिति में भी किसी के सम्मुख हाथ पसारता नहीं।

वह इतना निपुण है कि निर्जीव खिलौनों के द्वारा बढिया खेल दिखाकर सभी को हँसाता है। वह आत्मविश्वास के साथ अपनी रोगी माँ की बहुत ही प्यार से सेवा करता है। ऐसे बालक के साथ लेखक का रिश्ता कैसे बना? यह विवरण इस कहानी में मिलता है।

एक दिन लेखक ने कोलकत्ता के एक उत्सव में एक छोटे लड़के को देखा। वह फटा हुआ कुर्ता पहना हुआ था। बेचारे के चेहरे पर पीड़ा और धैर्य की लकीरें थीं। लेखक उस चौदह वर्षीय बच्चे की ओर आकर्षित हुए। लेखक ने उसे शरबत पीने के लिए बुलाया। फिर लड़के को निशाना लगाने के खेल के स्थान ले गये। वह लड़का निकला पक्का निशानेबाज, वह सभी निशाने सही लगाया और बारह खिलौनों को बटोर लिया।

बातचीत के दौरान लड़के ने अपना परिचय छोटा जादूगर के रूप में दिया। उसकी माँ बीमार थी। देश की आजादी की खातिर पिता जेल गए हुए थे।

वह जादू करके अपनी माँ के इलाज के लिए पैसे जुटाता था। छोटा जादूगर कोलकाता के बोटानिकल गार्डन में दूसरी बार मिला। उसने लेखक की पत्नी को जादू का खेल दिखाया। कुछ दिनों के बाद लेखक की मुलाकात छोटे जादूगर से हुई। लेकिन उस दिन उसका चेहरा सुस्त लग रहा था। लेखक ने पूछताछ की तो उसने बताया कि उसकी माँ ने उसे जल्दी आने का आग्रह किया है। लेखक लड़के के साथ उसके घर गये। वहाँ उसकी माँ अपने अंतिम क्षणों में थी। लड़का माँ के पास गया। तुरंत माँ ने हाथ उठाया और वह हाथ नीचे गिर पड़ा। अर्थात् वह ठंड हो गयी। अंत में पाठक की आँखें नम हो जाती हैं।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. बालक को जरूरतों ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया।

संदर्भ तथा प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश 'छोटा जादूगर' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक जयशंकर प्रसाद हैं। इस वाक्य में लेखक छोटा जादूगर के कमाल के बारे में बताते हैं।

व्याख्या :- लेखक सोच रहे थे कि जरूरतों ने बालक को कितनी जल्दी से होशियार बना दिया था। यही इस संसार का नियम है। ताश के पहले तो लाल हो गए फिर सब खाली हो गयी। बालक के गले की सूत की डोरी टूकडे टूकडे होने के बाद फिर से जुड़ गयी। लट्टू अपने आप नाच रहा था।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

संस्मरण :

8. मेरे बचपन के दिन

–महादेवी वर्मा

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र - सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं।

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा पूजा की। हमारी कुल देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरी माता जबलपुर से आईं तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएँगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवें दर्जे में भर्ती हुई। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज़ तक नहीं बनता था।

वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएँ रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवें दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। सुन-सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरंभ किया। यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्रा जी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा - छिपाकर लिखती थी मैं। एक दिन उन्होंने कहा, 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो?' तो मैंने डर के मारे कहा, 'नहीं।' अंत में उन्होंने मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी ली और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज़ लिए और एक हाथ से मुझको पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आईं कि ये कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई। क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे। जब और लड़कियाँ खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे। उस समय एक पत्रिका निकलती थी– 'स्त्री दर्पण'। उसी में

भेज देते थे। अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी। फिर यहाँ कवि सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे। हिंदी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिंदी का भी प्रचार चलता था, कवि-सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिऔध जी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

एक बार की घटना याद आती है कि एक कविता पर मुझे चाँदी का एक कटोरा मिला। बड़ा नक्काशीदार, सुंदर। उस दिन सुभद्रा नहीं गई थीं। सुभद्रा प्रायः नहीं जाती थीं कवि-सम्मेलन में। मैंने उनसे आकर कहा, 'देखो, यह मिला।'

सुभद्रा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।'

उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!' फिर बोलीं, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब तुम चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में- फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं। तब उनकी जगह एक मराठी लड़की ज़ेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रही। वह कोल्हापुर से आई थी। ज़ेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ़ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। ज़ेबुन मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं ज़ीनत बेगम। ज़ेबुन जब थीं-ज़ीनत 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर-लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी जी से टोके बिना न रहा जाता था - 'वाह! देसी कौवा, मराठी बोली!' ज़ेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौवा मराठी बोलता है।' ज़ेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाउज़ पहनती थी। कहती थी, 'हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!'

उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थीं; बुंदेलखंड की आती थीं, वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आई, तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी-कभी

बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं। बचपन का एक और भी संस्कार था कि हम जहाँ रहते थे वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे बेचारे एक बँगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में हम लोग रहते थे। बेगम साहिबा कहती थीं- 'हमको ताई कहो !' हम लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे हमारी माँ को चची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं, राखी के दिन बहनें, राखी बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं- 'भाई भूखा बैठा है, राखी बँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे। फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा, 'देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े - वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को वे दुलहन कहती थीं। कहने लगीं, 'दुलहन, जिनके ताईचाची नहीं होती हैं वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छह महीने तक चाची- ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुंदर है। मैं अपनी तरफ़ से इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।'

वही प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया। उनके यहाँ भी हिंदी चलती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलते थे। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया।

शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :-

परमधाम - स्वर्ग; विदुषी - महिला विद्वान; छात्रावास - स्कूल या कालेज में विद्यार्थियों के रहने का स्थान है; व्रजभाषा - व्रज भूमि की भाषा; खड़ीबोली - आधुनिक हिन्दी का रूप; नक्काशीदार - बेल-बूटे के काम से युक्त; उस्तानी - अध्यात्मिका; बुंदेली - बुंदेल खंड की बोली; अवध - अवधी की बोली; लहरिए - रंग-बिरंगी धारियों वाली विशेष प्रकार की साड़ी जो रक्षाबंधन त्योहार पर पहनी जाती थी; नेग - धन देने की प्रथा; प्रभाती - सबेरे गाया जाने वाला गीत; प्रतिष्ठित - सम्मानित।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. हिन्दी की कितनी बोलियों के नाम इस पाठ में दिये गये हैं?

हिन्दी की तीन बोलियाँ के नाम इस पाठ में दिए गए हैं–व्रजभाषा, खड़ी बोली, अवधी।

2. सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा का पहला मिलन कहाँ हुआ?

सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा का पहला मिलन क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज के छात्रावास में हुआ।

3. महादेवी वर्मा ने अपने चाँदी का कटोरा किनको भेंट की?

महादेवी वर्मा ने अपने चांदी का कटोरा महात्मा गांधी जी को भेंट की।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. जवारे के नवाब के परिवार तथा लेखिका के परिवार से संबंध किस तरह था?

लेखिका के परिवार और जवारा का नवाब दोनों एक ही परिसर में रहते थे। हिंदू और मुस्लिम परिवार होने के बावजूद भी दोनों का संबंध बहुत अच्छा था। दोनों परिवारों के सदस्यों के जन्मदिन एक साथ मिलकर मनाया जाता था। रक्षाबंधन के दिन लेखिका नवाब के बेटे को राखी बाँधती थी तो मुहर्रम के दिन लेखिका के परिवार के बच्चे हरे कपड़े पहनते थे। नवाब की पत्नी ने लेखिका के छोटे भाई का नाम मनमोहन रखा था।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

हर एक के जीवन में अपने बचपन की स्मृतियाँ हरी भरी रहती हैं। प्रस्तुत पाठ 'मेरे बचपन के दिन' में श्रीमती महादेवी वर्मा की युवावस्था की स्मृतियों का सजीव चित्रण है। छात्रावास में महादेवी वर्मा की सहेली सुभद्रा कुमारी चौहान थीं। इस लेख में महादेवीजी ने अपनी सहपाठी लोग, छात्रावास के जीवन, आपसी प्रेमभाव, स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण, गाँधी जी के साथ मुलाकात आदि का सजीव चित्रण किया है।

लेखिका के परिवार में कई पीढ़ियों बाद एक लड़की पैदा हुई। यानि 200 वर्षों के बाद लेखिका का जन्म हुआ। लेखिका के दादा जी ने दुर्गा-पूजा की और लड़की माँगी थी। अतः लेखिका को उनके घर में बहुत प्यार एवं वात्सल्य मिलते थे। लेखिका को हिंदी, संस्कृत पढ़ने में तो बहुत ही आनंद आता था, किंतु उर्दू-फ़ारसी पढ़ने में उनकी रुचि नहीं जागी। मिशन स्कूल की दिनचर्या भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित न कर सकी। इसीलिए उन्हें क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भर्ती कराया गया था। उस कॉलेज में उनको ईसाई व हिन्दू लड़कियों के साथ रहने का अवसर मिला। लेखिका छात्रावास में जिस कमरे में रहती थीं, उसी कमरे में सुभद्रा कुमारी चौहान भी थीं। सुभद्राजी वहाँ की सीनियर छात्रा थीं। वे कविता लिखती थीं।

महादेवीजी सुभद्राजी से छिप-छिपाकर कविताएँ लिखती थीं। लेकिन एक दिन महादेवी की कविता के बारे में सुभद्रा कुमारी को पता चला गया। उन्होंने लेखिका की कॉपियों में से कविताएँ ढूँढ निकालीं और सारे छात्रावास को बता दिया। उस दिन से उन दोनों के बीच मित्रता हो गई। फिर दोनों ही खेल के समय साथ ही बैठकर कविता लिखने लगीं। उनकी तुकबंदी कर लिखी गई कविता 'स्त्री दर्पण' नामक पत्रिका में प्रकाशित होती थीं।

सन् 1917 में हिंदी के प्रचार प्रसार चल रहा था। अतः कवि सम्मेलन खूब होते रहते थे। महादेवीजी और सुभद्राजी भी कवि सम्मेलनों में भाग लेती थीं। उन्हें हमेशा पुरस्कार मिलता था।

उन दिनों गाँधी जी आनंद भवन में आया करते थे। लेखिका अपने जेब खर्च से कुछ रुपये बचाकर गाँधी जी को भेंट के रूप में देती थी। एक बार लेखिका को कवि सम्मेलन में पुरस्कार स्वरूप एक चाँदी का कटोरा मिला। उसे ले जाकर उन्होंने गाँधी जी को दिखाया और उसे गाँधीजी को समर्पित कर दिया।

छात्रावास का जीवन जाति-पाँति के भेद-भाव से दूर था। आपसी प्रेम से भरा हुआ था। एक परिवार जैसा था। मेस में सभी एक साथ खाना खाती थीं तथा एक ही ईश प्रार्थना एवं भोजन मंत्र कहती थीं। इसमें कोई झगड़ा नहीं होता था।

लेखिका का परिवार जहाँ रहता था वहाँ एक जवारा की बेगम साहिबा का परिवार भी रहता था। उन दो परिवारों के बीच बहुत घनिष्ठ मित्रता थी। उनके बीच जाति एवं धर्म-संबंधी कोई भी भेदभाव नहीं था। वे एक-दूसरे के जन्मदिन पर परिवार जैसे मिलते-जुलते रहते थे। बेगम के बच्चे लेखिका की माँ को चचीजान कहकर बुलाते थे तथा लेखिका बेगम साहिबा को ताई कहकर बुलाती थीं।

लेखिका के घर जब छोटे भाई का जन्म हुआ तो उसका नाम 'मनमोहन' भी उसी बेगम साहिबा ने रखा था। वही मनमोहन वर्मा पढ़-लिखकर जम्मू विश्वविद्यालय तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति बन गए। आखिर लेखिका कहती है कि अगर उस जमाने की स्थिति आज भी रहती तो, भारत की कथा कुछ और होती।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।

यह वाक्य श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'मेरे बचपन के दिन' नामक पाठ से लिया गया है।

एक कवि सम्मेलन में भाग लेने से लेखिका को पुरस्कार के रूप में एक चाँदी का कटोरा मिला। उसे देखकर उनकी सहेली सुभद्रा कुमारी ने उनसे बताया, "अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ। मगर अकस्मात् देश-हित के लिए लेखिका ने उसे बापू को भेंट के रूप में समर्पित कर दिया।

2. राखी के दिन बहनें राखी बांध जाए तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए।

यह वाक्य श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'मेरे बचपन के दिन' नामक पाठ से लिया गया है।

लेखिका के बचपन के समय उनका परिवार और जवारा का नवाब दोनों एक ही परिसर में रहते थे। हिन्दू-मुस्लिम होने के बावजूद भी दोनों परिवारों का संबंध बहुत अच्छा था। उनका एक लड़का था। उसको राखी बांधने के लिए साहिबा कहती थीं। वे बार-बार कहती थीं कि भाई भूखा बैठा है, राखी बंधवाने के लिए।" फिर लेखिका जाकर उसको राखी बांधती थीं। दोनों परिवारों की आत्मीयता आजकल के ज़माने में सपने की तरह ही हो रही है।

❄ ❄ ❄ ❄ ❄

पशु मनोविज्ञान-कहानी :

9. दो बैलों की कथा

– प्रेमचंद

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाईं जाति के थे-देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक- भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे-विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हलकी-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली- भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें ना सीख जाते तो शायद अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते-तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी।

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, उन्हें बेगानों से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक- भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ़ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा- ऐसे बैल किसी के पास न होंगे। दूसरे ने समर्थन किया- इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।

तीसरा बोला - बैल नहीं हैं. वे उस जनम के आदमी हैं।

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली- कैसे नमकहराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए।

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका-नमकहराम क्यों हैं? चारा - दाना न दिया होगा, तो क्या करते?

स्त्री ने रोब के साथ कहा- बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।

झूरी ने चिढ़ाया - चारा मिलता तो क्यों भागते ?

2

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था।

संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मज़ा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा !

नाँद की तरफ आँखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए,

तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते। हीरा ने मूक-भाषा में कहा - भागना व्यर्थ हैं।

मोती ने उत्तर दिया- तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।

'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।'

'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।'

मोती बोला- कहो तो दिखा दूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया- नहीं भाई ! खड़े हो जाओ।

'मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!'

'नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

दोनों दिन-भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती।

प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा- अब तो नहीं सहा जाता, हीरा !

क्या करना चाहते हो?'

'एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।'

'लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?'

'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।' 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।' 'तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।' 'हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?' 'इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में जाती है।'

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार- बार ज़ोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली- खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाए।

उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा- अब चलते क्यों नहीं?

हीरा ने कहा- चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई-दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा ! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे।

जब पेट भर गया, दोनों ने आज़ादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए और एक-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ तक कि वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा और फिर मोती से मिल गया। मोती ने देखा-खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया।

दो आदमी लाठियाँ लिए दौड़ पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था। उसके खुर कीचड़ में धँसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया। हीरा ने देखा, संगी संकट में हैं, तो लौट पड़ा। फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

प्रातःकाल दोनों मित्र कांजीहौस में बंद कर दिए गए।

3

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब ज़मीन पर मुरदों की तरह पड़े थे।

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मज़बूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए और ज़ोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया।

उसी समय कांजीहौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाज़िरी लेने आ निकला। हीरा का उजड्डपन देखकर उसने उसे कई डंडे रसीद किए और मोटी-सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा- आखिर मार खाई, क्या मिला?

'कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती, तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बंद हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो-चार दिन और यही हाल रहा, तो सब मर जाएँगे।'

'हाँ, यह बात तो है। अच्छा, तो ला, फिर मैं भी ज़ोर लगाता हूँ।'

मोती ने भी दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी-सी मिट्टी गिरी और फिर हिम्मत बढ़ी। फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह ज़ोर करने लगा, मानो किसी प्रतिद्वंद्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की ज़ोर-आज़माई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गई। उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसें भी खिसक गईं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा- तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?

एक गधे ने कहा- जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएँ! 'तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।' 'हमें तो डर लगता है, हम यहीं पड़े रहेंगे।'

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा- तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए।

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा- तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा ? तो मैं तुम्हें हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, छोड़कर अलग हो जाऊँ।

हीरा ने कहा- बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जाएँगे, यह तुम्हारी शरारत है। मोती गर्व से बोला- जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता! इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की ज़रूरत नहीं। बस, इतना ही काफ़ी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

4

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे।

एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गए। तब दोनों मित्र निकाले गए और उनकी देखभाल होने लगी। लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते। ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीदार होता?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हों में उँगली गोदकर मुंशी जी से बातें करने लगा। उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे। वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह न हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा- गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी।

मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया- कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती?

भगवान के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचाएँगे?'

'यह आदमी छुरी चलाएगा। देख लेना।'

'तो क्या चिंता है? माँस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जाएँगे।

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह ज़रा भी चाल धीमी हो जाने पर ज़ोर से डंडा जमा देता था।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज़ होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह? यह लो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे, यही कुआँ है।

मोती ने कहा- हमारा घर नगीच आ गया। हीरा बोला- भगवान की दया है।

'मैं तो अब घर भागता हूँ।'

'यह जाने देगा?'

'इसे मैं मार गिराता हूँ।'

'नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जाएँगे।'

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा- मेरे बैल हैं।

'तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिए आता हूँ।'

'मैं तो समझा हूँ चुराए लिए आते हो! चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है?' जाकर थाने में रपट कर दूँगा।'

मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।'

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को ज़बरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका; पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था, दढ़ियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो। अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।'

अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।'

'जो गोली मरवा दे?'

'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।' 'इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं।'

ज़रा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था।

उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :-

पछाई - बैलों की जाति; चौकस - सतर्क, जागृत; धौल-धप्पा - हथेली से किसी के सिर पर हल्का आघात करना; फुसफुसी - धीमे स्वर में किसी के कान में कुछ कहना; बेगान - अजनबी; चरनी - पशुओं के चरने का स्थान; चोकर - गेहूँ के छिलके; रोब - प्रताप, वीरता; टिटकार - हाँकना; तेवर - क्रोध; मसलहत - भलाई की दृष्टि से; बरकत - वृद्धि; गराँव - पशुओं के गले में बाँधी जानेवाली दोहरी रस्सी; डकार - जोर की चिल्लाहट; हुग्गी - गेहूँ खीर; दढियल - दाढ़ीवाला; अंतर्ज्ञान - मन का ज्ञान; नाहक - व्यर्थ; नीलाम - सार्वजनिक बिक्री; नगीच - नज़दीक; कुलेल - प्रसन्नता भरा खिल्वाड़; मवेशीखाना - पशुशाला; अख्तियार - अधिकार, स्वामित्व; सबूत - प्रमाण; झल्लाना - चिढ़चिढ़ाना; गोईं - हल या बैलगाड़ी में प्रयोग की जानेवाली बैलों की जोड़ी।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम क्या-क्या हैं?

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम हीरा और मोती हैं।

2. छोटी बालिका ने बैलों के प्रति अपना प्रेम किस तरह दिखाया?

छोटी बालिका भूखे बैलों को हर रोज दो रोटीयाँ खिलाती थी। इस प्रकार वह बैलों के प्रति अपना प्रेम दिखाती थी।

3. झूरी ने अपने बैलों का सबूत किस तरह दिखाया?

दोनों बैल अपने आप झूरी के द्वार पर आ खड़े हो गए थे। इसी को सबूत के रूप में झूरी ने दिखा दिया। गाय और बैल अपने रखवाले के घर स्वयं पहुँच जाते हैं।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. दो बैलों के बीच की दोस्ती के बारे में लिखिए।

हीरा और मोती दोनों बैलों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूंघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। जब ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते तो दोनों ज़्यादा से ज़्यादा बोझ स्वयं झेलकर दूसरे को कम बोझ देने की चेष्टा करते थे। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ ही नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। कांजीहौस की दीवार के टूटने पर हीरा ने अपने साथी को छोड़कर भागने से मना कर दिया।

2. बाड़े से भागने का प्रयत्न दोनों बैलों ने किस तरह किया?

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा अपने नुकीले सींग को दीवार पर मारने से दीवार पर से चिप्पड़ निकल गए। वैसे ही दीवार की मिट्टी गिरने लगी। इस कारण मोती को चौकीदार से मार खानी पड़ी। फिर मोती ने भी उसी जगह में सींग मारा। इस तरह दोनों बैलों ने भागने का प्रयास किया।

3. नीलाम हो जाने के बाद दोनों बैल किस तरह बचकर अपने थान पर चले?

नीलाम हो जाने के बाद दढियल इन दोनों बैलों को अपने यहाँ ले जा रहा था। जाते-जाते दोनों को अपने मालिक झूरी के स्थान का रास्ता पता चल गया। सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि वह राह परिचित है। इसलिए दोनों को नई जान मिली और वे भाग-भाग कर झूरी के द्वार पहुँचे और अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गए।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

इस कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं। मुंशी प्रेमचंद जी की यह कहानी पशुओं की मित्रता और संवेदना से संबंधित है।

झुरी एक किसान था। उसके पास हीरा और मोती नाम के दो बैल थे। वे दोनों ही ऊँचे और पछाई जाति के बैल थे। लंबे समय तक साथ-साथ रहने से दोनों में अच्छा भाईचारा हो गया था। एक बार झुरी ने अपने दोनों बैलों को अपने साले 'गया' के साथ काम के लिए अपने ससुराल भेज दिया था। हीरा और मोती दोनों ही यह समझ रहे थे कि झूरी ने उन्हें बेच दिया। उनको दुख था कि जिस मालिक और घर को उन्होंने अपना समझा, आज उसने ही उन्हें बेच दिया।

गया के यहाँ उनके लिए सब कुछ नये थे। आहार भी ठीक तरह का न मिला। रात होने पर , जब सब लोग सो गए थे, दोनों ने अपनी-अपनी रस्सियों को तोड़ डाला और अपने घर की तरफ चले गए। सुबह झूरी अपने बैलों को दरवाजे पर देखकर खुश हो गया। बैलों के मन में तो झूरी पर गुस्सा और स्नेह दोनों था। झूरी ने दौड़कर दोनों बैलों को गले से लगा लिया।

लेकिन झूरी की पत्नी बैलों को अपने दरवाजे पर देखकर नाराज हो गई और उन्हें नमकहराम कहकर गालियां देने लगी। दूसरे दिन गया फिर से हीरा-मोती को लेने आ गया। इस बार वह बैलों को पैदल ले जाने के बदले गाड़ी में ले गया। दिन भर उन दोनों से काम लेने के बाद शाम को फिर से उन्हें मोटी-मोटी रस्सियों से बांध दिया और उनके आगे फिर से सूखा भूसा फेंक दिया। लेकिन दोनों ने कुछ नहीं खाया। तभी भैरो की छोटी लड़की रोज आती और उन्हें दो रोटियां खिला कर चली जाती थी।

इसी तरह कुछ दिन गुजरते गये। एक रात दोनों बैल रस्सियाँ तोड़कर भागने की तैयारी करने लगे। वे रस्सियों को तोड़ने के लिए उसे चबाने लगे। मगर रस्सी काफी मोटी थी तभी वह लड़की आई और उसने दोनों की रस्सियाँ खोल दीं। किन्तु हीरा-मोती लड़की के स्नेह के कारण नहीं भाग सके। लड़की ने अचानक शोर मचाना शुरू कर दिया। लड़की की आवाज सुनकर हीरा-मोती भाग खड़े हुए। गया तथा गाँववालों ने दूर तक उनका पीछा किया। लेकिन हीरा-मोती अपनी पूरी ताकत के साथ भागने लगे। और इसी चक्कर में वे अपना रास्ता ही भटक गये।

फिर एक दिन नीलामी में एक कसाई ने उन्हें खरीद लिया। नीलाम होकर दोनों उस कसाई के साथ चले जा रहे थे। तभी दोनों को झुरी के घर का रास्ता पता लग गया। उनके कमजोर शरीर में फिर से जान आ गई और वे भागने लगे। भागते-भागते झूरी के घर पहूँच गये। और अपनी जगह जाकर खड़े हो गए।

झूरी उन्हें देखते ही दौड़ा-दौड़ा आया और उनको गले से लगा लिया। बैल भी झूरी को देखकर काफी खुश थे। तभी कसाई भी बैलों की तलाश में वहाँ आ पहुँचा। जब वह बैलों को जबरदस्ती ले जाने के लिए आगे बढ़ा तो मोती ने उसे सींग से मारकर भगा दिया। अब झुरी मात्र नहीं बल्कि उनकी पत्नी भी हीरा-मोती पर प्यार करने लगी।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।

यह कथन 'दो बैलों की कथा' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी हैं। इस कहानी में दो बैलों की कथा रोचक ढंग से प्रस्तुत हुई है।

दोनों बैल झूरी के साले गया के घर भेजे गये। उसके बाद दोनों बैलों की स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। दोनों दिन-भर जाते जाते डंडे खाते और शाम को बांध दिए जाते। दो-दो गाल सूखा भूसा ही उनको खाने को मिल जाते थे। इस पर तंग आकर मोती ने गया को अपने सींग से मारने के अपने इरादे को हीरा से बताया। हीरा इस विचार से सहमत नहीं हुआ तो मोती ने उसकी बीबी को मारने की बात की। तभी हीरा ने इस प्रकार कहा कि औरतों पर सींग मारना मना है और अच्छा भी नहीं लगेगा। इस कथन से पशुओं का मनोविज्ञान अच्छी तरह परिलक्षित होता है।

2. भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर दया क्यों नहीं आती?

यह कथन दो बैलों की कथा – शीर्षक पाठ से दिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद हैं।

अपने मालिक झूरी के साले गया के घर में झेलनेवाली कठिनाइयों से ऊबकर हीरा और मोती दोनों इस प्रकार कहते हैं। जब हीरा कहता है कि जान बचाने के लिए गया के घर से भाग जाना ही रास्ता है, तब मोती इस प्रकार कहता है। मोती का कहना यह है कि भगवान की कृपा उनपर नहीं है, और इसी कारण से भगवान उनको छोड़कर बाकी सब जीवों पर कृपा करते हैं। लेखक इस कथन के द्वारा यही कहते हैं कि जानवरों में भी संवेदना है।

3. 'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता'। 'इसलिए कि हम इतने सीधे हैं।'

यह कथन दो बैलों की कथा – शीर्षक पाठ से दिया गया है। इसके लेखक उपन्यास सम्राट प्रेमचंद हैं।

हीरा और मोती को जब दढियल जबरदस्ती पकड़ने के लिए बढ़ा तो, मोती ने उसे अपने सींग से मारा। दढियल गालियां निकालकर वहाँ से भाग गया। तभी दोनों बैलों ने अपनी मूक भाषा में इस प्रकार कहा। उनका कहना है कि इस संसार के लोग समझते हैं कि बैल अत्यंत सीधा जानवर है। इसलिए उसे कुछ भी कर सकते है। वे यह नहीं सोचते कि जानवरों को भी जान है और वे भी संवेदनशील हैं।

❊❊❊❊❊

हास्य कहानी:

10. साइकिल की सवारी

- सुदर्शन

भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है। सोचता हूँ, भगवान ने ये दोनों विद्याएँ भी ख़ूब बनाई हैं। एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर तमाशा देखिए, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गईं। न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं। पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गई है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते हैं।

शायद 1932 की बात है कि बैठे-बैठे ख़्याल आया कि चलो साइकिल चलाना सीख लें। और इसकी शुरुआत यों हुई कि हमारे लड़के ने चुपचुपाते में यह विद्या सीख ली और हमारे सामने से सवार होकर निकलने लगा। अब आपसे क्या कहें कि लज्जा और घृणा के कैसे-कैसे ख़्याल हमारे मन में उठे। सोचा, क्या हमीं जमाने भर के फिसड्डी रह गए हैं! सारी दुनिया चलाती है, ज़रा ज़रा से लड़के चलाते हैं, मूर्ख और गंवार चलाते हैं, हम तो परमात्मा की कृपा से फिर भी पढ़े लिखे हैं। क्या हमीं नहीं चला सकेंगे? आख़िर इसमें मुश्किल क्या है? कूदकर चढ़ गए और ताबड़तोड़ पांव मारने लगे। और जब देखा कि कोई राह में खड़ा है तब टन-टन करके घंटी बजा दी। न हटा तो क्रोधपूर्ण आंखों से उसकी तरफ़ देखते हुए निकल गए। बस, यही तो सारा गुर है इस लोहे की सवारी का। कुछ ही दिनों में सीख लेंगे। बस महाराज, हमने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो जाए, परवाह नहीं।

दूसरे दिन हमने अपने फटे पुराने कपड़े तलाश किए और उन्हें ले जाकर श्रीमतीजी के सामने पटक दिया कि इनकी ज़रा मरम्मत तो कर दो।?

श्रीमती जी ने हमारी तरफ़ अचरज भरी दृष्टि से देखा और कहा 'इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है कि मरम्मत करूं! इन्हें तो फेंक दिया था। आप कहाँ से उठा लाए? वहीं जाकर डाल आइए।'

हमने मुस्कुराकर श्रीमतीजी की तरफ़ देखा और कहा, 'तुम हर समय बहस न किया करो। आख़िर मैं इन्हें ढूंढ़ ढांढ़ कर लाया हूँ तो ऐसे ही तो नहीं उठा लाया। कृपा करके इनकी मरम्मत कर डालो।'

मगर श्रीमती जी बोलीं, 'पहले बताओ, इनका क्या बनेगा?'

हम चाहते थे कि घर में किसी को कानोंकान खबर न हो और हम साइकिल सवार बन जाएँ। और इसके बाद जब इसके पंडित हो जाएँ तब एक दिन जहांगीर के मकबरे को जाने का निश्चय करें। घरवालों को तांगे में बिठा दें और कहें, 'तुम चलो हम दूसरे तांगे में आते हैं।' जब वे चले जाएँ तब साइकिल पर सवार होकर उनको रास्ते में मिलें। हमें साइकिल पर सवार देखकर उन लोगों की क्या हालत होगी! हैरान हो जाएँगे, आँखें मल-मल कर देखेंगे कि कहीं कोई और तो नहीं! परंतु हम गर्दन टेढ़ी करके दूसरी तरफ़ देखने लग जाएँगे, जैसे हमें कुछ मालूम ही नहीं है, जैसे यह सवारी हमारे लिए साधारण बात है।

झक मारकर बताना पड़ा कि रोज रोज तांगे का खर्च मारे डालता है। साइकिल चलाना सीखेंगे।

श्रीमती जी ने बच्चे को सुलाते हुए हमारी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर बोलीं, 'मुझे तो आशा नहीं कि यह बेल आपसे मत्थे चढ़ सके। खैर यत्न करके देख लीजिए। मगर इन कपड़ों से क्या बनेगा?'

हमने ज़रा रोब से कहा, 'आख़िर बाइसिकिल से एक दो बार गिरेंगे या नहीं? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं? जो मूर्ख हैं, वो नए कपड़ों का नुकसान कर बैठते हैं। जो बुद्धिमान हैं, वो पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं।

मालूम होता है हमारी इस युक्ति का कोई जवाब हमारी स्त्री के पास न था, क्योंकि उन्होंने उसी समय मशीन मंगवाकर उन कपड़ों की मरम्मत शुरू कर दी।

हमने इधर बाजार जाकर जंबक के दो डिब्बे खरीद लिए कि चोट लगते ही उसी समय इलाज किया जा सके। इसके बाद जाकर एक खुला मैदान तलाश किया, ताकि दूसरे दिन से साइकिल-सवारी का अभ्यास किया जा सके।

अब यह सवाल हमारे सामने था कि अपना उस्ताद किसे बनाएँ। इसी उधेड़बुन में बैठे थे कि तिवारी लक्ष्मीनारायण आ गए और बोले, 'क्यों भाई हो जाए एक बाजी शतरंज की?'

हमने सिर हिलाकर जवाब दिया, 'नहीं साहब! आज तो जी नहीं चाहता।'

'क्यों?'

'यदि जी न चाहे तो क्या करें?'

यह कहते-कहते हमारा गला भर आया। तिवारी जी का दिल पसीज गया। हमारे पास बैठकर बोले, 'अरे भाई मामला क्या है? स्त्री से झगड़ा तो नहीं हो गया?'

हमने कहा, 'तिवारी भैया, क्या कहें? सोचा था, लाओ, साइकिल की सवारी सीख लें। मगर अब कोई ऐसा आदमी दिखाई नहीं देता जो हमारी सहायता करे। बताओ, है कोई ऐसा आदमी तुम्हारे ख़्याल में?'

तिवारी जी ने हमारी तरफ़ बेबसी की आंखों से ऐसे देखा, मानों हमको कोई खजाना मिल रहा है और वे खांली हाथ रह जाते हैं। बोले, 'मेरी मानो तो यह रोग न पालो। इस आयु में साइकिल पर चढ़ोगे? और यह भी कोई सवारियों में कोई सवारी है कि एँडे पर उकडूं बैठे हैं और पांव चला रहे हैं। अजी लानत भेजो इस ख़्याल पर आओ एक बाजी खेलें।' मगर हमने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थी। साफ समझ गए कि तिवारी ईर्ष्या की आग में फुंका जाता है। मुँह फुलाकर हमने कहा, 'भाई तिवारी हम तो जरूर सीखेंगे। कोई आदमी बताओ।'

'आदमी तो है ऐसा एक, मगर वह मुफ्त में नहीं सिखाएगा। फीस लेगा। दे सकोगे?'

'कितने दिन में सिखा देगा?'

'यही दस-बारह दिनों में!'

'और फीस क्या लेगा हमसे?'

'औरों से पचास लेता है। तुमसे बीस ले लेगा हमारी खातिर।'

हमने सोचा दस दिन सिखाएगा और बीस रुपये लेगा। दस दिन बीस रुपये। बीस रुपये-दस दिन। अर्थात् दो रुपये रोजाना अर्थात् साठ रुपये महीना और वो भी केवल एक दो घंटे के लिए। ऐसी तीन चार ट्यूशनें मिल

जाएँ तो ढाई-तीन सौ रुपये मासिक हो जाएँगे। हमने तिवारी जी से तो इतना ही कहा कि जाओ जाकर मामला तय कर आओ, मगर जी में खुश हो रहे थे कि साइकिल चलाना सीख गए तो एक ट्रेनिंग स्कूल खोल दें और तीन-चार सौ रुपये मासिक कमाने लगे।

इधर तिवारी जी मामला तय करने गए इधर हमने यह शुभ समाचार जाकर श्रीमती जी को सुना दिया कि कुछ दिनों में हम लोग ऐसा स्कूल खोलने वाले हैं जिससे तीन-चार सौ रुपये मासिक आमदनी होगी।

श्रीमती जी बोली, 'तुम्हारी इतनी आयु हो गई मगर ओछापन न गया। पहले आप तो सीख लो, फिर स्कूल खोलना। मैं तो समझती हूँ कि तुम ही न सीख सकोगे दूसरों को सिखाना तो दूर की बात है।

हमने बिगड़कर कहा, "यह बड़ी बुरी बात है कि हर काम में टोक देती हो। हमसे बड़े बड़े सीख रहे हैं तो क्या हम न सीख सकेंगे? पहले तो शायद सीखते या न सीखते, पर अब तुमने टोका है तो जरूर सीखेंगे। तुम भी क्या कहोगी।"

श्रीमती जी बोली, 'मैं तो चाहती हूँ कि तुम हवाई जहाज चलाओ। यह बाइसिकिल क्या चीज है? मगर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है। एक बार गिरोगे, तो देख लेना वहीं साइकिल फेंक-फांककर चले आओगे।'

इतने में तिवारी जी ने बाहर से आवाज दी। हमने बाहर जाकर देखा तो उस्ताद साहब खड़े थे। हमने शरीफ विद्यार्थियों के समान श्रद्धा से हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और चुपचाप खड़े हो गए।

तिवारी जी बोले, 'यह तो बीस पर मान ही नहीं रहे थे। बड़ी मुश्किल से मनाया है। पेशगी लेंगे। कहते हैं, पीछे कोई नहीं देता।'

अरे भाई हम देंगे। दुनिया लाख बुरी है, मगर फिर भी भले आदमियों से खाली नहीं है। यह बस चलाना सीखा दें, फिर देखें, हम इनकी क्या क्या सेवा करते हैं।

मगर उस्ताद साहब नहीं माने। बोले, 'फीस पहले लेंगे'।

'और यदि आपने नहीं सिखाया तो?'

'नहीं सिखाया तो फीस लौटा देंगे'।

'और यदि नहीं लौटाया तो?'।

इस पर तिवारी जी ने कहा, "अरे साहब! क्या यह तिवारी मर गया है? शहर में रहना हराम कर दूँ, बाजार में निकलना बंद कर दूँ। फीस लेकर भाग जाना कोई हंसी-खेल है?"

जब हमें विश्वास हो गया कि इसमें कोई धोखा नहीं है, तब हमने फीस के रुपये लाकर उस्ताद को भेंट कर दिए और कहा, 'उस्ताद कल सवेरे ही आ जाना। हम तैयार रहेंगे। इस काम के लिए कपड़े भी बनवा लिए हैं। अगर गिर पड़े तो चोट पर लगाने के लिए जंबक भी खरीद लिया है। और हाँ हमारे पड़ोस में जो मिस्त्री रहता है, उससे साइकिल भी मांग ली है। आप सवेरे ही चले आएँ तो हरि नाम लेकर शुरू कर दें।

तिवारी जी और उस्ताद जी ने हमें हर तरह से तसल्ली दी और चले गए। इतने में हमें याद आया कि एक बात कहना भूल गए। नंगे पांव भागे और उन्हें बाजार में जाकर पकड़ा। वे हैरान थे। हमने हांफते-हांफते कहा,

'उस्ताद हम शहर के पास नहीं सीखेंगे, लारेंसबाग में जो मैदान है, वहाँ सीखेंगे। वहाँ एक तो भूमि नरम है, चोट कम लगती है। दूसरे वहाँ कोई देखता नहीं है।'

अब रात को आराम की नींद कहाँ ? बार-बार चौंकते थे और देखते थे कि कहीं सूरज तो नहीं निकल आया। सोते थे तो साइकिल के सपने आते थे। एक बार देखा कि हम साइकिल से गिरकर जख्मी हो गए हैं। साइकिल आप से आप हवा में चल रही है और लोग हमारी तरफ़ आँखें फाड़-फाड़ के देख रहे थे।

अब आँखें खुली तो दिन निकल आया था। जल्दी से जाकर वो पुराने कपड़े पहन लिए, जंबक का डिब्बा साथ में ले लिया और नौकर को भेज कर मिस्त्री से साइकिल मंगवा ली। इसी समय उस्ताद साहब भी आ गए और हम भगवान का नाम लेकर लारेंसबाग की ओर चले। लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि एक बिल्ली रास्ता काट गई और लड़के ने छींक दिया। क्या कहें कि हमें कितना क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और उस शैतान लड़के पर! मगर क्या करते? दांत पीसकर रहे गए। एक बार फिर भगवान का पावन नाम लिया और आगे बढ़े। पर बाजार में पहुँचकर देखते हैं कि हर आदमी हमारी तरफ़ देख रहा है और हंस रहा है। अब हम हैरान थे कि बात क्या है। सहसा हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पाजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए हैं और लोग इसी पर हंस रहे हैं।

सर मुंड़ाते ही ओले पड़े।

हमने उस्ताद से माफी मांगी और घर लौट आए अर्थात् हमारा पहला दिन मुफ्त में गुज़रा।

दूसरे दिन फिर निकले। रास्ते में उस्ताद साहब बोले, 'मैं एक गिलास लस्सी पी लूं। आप ज़रा साइकिल को थामिए।'

उस्ताद साहब लस्सी पीने लगे तो हमने साइकिल के पुर्जों की ऊपर-नीचे परीक्षा शुरू कर दी। फिर कुछ जी में आयां तो उसका हैंडल पकड़ कर चलने लगे। मगर दो ही कदम गए होंगे कि ऐसा मालूम हुआ जैसे साइकिल हमारे सीने पर चढ़ी आती है।

इस समय हमारे सामने गंभीर प्रश्न यह था कि क्या करना चाहिए? युद्ध क्षेत्र में डटे रहें या हट जाएँ? सोच विचार के बाद यही निश्चय हुआ कि यह लोहे का घोड़ा है। इसके सामने हम क्या चीज हैं। बड़े-बड़े वीर योद्धा भी ठहर नही सकते। इसलिए हमने साइकिल छोड़ दी और भगोड़े सिपाही बनकर मुड़ गए। पर दूसरे ही क्षण साइकिल पूरे जोर से हमारे पांव पर गिर गई और हमारी रामदुहाई बाजार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूंजने लगी। उस्ताद लस्सी छोड़कर दौड़े आए और अन्य दयावान लोग भी जमा हो गए। सबने मिलकर हमारा पांव साइकिल से निकाला। भगवान के एक भक्त ने जंबक का डिब्बा भी उठाकर हमारे हाथ में दे दिया। दूसरे ने हमारी बगलों में हाथ डालकर हमें उठाया और सहानुभूति से पूछा, 'चोट तो नहीं आई? ज़रा दो चार कदम चलिए नहीं तो लहू जम जाएगा'

इस तरह दूसरे दिन भी हम और हमारी साइकिल दोनों अपनी घर से थोड़ी दूर पर जख्मी हो गए। हम लंगड़ाते हुए घर लौट आए और साइकिल ठीक होने के लिए मिस्त्री के दुकान पर भेज दी।

मगर हमारे वीर हृदय का साहस और धीरज तो देखिए। अब भी मैदान में डटे रहे। कई बार गिरे, कई बार शहीद हुए। घुटने तुड़वाए, कपड़े फड़वाए पर क्या मजाल जो जी छूट जाए। आठ-नौ दिनों में साइकिल चलाना सीख गए थे। लेकिन अभी उस पर चढ़ना नहीं आता था। कोई परोपकारी पुरुष सहारा देकर चढ़ा देता तो फिर लिए जाते थे। हमारे आनंद की कोई सीमा न थी। सोचा मार लिया मैदान हमने। दो चार दिन में पूरे मास्टर बन जाएँगे, इसके बाद प्रोफेसर प्रिंसिपल, इसके बाद ट्रेनिंग कॉलेज फिर तीन-चार सौ रुपये मासिक। तिवारी जी देखेंगे और ईर्ष्या से जलेंगे।

उस दिन उस्ताद जी ने हमें साइकिल पर चढ़ा दिया और सड़क पर छोड़ दिया कि ले जाओ, अब तुम सीख गए।

अब हम साइकिल चलाते थे और दिल ही दिल फूले न समाते थे। मगर हाल यह था कि कोई आदमी सौ गज के फासले पर होता तो हम गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर देते-साहब! बाईं तरफ़ हट जाइए। दूर फासले पर कोई गाड़ी दिख जाती तो हमारे प्राण सूख जाते। उस समय हमारे मन की जो दशा होती वो परमेश्वर ही जानता है। जब गाड़ी निकल जाती तब कहीं जाकर हमारी जान में जान आती। सहसा सामने से तिवारी जी आते हुए दिखे। हमने उन्हें भी दूर से ही अल्टीमेटम दिया कि तिवारी जी, बाईं तरफ़ हो जाओ, वरना साइकिल तुम्हारे ऊपर चढ़ा देंगे।

तिवारी जी ने अपनी छोटी छोटी आंखों से हमारी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर कहा, 'ज़रा एक बात तो सुनते जाओ'

हमने एक बार हैंडल की तरफ़, दूसरी बार तिवारी जी की तरफ़ देखकर कहा, 'इस समय बात सुन सकते हैं? देखते नहीं हो साइकिल पर सवार हैं'।

तिवारी जी बोले, तो क्या जो साइकिल चलाते हैं, वो किसी की बात नहीं सुनते हैं? बड़ी जरूरी बात है, ज़रा उतर आओ।

हमने लड़खड़ाती हुई साइकिल को संभालते हुए जवाब दिया, 'उतर आएँगे तो चढ़ाएगा कौन? अभी चलाना सीखा है चढ़ना नहीं सीखा।'

तिवारी जी चिल्लाते ही रह गए, हम आगे निकल गए।

इतने में सामने से एक तांगा आता दिखाई दिया। हमने उसे भी दूर से ही डांट दिया, 'बाईं तरफ़ भाई। अभी नए चलाने वाले हैं।'

तांगा बाईं तरफ़ हो गया। हम अपने रास्ते चले जा रहे थे। एकाएक पता नहीं घोड़ा भड़क उठा या तांगेवाले को शरारत सूझी, जो भी हो, तांगा हमारे सामने आ गया। हमारे हाथ पांव फूल गए। ज़रा सा हैंडल घुमा देते तो हम दूसरी तरफ़ निकल जाते। मगर बुरा समय आता है तो बुद्धि पहले ही भ्रष्ट हो जाती है। उस समय हमें ख़्याल ही न आया कि हैंडल घुमाया भी जा सकता है। फिर क्या था, हम और हमारी साइकिल दोनों ही तांगे के नीचे आ गए और हम बेहोश हो गए।

जब हम होश में आए तो हम अपने घर में थे और हमारी देह पर कितनी ही पट्टियां बंधी थीं। हमें होश में देखकर श्रीमतीजी ने कहा, 'क्यों? अब क्या हाल है? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो! उस समय तो किसी की सुनते ही न थे।'

हमने सोचा, लाओ सारा इल्जाम तिवारी जी पर लगा दें और आप साफ बच जाएँ। बोले, "यह सब तिवारी जी की शरारत है"।

श्रीमती जी ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'यह तो तुम उसको चकमा दो जो कुछ जानता न हो। उस तांगे पर मैं ही तो बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चलो सैर भी कर आएँगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आएँगे'

हमने निरुत्तर होकर आँखें बंद कर लीं।

उस दिन के बाद फिर कभी हमने साइकिल को हाथ न लगाया।

अभ्यास

I. शब्दार्थ :-

बहस - वाद विवाद; हैरान - अचरज; उधेडबुन - परेशानी; बेबसी - लाचारी; लानत - धिक्कार; खातिर - आदर-सत्कार; पेशगी - अग्रिम; जख्मी - घायल; जंबक - चंपा का फूल; वामुराद - कामना से युक्त; कामना के साथ; चकमा - चालाक, धोखा देना।

II. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

1. लेखक ने अपने फटे पुराने कपड़ों की तलाश क्यों की?

लेखक को शौक था कि वे खुद साइकिल चलाना सीखकर एक साइकिल ड्रायविंग स्कूल खोलें। साइकिल चलाना सीखते समय पहनने के लिए उन्होंने अपने फटे पुराने कपड़ों की तलाश की।

2. साइकिल चलाना सिखाने उस्ताद ने लेखक से कितना फ़ीस माँगा?

साइकिल चलाना सिखाने हेतु उस्ताद ने दो रुपये की हिसाब से दस दिनों के लिए बीस रुपये माँगे।

III. प्रश्नों के उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. लेखक की साइकिल सवारी पहले दिन का अनुभव कैसा था?

पहले दिन साइकिल सीखने लेखक निकले तो बिल्ली ने रास्ता काटा और एक लड़के ने छींक दिया। उसके कारण लेखक घबरा गये। जल्दबाजी में पोशाक उल्टे पहनकर चलाने पर लोगों ने हंसी उड़ायी। इसलिए शर्मिंदा होकर उनको घर लौटना पड़ा।

2. लेखक की साइकिल चलाने की सीख में तिवारी जी का योगदान क्या है?

तिवारी की मदद से ही लेखक को साइकिल सीखने के लिए एक उस्ताद मिल जाता है। दस दिनों के लिए बीस रुपये में साइकिल चलाने के प्रशिक्षण की व्यवस्था तिवारी ने ही की थी।

IV. पाठ का सारांश लिखिए।

'साइकिल की सवारी' कथाकार सुदर्शन के एक हास्य कहानी है। हिंदी कहानी साहित्य में प्रेमचंद के बाद सुदर्शन का नाम लिया जाता है।

इस कहानी का मुख्य पात्र खुद कहानीकार सुदर्शन हैं। यह कहानी सन् 1931 के आसपास की है। कहानीकार ने कहा कि उस समय दुनिया भर के मूर्ख और गँवार भी आसानी से साइकिल चला लेते थे। लेकिन लेखक को साइकिल चलाना नहीं आता था। वे साइकिल ट्रेनिंग कॉलेज खोलने के और खूब पैसा कमाने के उद्देश्य से साइकिल चलाना सीखना चाहते थे। वे अपने दोस्त तिवारी लक्ष्मीनारायण की सहायता से साइकिल चलाना सीखना चाहते थे। वे इसके लिए एक उस्ताद को भी रखना चाहते थे। तिवारी की मदद से इन सबका प्रबंध हो गया। रोजाना दो रुपये के हिसाब से दस दिनों तक उस्ताद को बीस रुपये वेतन देने का भी निर्णय कर लिया। साइकिल सीखने के लिए अब खुला मैदान तैयार था और सिखाने के लिए एक उस्ताद भी मिल गये। पड़ोस से साइकिल भी मंगवा ली गई।

दूसरे दिन साइकिल सीखने लेखक निकले तो बिल्ली ने रास्ता काटा और एक लड़के ने छींक मारी। इन अपशकुनों के कारण लेखक का दिल घबरा गया। जल्दी में पाजामा और अचकन उल्टे पहनकर साइकिल चलाने निकले। बाहर गये तो लोग उनकी वेश-भूषा देखकर हँसने लगे। लाचार होकर लेखक को घर लौटना पड़ा। इस प्रकार एक दिन बिना कुछ सीखे कट गया।

दूसरे दिन साइकिल चलाना सीखने निकले तो पड़ोसी ने उनसे पूछा, 'कहिए आप कहाँ जा रहे हैं"? ऐसा पूछना भी उस जमाने में अपशकुन माना जाता था। इसलिए दूसरा दिन भी बिना कुछ सीखे कट गया। बाकी आठ दिनों में साइकिल चलाना तो सीख ही लिया। लेकिन साइकिल पर चढ़ना, साइकिल से उतरना सीख नहीं पाये। साइकिल चलाना आ गया तो लेखक कल्पना करने लगे कि साइकिल ट्रेनिंग कॉलेज खोलेंगे और सैकड़ों रुपये कमाएँगे।

एक दिन की बात है कि वे साइकिल चला रहे थे तभी एक तांगा उनके सामने आया। उससे उनकी साइकिल टकरा गई। इस दुर्घटना में वे बेहोश हो गये और हाथ-पाँव भी टूट गये। इस घटना के बाद कभी लेखक ने साइकिल को छूने तक की हिम्मत नहीं की।

V. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1. **"इन कपड़ों में अब जान ही कहाँ है कि मरम्मत करूँ।"**

   यह प्रसंग 'साइकिल की सवारी' नामक पाठ से लिया गया है। यह सुदर्शन की लिखी एक हास्यात्मक कहानी है। हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद के बाद सुदर्शन का नाम लिया जाता है।

   यह वाक्य लेखक की पत्नी लेखक से कहती है।

लेखक सुदर्शन साइकिल चलाना सीखना चाहते थे। इसलिए उसकी तैयारी के दौरान एक फटे-पुराने कपडा ढूंढकर निकाला और श्रीमती से उसकी ज़रा मरम्मत करके देने के लिए कहा। श्रीमती ने कहा पुराने होने की वजह कपड़ों में जान ही नहीं है। लेखक ने कहा कि साइकिल चलाना सीखते समय एक दो बार गिरना पड़ेगा और कपड़े गंदे हो जाएँगे। इसलिए पुराने कपड़े की जरूरत है।

यहाँ लेखक की होशियारी से पाठक भी अचरज में पड़ जाते हैं और हँसे बिना नहीं रह जाते।

2. "दुनिया लाख बुरी है, मगर फिर भी भले आदमियों से खाली नहीं है।"

यह प्रसंग 'साइकिल की सवारी' नामक पाठ से लिया गया है। यह सुदर्शन की लिखी हुई एक हास्यात्मक कहानी है। हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद के बाद सुदर्शन का नाम लिया जाता है।

यह वाक्य लेखक अपने मित्र से कहते हैं।

लेखक सुदर्शन को साइकिल चलाना नहीं आता था। इसलिए उसकी तैयारी के दौरान एक उस्ताद को ढूँढा। अपने मित्र तिवारी की मदद से एक उस्ताद मिले। रोजाना दो रुपये के हिसाब से दस दिनों तक बीस रुपये वेतन देने का भी निर्णय कर लिया। तिवारी उस्ताद को लेखक के घर ले आये और कहा कि उस्ताद पेशगी चाहते हैं। क्योंकि उस्ताद को संदेह था कि बाद में रुपये नहीं मिलेंगे। तुरंत लेखक कहते हैं "अरे भाई दुनिया में लाख बुरे लोग होने पर भी भले आदमी भी रहते आ रहे हैं।"

इस उक्ति से लेखक की ईमानदारी और दुनिया की यथार्थता का परिचय मिलता है।

3. उस तांगे पर मैं ही तो बच्चों को लेकर घूमने निकली थी कि चल सैर भी कर आएँगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देखेंगे।

यह प्रसंग 'साइकिल की सवारी' नामक पाठ से लिया गया है। यह सुदर्शन की लिखी हुई एक हास्यात्मक कहानी है। हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेमचंद के बाद सुदशर्न का नाम लिया जाता है।

यह वाक्य लेखक की पत्नी लेखक से कहती है।

लेखक सुदर्शन को साइकिल चलाना नहीं आता था। इसलिए उसकी तैयारी के लिए अपने मित्र तिवारी की मदद से एक उस्ताद को ढूँढा। साइकिल चलाना सीखने के दौरान एक दिन की बात है कि एक ताँगा उनके सामने आया। उससे उनकी साइकिल टकरा गई। इस दुर्घटना में वे बेहोश हो गये और हाथ-पाँव भी टूट गये। जब वे होश में आये तब उन्होंने सारा इल्जाम मित्र तिवारी पर लगाते हुए कहा कि यह सब तिवारी जी की शरारत है। उत्तर में श्रीमती ने इस प्रकार कहा।

इस घटना के बाद कभी लेखक ने साइकिल को छूने तक की हिम्मत नहीं की।

❁ ❁ ❁ ❁ ❁

प्रवेशिका–1

PRAVESHIKA–1

नया पाठ्यक्रम / NEW SYLLABUS

नमूना प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :- **10**

1. यशोधरा के दुख का प्रमुख कारण क्या है?
2. 'अभी न होगा मेरा अंत' कविता के रचयिता कौन है?
3. 'कलम, आज उनकी जय बोल' कविता में कवि वीर लोगों की महिमा के लिए किन-किन को साक्षी मानते हैं?
4. कवि सुमित्रानंदन पंत 'भारत गीत' में किसको अपराजित कहते हैं?
5. माखनलाल चतुर्वेदी चिड़ियों का वर्णन कैसे करते हैं?
6. 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा गीत' में कवि किसको अनः सलिला कहते हैं?
7. अमन की दुनिया कैसी होती है?
8. मजहब क्या सिखाता है?

II. किसी एक कवि का परिचय दीजिए :- **5**

1. मैथिलीशरण गुप्त 2. सुमतीन्द्र 3. माखनलाल चतुर्वेदी

III. किसी एक कविता का सारांश लिखिए :- **10**

1. अभी न होगा मेरा अंत
2. कलम, आज उनकी जय बोल
3. जीव-प्रदीप

IV. किन्हीं दो पद्यांशों का संदर्भ सहित भाव समझाइए :- **10**

1. जाय, सिद्धि पावें वे सुख से
दुखी न हों इस जन के दुख से
उपालम्भ हूँ मैं किस मुख से
आज अधिक वे भाते
सखि, वे मुझसे कहकर जाते

2. पुष्प पुष्प से तन्द्रालस लालसा सींच लूँगा मैं
अपने नवजीवन का अमृत सहज खींच दूँगा मैं
दूवार दिखा दूँगा फिर उनको
हैं मेरे वे जहाँ अनन्त
अभी न होगा मेरा अंत

3. प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाथा
जय नव मानवता निर्माता
सत्य अहिंसा दाता
जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता
जन गण तंत्र विधाता।

4. धैर्य तुम्हारा होगा संगी
ज्ञान-दीप ले चलना है
आत्मिक बल की बैसाकी के
टेक उसको चलना है

V. किन्हीं दो पद्यांशों का संदर्भ सहित भाव समझाइए :- **10**

1. कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गयी, नब्ज जमती गयी
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया।

2. मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा।।सारे...
यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रूमा, सब मिट गए जहाँ से।
हब तक मगर है बाक़ी, नाम ओ-निशाँ हमारा।। सारे...

3. राजकाज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम।।

4. जानि तुम्हहि मृदु कहऊँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओडिअहिं हाथ, असनिहु के घाए।

VI. कंठस्थ दोहों को ज्यों का त्यों लिखिए :- **5**

1. कस्तूरी कुंडलि .... देखै नाहीं।।
2. ओछो काम .... कहे न कोय।।

VII. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखिए :- **10**

1. आदमी अच्छाई का गुलाम कब बन जाता है?
2. छोटा जादूकर कैसा दिखाई पड़ता था?
3. सुभद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा का पहला मिलन कहाँ हुआ?
4. झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम क्या-क्या हैं?
5. लेखक ने अपने फटे पुराने कपड़ों की तलाश क्यों की?
6. तीन भिखमंगे बच्चे कौन-कौन थे?
7. महात्मा गाँधी का सपना क्या था?
8. पुराने जमाने में किसे स्त्रियों की भाषा कहते थे?

VIII. किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में लिखिए :- 15

1. छोटा जादूकर के खेल के बारे में लिखिए।
2. आत्मा का रहस्य क्या है?
3. बाड़े से भागने का प्रयत्न दोनों बैलों ने किस तरह किया?
4. पुराने जमाने में भी स्त्रियाँ अपना पांडित्य प्रकट करती थीं–सोदाहरण समझाइए।
5. कंप्यूटर में यूनिकोड़ कैसा डाउनलोड़ कर सकते हैं?

IX. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :- 10

1. तीन बच्चे 2. यूनिकोड़ 3. बेचारा भला आदमी

X. किन्हीं तीन की संदर्भ सहित वियाख्या कीजिए :- 15

1. चोर ही सबसे अधिक इस बात को प्रचार करते हैं कि इस महान देश में पहले लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे।
2. राखी के दिन बहनें राखी बांध जाए तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए।
3. भारत सरकार जनता में जागरूकता लाने के लिए 'नमामी गंगे' जैसे अनेक कार्यक्रम चला रही है।
4. लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।
5. पिताजी, दक्षिणा में तो यजमान अपनी प्रिय- से - प्रिय वस्तु देते हैं। आपने तो ऐसे गाएँ दी हैं, जिनका आपके लिए कोई उपयोग ही नहीं रह गया है। इससे आपको पुण्य नहीं मिलेगा।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊